ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ भगवान 1962 01 07राम का विजय याग

जीते रहो, देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्यण समय समाप्त हुआ । हम तुम्हारे समक्ष, वेदो का मनोहर गान गा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, कि जिन वेद मन्त्रों का, अभी अभी तुम्हारे समक्ष हमने पाठ किया, उन वेद मन्त्रों में कितनी निधि हैं, इनमें परमात्मा का कितना ज्ञान विज्ञान छिपा हुआ है, जिस परमात्मा ने बेटा !हमारे लिए पौने दो अरब वर्ष पूर्व सब योजना नियुक्त की, उन योजनाओं को पाना तो बेटा ! दूर, उन का उच्चारण करना भी हमारी बुद्धि से परे है । उस विधाता ने इतना महान, अलौकिक इस संसार को बनाया है कि इसका हम वर्णन भी नही कर सकतें

मुनिवरों !वेदमन्त्र में तो ऐसा कहा जा रहा था, कि मानव जीवन को उच्च बनाने के लिए बहुत ऊँची योजनाओं की आवश्यकता है, आज मानव यह न मान बैठे कि हमारी कोई योजना नही है। बेटा !मानव के लिए सत्य असत्य को जानना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।

अरे, मानव यह भी विचारों, कि परमात्मा के नियम, वे यौगिक नियम बुद्धि से परे माने जाते हैं। इसीलिए हे मानव !तू यह न मान बैठ, कि जो तेरी बुद्धि में नही आया वह असत्य है, कदापि नहीं, इसके लिए तुम अनुभव करो। योगाभ्यास करो। जीवन को उच्च बनाओ, आत्मारूपी दर्पण पर आए नाना प्रकार के मलों को अच्छी तरह नष्ट करो। उसके पश्चात तुम्हें सब कुछ अनुभव हो जाएगा, फिर तुम सभी कुछ जान जाओगे, इसलिए बेटा !मानव का यह सबसे बड़ा कर्म देखो, परम तत्व माना जाता है, सत्ता को विचारने के लिए, मुनिवरों !अपने को विचारा जाता है, कि मैं भी सत्य हूँ या नहीं? अरे, जब तक हम स्वयं सत्य नहीं बनेंगें, तब तक हम किसी सत्ता का, किसी प्रकार का निर्णय नही कर सकतें।

यज्ञ विधान और विज्ञान

आज मुनिवरों !देखो, संसार में इस प्रकार के बहुत से वाक्य हैं जो हमारी बुद्धि से पृथक हैं पृथक होते हुए भी वे हैं अवश्य और उनका अस्तित्व भी है। आज हमारे वेद पाठ में दो प्रकार के यज्ञों का वर्णन आ रहा था कि एक यज्ञ आत्मिक होता है और दूसरा भौतिक। अहा, भौतिक यज्ञ कैसे करें, इस पूजा को कैसे कल्याणकारी बनाएं यह ही मानव का विचारणीय विषय हैं हमारे आदि ब्रह्मा ने एक वाक्य कहा था कि बेटा !तुम संसार में जा तो रहे हो पर संसार की स्थिति तो जानो। वहाँ जाकर अपने उच्च विधान से कार्य करोगे तो तुम्हारा विधान उच्च रहेगा। अन्यथा तुम्हारा विधान सब सूक्ष्म बन जाएगा यदि प्रजा या एक दूसरे प्राणी को ऊँचा बनाना है तो पूर्व स्वयं ऊँचे बनो। यज्ञ करना है और यज्ञ द्वारा प्रजा को लाभ पंहुचाना चाहते हो, तो सबसे पूर्व यज्ञ को विधान से रचाओ। उन सब क्रियाओं से रचाओं, जो हमारे महर्षियों ने वर्णन की हैं और वेदों के अनुकूल हैं बिना विधान यज्ञ करने से यज्ञ ने करने के लिए बराबर होता है ।

मुनिवरों !एक समय हमारे महानन्द मुनि ने प्रश्न किया था कि यज्ञ की कितनी प्रकार की परिपाटी होती है और यज्ञ का कैसा विधान होता है आज वेद का वही प्रकरण आ गया है जो महानन्द जी ने अब से बहुत पूर्व प्रश्न किया था तो मुनिवरों !आज का वेद पाठ यही उत्तर दे रहा है कि यदि यज्ञ रचाओं तो उसकी क्रियाओं को पूर्व ही जानकारी करों। सूक्ष्म यज्ञ रचाओ या विशाल यज्ञ, उसके लिए पहले से ही उच्च विधान बनाने की आवश्यकता है उसके लिए सुन्दर तथा महान योजना बनाओ। जिससे देखो, तुम्हारे लिए सभी प्रकार के देवता लाभदायक हो जिन्हें तुम आहवान करके हव्य पदार्थ अर्पण करना चाहते हो, देखो, इससे हमारा वाक्य केवल यह नही कि आज हम हव्य से ही इस सुविधा को बनाएँ, ऊँची भावनाएं बनाओ, और ऊँची भावनाओं से देवताओं का अच्छी प्रकार पूजन करना चाहिए क्योंकि हम जब तक किसी ऊँचे व्यक्ति के लिए या ऊँचे

देवताओं के लिए सुन्दर कार्य नही करते तब तक वह देवता हमें न कोई महत्व, न वाणी, न प्रकाश न प्राण ही प्रदान करेंगें।

इसीलिए मुनिवरों !यह आज का वेदपाठ कह रहा था कि यज्ञ करो, तो विधान से करो और चुन कर करो। उद्‌गाता चुनो, अध्वर्यु चुनो, ब्रह्मा चुनो और महान यज्ञमान चुनो। मुनिवरों !यज्ञमान के विधान में ऐसा कहा गया है कि हमारे महर्षियों ने, आदि ब्रह्मा ने तथा महर्षि तत्वकेतु मुनि महाराज ने ऐसा कहा है कि यज्ञमान की धर्मपत्नी के बिना यज्ञ सफल नही होता। ऐसा ही बेटा !राजा रावण ने, राजा राम के यज्ञ कराते समय कहा था कि जब तक तुम्हारी धर्म पत्नी न होगी तब तक यज्ञ की क्रिया अच्छी प्रकार न होगी और हे राम ! तुम्हारा यज्ञ कदापि सफल नही होगा, तो मुनिवरों !आज कैसे महानन्द जी प्रश्न कर रहे हैं कि उन्होंने यज्ञ किस प्रकार किया और कैसे किया ।

मुनिवरों !उसका कुछ सूक्ष्म सा रूप, हम तुम्हारे समक्ष आज वर्णन कर रहें है कि यज्ञ, जो होना चाहिए वह विधान के अनुकूल ही होना चाहिए, जिससे मानव का जीवन ऊँचा बने। यह जो मानव का शरीर है यह भी एक प्रकार का यज्ञ है मानो देखो, आज तुम इस शरीर रूपी यज्ञ के लिए नाना प्रकार की अशुद्‌ध आहुतियां देते रहो, अशुद्‌ध भोजन देते रहो तो यह तुम्हारा शरीर रूपी यज्ञ नष्ट हो जाएगा और तुम्हारा जीवन भी नष्ट हो जाएगा, यदि तुम शरीर को अच्छा पदार्थ नही दोगे तो यह तुम्हें कदापि अच्छी बुद्‌धि नही देगा। तो मुनिवरों ! जो तुम यज्ञ करो, उसमें संकल्प भी महान ऊँचे होने चाहिएं। जैसे परमात्मा ने हमारे शरीर को विधान से बनाया है इसमें वायु भी है, अग्नि भी है, अन्तरिक्ष भी है इनमें बेटा !जल भी है, पृथ्वी भी है, सब कुछ है। ये सब एक साथ कार्य करते हैं यदि मुनिवरों !एक भी विधान परमात्मा पृथक कर दे तो हमारे शरीर का बेटा ! हरि ओ३म् तत्सत हो जाएगा, तो मुनिवरों !यह हमारा आज का आदेश था कि यज्ञ करो, तो विधान से करो देव यज्ञ करने की मनोइच्छा है तो प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या को विधान से करना चाहिए।

मुनिवरों !अभी अभी त्रेता के समय का एक वाक्य हमारे कंठ आ गया है तो महानन्द जी ने बहुत पूर्व प्रश्न किया था वर्णन तो बहुत विशाल है इसका वर्णन अन्यत्र कहीं बड़ा विशाल होगा। अब तो तुम्हें केवल त्रेता के समय का वर्णन सुनाएं देते है। वह क्या है ? वह मानव के जीवन को ऊँचा बनाने वाला है आज प्रायः मानो महानन्द जी के कथनानुसार वह अशुद्‌ध माना जाता है परन्तु हम तो महर्षि बाल्मीकि जी के अनुकूल अपने कथन को प्रारम्भ कर रहे हैं। मुनिवरों !वह क्या है? महर्षि बाल्मीकि ने ऐसा कहा है कि बेटा !जब राजा राम अपने महान शिष्यगणों को लेकर, सुग्रीव की सेना को लेकर समुद्र तट पर जा पंहुचे, वहाँ उनके दो बहुत बड़े वैज्ञानिक थे जिनको बेटा !नल और नील कहते थे, जो देखो, शिल्प विद्‌या बहुत अच्छी प्रकार जानते थे, उन दोनों वैज्ञानिकों ने समुद्र का शेष बाँधना प्रारम्भ किया, तो मुनिवरों !इसके पश्चात ऐसा कारण बना, जिससे रावण को विदित हो गया कि राम संग्राम करने को विराज रहा है, इस पर वह विचारने लगा कि मुझे क्या करना चाहिए। बेटा !यह तो हमने तुमसे पूर्व ही वर्णन किया था कि राजा रावण बहुत ही बुद्‌धिमान था, वह चारों वेदों का ज्ञाता था, वह अपनी क्रियाओं को भली भांति जानता था।

राजा रावण और विभीषण की भगवान राम के विषय में चर्चाएँ

तो मुनिवरों !हमने कुछ ऐसा सुना है, कि रावण ने अपने विधाता विभीषण को कंठ किया और मन्त्री से कहा जाओ, आज विभीषण को, मेरे समक्ष लाओ, उनसे कुछ वार्त्ता उच्चारण करूंगा। तो उस समय बेटा !वह मन्त्री जी बहते हुए विभीषण के द्‌वार पर जा पंहुचे, उस समय विभीषण ने कहा आज कैसा सौभाग्य है, जो मेरे विधाता ने, जो परमात्मा के बड़े विरोधी हैं, मुझे कंठ किया है। मैं तो परमात्मा का बड़ा प्रिय हूँ उस समय

अपना सौभाग्य मनाते हुए राजा रावण के समक्ष जा पंहुचे। राजा रावण ने कहा आईए, विधाता !विराजिए। तब विभीषण ने कहा मेरे योग्य क्या सेवा है? विधाता !आप तो परमात्मा के विरोधी हैं, आपने आज परमात्मा के भक्त को अपने समक्ष बुलाया है, यह क्या बात है?
उस समय रावण ने कहा नही नही विधाता !मैं तुमसे कुछ प्रार्थना कर रहा हूँ, मेरी एक इच्छा है आज राम मुझसे संग्राम करने आ रहा है, पूर्व तो मैं यह जानना चाहता हूँ, कि तुम प्रिय परमात्मा के भक्त हो, नित्य प्रति ओ३म् का जप किया करते हो, मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं राम से विजय पा सकता हूँ या नहीं? उस समय बेटा !विभीषण ने कहा था कि हे भगवन !आप सात जन्म भी धारण करेंगें, तब भी राम से विजय प्राप्त नहीं कर सकते।
उस रावण ने कहा यह कैसे हो सकता है?
उस समय विभीषण ने कहा विधाता !वह जो राम है, वह बड़े वैज्ञानिक हैं, बड़े बलवान हैं
रावण ने कहा अरे, हम भी तो वैज्ञानिक हैं
उस समय विभीषण ने कहा महाराज !आपके विज्ञान और उनके विज्ञान में कुछ भिन्नता है ।
क्या भिन्नता है'?
हे विधाता !राम के द्वारा दोनों ही पदार्थ हैं देखो, आत्मिक सत्ता भी है, वैज्ञानिक सत्ता भी दोनों सत्ताओं से वह तुम्हें विजय कर सकता है।
उस समय रावण ने कहा कि तो हमें क्या करना चाहिए?
उस समय विभीषण ने कहा मेरी इच्छा तों यह है देखो, यह तो पूर्व हरी नियम है, कि जिस राजा के राज्य में दुराचार होता है या जो राजा किसी कन्या या देवी का हरण करता है उस राजा का राज आज नही तो कल अवश्य समाप्त हो जाता है। भगवन !आपका तो विनाश होने वाला है, यह तो मुझे पूर्व ही विदित हो रहा है, यदि आप मेरी याचना को स्वीकार करें, तो विधाता !माता सीता को ले जाईएं और राम के चरणों को जाकर स्पर्श कीजिए। वे आपको अवश्य तथास्तु करेंगें।
उस समय जब रावण ने अपने विधाता से यह वाक्य सुना, तब उसने क्रोध में आ कर कहा अरे, !विधाता !तुम मेरे विधाता नही, शत्रु हो। क्या, मैं अपने शत्रु के चरणों को स्पर्श करूं?
उस समय बेटा !देखो, जब विनाश का समय आता है तब बुद्धि उसी प्रकार की बन जाती है बेटा !रावण ने अपने पदों की ठोकर से अपने विधाता को ठुकराना प्रारम्भ कर दिया ।
उस समय विभीषण ने कहा नहीं विधाता !मैं आपके हित की बात कर रहा हूँ।
उन्होंने कहा_ अरे, मैं हित की बात नही चाहता, जाओ, तुम भी वही चले जाओ जिसकी तुम बात कर रहे हो।

भगवान राम की शरण में विभीषण

मुनिवरों !देखो, !उस समय जब रावण ने उन्हें अपने राष्ट्र में न रहने दिया, तब वह बहते हुए समुद्र पार कर पर राम के समक्ष जा पंहुचे। राम ने उनका सब परिचय लिया। विभीषण ने अपने जीवन की जो महान घटनांए थी, उन सब की वर्णन किया और कहा महाराज !मैं आपकी शरण आया हूँ तब राम ने अपनी शरण दे दी।
बेटा !वह वहाँ बड़े आनन्द पूर्वक रहने लगे। कुछ समय के पश्चात राम ने विभीषण से कहा हे विधाता !मैं एक वार्ता जानना चाहता हूँ, आप रावण के विधाता हैं। मैं रावण से संग्राम करने जा रहा हूँ, क्या मैं उससे विजय पा सकूंगा?
उस समय उन्होंने कहा हे विधाता !हे राम !आप मेरी अनुमति लेते हैं, तो मेरी यह अनुमति है कि आप सात जन्म भी धारण करेंगें, तो भी रावण से विजय न प्राप्त कर सकेंगें

उस समय राम ने कहा यह क्या है, क्यों विजय नही पा सकूंगा? क्या विशेषता है उसमें?
उस समय विभीषण ने कहा हे राम !वास्तव में रावण के पुत्र नारायन्तक आदि बड़े बलवान हैं, इसके अतिरिक्त रावण भी बड़ा ज्ञानी और बलवान तथा वैज्ञानिक हैं, उसके पुत्रों !में भी यही विशेषताएं है राजा रावण का पुत्र नारायन्तक बड़ा वैज्ञानिक है, उसने विज्ञान के महान यन्त्रों की खोज की है, वह तुम्हारा विनाश कर देगा। इन सबको भी त्याग दिया जाएं, तो इसके पश्चात रावण के गुरु शिव महाराज हैं जो कैलाशपति हैं।

शिव

बेटा !शिव किसको कहते हैं? शिव तो परमात्मा को कहा जाता है। परन्तु यहाँ तो बेटा !ऋषि बाल्मीकि के कथनानुसार ऐसा उच्चारण किया जाता है, कि राजा शिव जिसका संस्कार राजा हिमाचल के द्वारा माता पार्वती के समक्ष हुआ था, वह कैलाशपति थे। जिसकी प्रजा कैलाश के तुल्य हो और प्रजा महान हो, मुनिवरों ! उस समय राजा का नाम शिव होता है जिस राजा के राष्ट्र में ज्ञान एवं विज्ञान से, आत्मिक बल से, वेदों के स्वाध्याय से जिसकी प्रजा बहुत ऊँची हो, जिसके राष्ट्र में देव कन्याएं और मानव बहुत उच्च भावना बाले हों अर्थात कैलाश पर्वत जैसी ऊँची भावना वाली प्रजा हो, बेटा !उस राजा के स्वामी को शिव कहा जाता है।
मुनिवरों !शिव तो परमात्मा को कहते हैं, और सूर्य नाम शिव का भी है, जो हम पूर्व ही उच्चारण कर चुके हैं। आज तो कोई प्रकरण नही चल रहा है, तो मुनिवरों !हमारे यहाँ महान आचार्यों का एक विचार बना हुआ है, जो मुनिवरों !उनके गुण कर्मों के अनुकूल है। तो देखो, मुनिवरों !राजा रावण के गुरु राजा शिव थे, जिनकी प्रजा बहुत ऊँची थी, बहुत वैज्ञानिक थीं। ऐसा राजा, जो रावण की सहायता करता हो, उस राजा की विजय क्यों नहीं होगी हे राम !रावण के समक्ष चाहे जितने राम आ जाएँ तब भी आप रावण को संग्राम में विजय नही पा सकोगे। उस समय राम ने कहा तो हे विधाता !मुझे क्या करना चाहिए? मुझे जो विजय पानी ही है। उन्होंने कहा भगवन !आप अजयमेध यज्ञ कीजिए और यदि यज्ञ विधान द्वारा किया गया, तो आपकी विजय अवश्य होगी। उस समय राम ने कहा मैं अवश्य करूंगा क्या शिव मुझसे प्रसन्न हो जाएंगें?
उस समय बेटा !विभीषण ने कहा विधाता !यदि आप अजयमेध यज्ञ करेंगें और शिव को निमन्त्रण के अनुकूल नियुक्त करोगे, तो महान शिव अवश्य ही आप सब के समक्ष आ जाएंगें। आप, अवश्य विजय पा जाएंगें।

विजय यज्ञ का ब्रहमा राजा रावण

उस समय बेटा !राम ने विभीषण के आदेशानुसार वहाँ सब सामग्री जुटाना प्रारम्भ कर दिया, जब सब सामग्री, घृत आदि वहाँ एकत्रित होने लगा, बुद्धिमानों को आमन्त्रित किया गया। उस समय विभीषण ने कहा कि –हे राम !यदि यह सब सामग्री भी जुट जाएं, परन्तु जब तक यज्ञ का ब्रहमा रावण नही बनेगा, तब तक आपका यज्ञ सफल नही होगा ।
उस समय राम ने कहा –विघाता !यह कैसे होगा, मेरा शत्रु, मेरे समक्ष आएगा ?
उन्होंने कहा कि देखो, रावण इतना ज्ञानी है वास्तव में तुम निमन्त्रण देने जाओगे, तो वह स्वयं आ जाएंगे और तुम्हारे यज्ञ को अवश्य सफल करेंगें।
मुनिवरों !महर्षि बाल्मीकि जी ने यह ऐसा वर्णन किया है, कि विभीषण वहाँ से अपने स्थान पर चले गए। वहाँ सब सामग्री जुट जाने के पश्चात बेटा !राम और लक्ष्मण ने रावण को निमन्त्रण देने की योजना बनाई। दोनों वहाँ से बहते हुए रावण के द्वार पर जा पंहुचे। रावण ने बेटा !इससे पूर्व राम को कदापि नही देखा था, इसीलिए बेटा !रावण को उनकी कोई पहचान न हो सकीं, इस समय रावण अपने न्यायालय में विराजमान होकर न्याय कर रहा था। उस समय के न्याय को पाकर राम ने लक्ष्मण से कहा रावण तो बड़ा नीतिज्ञ है।

देखो, कैसा सुन्दर न्याय कर रहा है। धन्य है। विधाता को निमन्त्रण दें, तो कैसे दें? उस समय वह वहाँ कुछ समय शान्त विराजमान हो गए। न्यायालय में जब रावण का न्याय समाप्त हो गया, तब वे उनके समक्ष पंहुचे।

राम के आमन्त्रण पर रावण का धर्माचरण

उस समय रावण ने कहा कहिए भगवन् !किस प्रकार बहते हुए आए हैं, क्या याचना है?

उन्होंने कहा भगवन !हम एक अजयमेध यज्ञ कर रहे हैं, वेदों के अनुकूल आप हमारे यज्ञ को पूर्ण कीजिए।

रावण ने कहा तथास्तु जैसी तुम्हारी इच्छा होगी, वैसा ही किया जाएगा।

उस समय राम ने कहा भगवन !समुद्र तट पर यज्ञ हो रहा है, और हम आपको निमन्त्रिण कर चुके हैं, हे विधाता !हम कल नही आ सकेंगे, तृतीय समय में आप स्वयं वहाँ विराजमान हो जाना।

उस समय बेटा !रावण ने देखो, राम की उस याचना को स्वीकार कर लिया। वहाँ से दोनों विधाता !बहते हुए समुद्र तट पर आ पंहुचें

मुनिवरों !अब हमने महर्षि बाल्मीकि के मुखारबिन्दु से ऐसा सुना है, और हमारे महर्षि लोमश मुनि महाराज ने ऐसा देखा भी हैं कि जब राम और लक्ष्मण दोनों अपने स्थान पर पंहुच गएं, तो वहाँ उन्होंने यज्ञ की सब सामग्री घृत आदि एकत्रित किया और बड़ी सुन्दर यज्ञशाला बनाई, ऐसी सुंदर यज्ञशाला बनाई जिसका वर्णन नही किया जा सकता।

मुनिवरों !ऐसा विदित होने लगा, जैसे ब्रह्मलोक से ब्रह्मा आ पंहुचा हो। अब देखो, द्वितीय समय भी समाप्त हो गया तृतीय समय आ पंहुचा। अब रावण की वहाँ प्रतीक्षा होने लगी, कुछ समय के पश्चात बेटा !रावण भी अपने पुष्प विमान में विद्यमान हो करके उस महान भूमि पर आ पंहुचे जहाँ राम ने यज्ञशाला का निर्माण किया था। मुनिवरों !वह वहाँ आ पंहुचे, तो उन दोनो विधाताओं ने उनका बड़ा स्वागत किया और बेटा !राम ने उन्हें अजयमेध यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त कर दिया।

मुनिवरों !ब्रह्मा चुने जाने के पश्चात, जब वहाँ यज्ञोपवीत धारण किए जाने लगे, तों उस समय रावण ने उन सब का परिचय लिया। उस समय उन्होंने कहा भगवन !हमें राम कहते हैं, हमें लक्ष्मण कहते हैं। जब उन्होने अपना व्यक्तित्व उच्चारण किया, तो रावण बड़े आश्चर्य में रह गया । अरे, यह क्या हुआ। यह जो बड़ा आश्चर्यजनक कार्य हुआ, उस समय उन्होंने कहा अरे, चलो, जब इन्होंने तुम्हें ब्रह्मा चुना है, तो तेरा कर्तव्य है कि विधि विधान से यज्ञ पूर्ण कराऊं। उस समय उन्होंने कहा धन्यवाद !अहा, तुम्हारी धर्मपत्नी कहाँ हैं?

उस समय कहा विधाता !मेरी धर्मपत्नी तो आपके गृह, लंका में हैं। उस समय मुनिवरों !रावण ने कहा अरे, मैंने यज्ञ को विधान से नही किया, तो मैं देवताओं का महापापी बन जाऊंगा। मुझे अजयमेध यज्ञ करने का ब्रह्मा इन्होंने बनाया है। मुझे परमात्मा ने बुद्धि दी है, मेरा कर्तव्य केवल एक ही है कि देखो, मैं सीता को लाऊं और यज्ञ को विधान से पूर्ण करूँ ।

यज्ञ के विधान के लिए सीता का यज्ञ में आगमन

महर्षि बाल्मीकि ने ऐसा कहा है कि वह वहाँ से अपने पुष्पविमान में विद्यमान होकर के लंका में सीता के द्वार जा पंहुचे, और सीता से कहा हे सीते !तेरा स्वामी यज्ञ रचा रहा है, समुद्र तट पर चलो। उस समय सीता ने कहा हे रावण !आप नित्यप्रति मिथ्या ही उच्चारण किया करते हो?

नहीं, सीते !मुझे तेरे स्वामी ने उस यज्ञ का ब्रह्मा चुना हैं

सीता ने जब इस आदेश को पाया, तो प्रसन्न हो गई और उसके पुष्पविमान में विद्यमान हो, उसी स्थान पर जा पंहुचे, जहाँ विशाल अजयमेध यज्ञ करने का विधान बनाया गया था। वहाँ जाकर बड़े आनंद से सीता, राम

के दक्षिण विभाग में विद्यमान हो गई और रावण अपने दक्षिण विभाग में यज्ञ का ब्रह्मा बन गया। उसके पश्चात यज्ञ आरम्भ होने लगा।

मुनिवरों !जब तक विधान से ऋत्विक नहीं चुने जाएंगे चाहे कैसा भी यज्ञ हो वह लाभदायक नही होगा । तो वहाँ आनंद पूर्वक ऋत्विक चुने गए । वहाँ देखो, अध्वर्यु आदि भी चुने गए । यज्ञोपवीत धारण किए और यज्ञ आरंभ होने लगा ।

तो मुनिवरों !हमने ऐसा सुना हैं, कि महर्षि बाल्मीकि के अनुसार तथा महर्षि लोमश मनि के निर्णय अनुसार उन्होंने यज्ञ को देखा था, कि यह यज्ञ इसी प्रकार चलता रहा।

मुनिवरों !जिस समय यज्ञ की पूर्णाहुति होने वाली थी, उस समय सीता ने राम से कहा हे राम !आप यज्ञ को रच रहें हैं, परन्तु रावण के लिए आपके पास कुछ दक्षिणा भी है या नहीं?

तब राम ने सीता से कहा हे सीते !मेरे पास क्या है, मैं उन्हें क्या दक्षिणा दूं?

सीता ने कहा विधाता !यह तो बड़ा द्रव्यपति राजा है, इसके यहाँ तो स्वर्ण तक के गृह हैं, मणियों के ढेर लगे रहते हैं। तो यह कार्य कैसे सम्पूर्ण होगा?

तो मैं क्या करूं?

तो उस समय बेटा !देखो, सीता ने क्या किया, उसके पास एक कौड़ी जूड़ा था, वह उसने राम को दिया ओर कहा –लीजिए महाराज !आप ब्रह्मा रावण का स्वागत इससे कीजिए।

देखो, बेटा !सीता का यह कौड़ी जूड़ा राम ने स्वीकार कर लिया।

अब मुनिवरों !देखो, यज्ञ चलता रहा, पूर्णाहुति होने के पश्चात वहाँ बेटा !यथाशक्ति स्वागत होने लगा। राम और सीता दोनों उस कौड़ी जुड़े को लेकर रावण के समक्ष जा पंहुचे। रावण ने कहा हे राम !मुझे विदित होता है, जैसे यह कौड़ी जूड़ा सीता का हो। उस समय सीता ने कहा विधाता !यह कौड़ी जूड़ा मेरा क्या है, यह तो शुभ कार्य है। यह तो मेरे पिता दशरथ ने किसी समय मेरे लिए आभूषण बनवाया था। आज यह आपके इस शुभकार्य में आ गया। मेरा क्या है, उस समय रावण ने कहा हे सीते !मुझे तुम्हारी यह दक्षिणा स्वीकार है। परन्तु मैं किसी के शृङ्गार को भ्रष्ट नही करना चाहता। जब मुनिवरों !रावण ने यह वाक्य कहा, तो प्रजा सन्न रह गई और कहा अरे, रावण तो बड़ा बुद्धिमान हैं उस समय बेटा !वहाँ यज्ञ पूर्ण हो गया। पूर्ण होने के पश्चात रावण न कहा था हे राम !विदित होता है, कि तुम्हारी मनोकामनाएं अवश्य पूरी होंगी।

आशीर्वाद देकर सीता से कहा हे सीते !यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो तुम अपने पति की सेवा करो। नही, तो मेरी लंका को चलो।

धर्म और यज्ञ

उस समय सीता ने कहा हे विधाता !आज से तो तुम मेरे पिता ब्रह्मा बन गएं हो। मुझे तो यहाँ भी ऐसा और वहाँ भी ऐसा। भगवन !मैं आपके द्वारा चलूंगी।

मुनिवरों !इसका नाम धर्म है, राम ने भी यह नही कहा कि सीते !तुम कहाँ जा रही हो, तब वह बेटा !रावण के साथ पुष्प विमान में विद्यमान हो गई। रावण ने उस समय ऋग्वेद का मन्त्र उच्चारण करते हुए सीता से कहा था हे सीते !आज मुझे विदित होता है, कि अब मेरे विनाश का समय आ गया है, मेरी लंका नष्ट भ्रष्ट होने वाली हैं

सीता ने कहा हे विधाता !आप इतने व्याकुल क्यों हो रहे हैं? उन्होंने कहा हे सीते !मेरी जो महान प्रजा है, वह समाप्त होने वाली हैं, जो देखो, महान शत्रु बना बैठा हैं, जिसने शत्रु को अपना लिया है और अपना कर उसको ब्रह्मा बना करके, उसकी आत्मिक ज्योति को खींच लिया। हे सीते !उसकी मनोकामना क्या पूरी नहीं होगी।

आज मुझे विदित होता है कि मुझे यह यज्ञ पूर्ण नही करना था यज्ञ पूर्ण होने से मुझे विदित हो गया, कि मेरी लंका में एक भी मानव नही रहेगा। यह वाक्य उच्चारण करते हुए रावण बड़े शोक से युक्त हो गया।
यह है बेटा !आज का हमारा आदेश। हम उच्चारण कर रहे थे, कि मानव को अगर दूसरे को लाभ पंहुचाना है, दूसरों की उन्नति पर पंहुचाना है, तो उस यज्ञ को, उस महान कार्य को विधान से करो। वेद मन्त्रों को जानो और उनको जानकर उनके अनुकूल आचरण करो। महान यज्ञ को रचाओ। शुभ कार्य करो। यदि यज्ञ विधान से नही किया गया है तो वह कदापि सम्पूर्ण नही होगा। तो मुनिवरों !यह हमारा केवल नवीन मत नही हैं, यह तो उनका मत है, जिन्होंने बेटा !यज्ञ को सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया।
अरे, देखो, यह तो तुम्हारी बुद्धि में आने वाला वाक्य हैं कि परमात्मा ने जब सृष्टि प्रारम्भ की, तो आत्मा के अनुरोध से की, यदि परमात्मा विधान से इस सृष्टि को न बनाता, तो यह संसार इस प्रकार नही चल सकता था। जैसा आज चल रहा है। परमात्मा ने इस सृष्टि रूपी यज्ञ को उत्पन्न किया।
आज हम मनुष्य रूपी यज्ञ को उत्पन्न करें, आज हम भौतिक यज्ञ करें। देवताओं को सुगन्धित हव्य पंहुचाएं। देवताओं को पौष्टिक पदार्थ प्रदान करें । यह हमारा कर्तव्य है। आज हम विशेष यज्ञ के ऊपर ही प्रकाश दे रहे हैं। हमारा वेद पाठ यही कह रहा है कि यज्ञ को पूर्ण करो, और पूर्ण विधान से करो। धर्म से करो, अधर्म से मत करो। दुर्भावना से न करो।
देखो, जिस पद के तुम अधिकारी हो या तुम्हें चुना गया है, वह चाहे तुम्हारे लिए हानिकारक हैं, परन्तु तुम्हारा कर्तव्य है कि उसका पूर्ण रूपेण पालन करो, उसको हानि न पंहुचाओ। यदि हानि पंहुचाओगे तो तुम्हें कोई भी लाभ प्राप्त न होगा।
पूज्य मह धन्य हो भगवन !
पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अभी अभी हम व्याख्यान दे रहे थे कि देखो, कल हमारा दार्शनिक विषय चल रहा था और कल भी दार्शनिक विषय चलेगा। दार्शनिक विषय यह चलेगा कि देखो, कल यह वर्णन करेंगें कि वास्तव में बृहस्पति लोक की क्या स्थिति होती है, आज तो हमारी केवल व्यवहार की वार्त्ता चल रही थी, कि मानव को कार्य करने से पूर्व उसका महान विधान बना लेना चाहिए जैसा राजा रावण ने बनाया। चाहे आपत्ति आएँ, चाहे जीवन समाप्त हो जाएं, परन्तु उसका साकल्य पूर्ण बनाओ। जिस पद के अधिकारी हो, उसे पूर्ण करो। ऊँचे कर्तव्य से करो। जीवन की योजना को ऊँचा बनाओ। शरीर रूपी यज्ञ को भी जानते रहो, शरीर रूपी यज्ञ में जो महान यज्ञमान यह आत्मा है, जो आत्मा को प्रेरणा दे रहा है, वह संसार रूपी यज्ञ को उत्पन्न करने वाला है, उसका यज्ञमान बना बैठा हुआ है आत्मा, आज आत्मा को जानो। आत्मा को पहचानो। परन्तु आत्मा तभी जानी जाएगी जब तुम शुद्ध रूप से यज्ञ रचाओगे। ऊँचे कर्म करोगे, तभी तुम्हारी आत्मा बलवान होगी। जैसे राजा राम ने शुभ कर्म किए, जिससे उनकी आत्मा बलवान हो गई और देखो, महान रावण को सहज ही विजय कर लिया।
अहा !कैसा सुन्दर वेद पाठ था। कैसा सुन्दर आदेश था महर्षि बाल्मीकि मुनि महाराज ने भी क्या महान वाक्य कहे और राजा रावण ने भी सुन्दर वाक्यों से वर्णन किया।
क्या करें बेटा !ज्ञान तो बड़ा ही विशाल है। ज्ञान वन में पंहुचने पर तो विदित ही नही होता, कि कितना बड़ा है यह, मुनिवरों !वेदों का तो ज्ञान ही विशाल है। आज वेदों पर दृष्टि पंहुचाई जाती है, तो इसका बहुत ही उच्च प्रकरण आता है।
देखो, कल के व्याख्यान में हम तुम्हें बृहस्पति का वर्णन करेंगें। तब तुम्हें विदित होगा, कि वेदों में कितनी निधि है और मानव कहाँ का कहाँ जा सकता है क्या मानव की स्थिति होती है, यह जो एक सूक्ष्म सी वार्त्ता

है, जो तुम्हारे समक्ष उच्चारण की। देखो, हमारा दार्शनिक विषय किसी किसी स्थान पर आता है बेटा !अब हमारे आदेश समाप्त होने वाले हैं क्योंकि समय भी समाप्त हो गया है।

पूज्य महानन्द जी अच्छा धन्यवाद, गुरु जी !वह जो हमने आपसे प्रश्न किया था उसका अभी तक आपने हमे कोई भी उत्तर नही दिया।

पूज्यपाद गुरुदेव –कल ही प्रश्नों का उत्तर दे देंगे बेटा !

पूज्य महानन्द जी अच्छा धन्यवाद!

पूज्यपाद गुरुदेव तो मुनिवरों !अभी अभी हम महानन्द जी के प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे । अभी यज्ञ का प्रकरण आ रहा था । कल हमारा अश्वमेध यज्ञ का प्रकरण है, अश्वमेध यज्ञ का वर्णन करेंगे और कुछ लोकों की वार्ता और दार्शनिक विषय होगा । अब हमारा वेदपाठ होगा। इसके पश्चात हमारी वार्ता समाप्त हो जाएगी । धन्यवाद !

1962 03 07 वर्ण व्यवस्था

जीते रहो !देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्यगण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, कि जिन वेद मन्त्रों का अभी अभी तुम्हारे समक्ष पाठ किया, जैसा हम पूर्व स्थान में उच्चारण कर चुके हैं। कि वेदों का पाठ कई प्रकार से उच्चारण किया जाता है। जैसे माला पाठ होता हैं, घन पाठ होता हैं जटा पाठ होता हैं और विसर्ग पाठ होता है उदात्त और अनुदात्त का विसर्ग और दोनो की सन्धि करके भी पाठ किया जाता हैं। जटा पाठ तो हम नित्य प्रति किया करते हैं परन्तु धन पाठ ऐसी मनोहर शैली से किया जाता हैं बेटा कि मार्ग के सिंह तक आकर उस गान को सुना करते हैं। अहा, किसी स्थान पर अवसर मिलेगा, तो उच्चारण करेंगें। वास्तव में तो कर्मों के अनुकूल वेदों का उच्चारण उस प्रकार नही किया जाता, जिस प्रकार वेदों का स्वाध्याय किया और जो वास्तविक हमारी धुन थी। उस ध्वनि से हम वेदों का पाठ कदापि नही कर सकते । परन्तु वेदों ने, हमारे विद्वानों ने और हमारे आदि आचार्यों ने भी ऐसा कहा है कि न करने से कुछ उच्चारण करना भी विशेष माना गया हैं। जैसा भी काल आए उसके अनुकूल ही वाणी से उच्चारण होना अनिवार्य हो जाता हैं

बेटा !देखो, वेदों का गान गाते समय अमृत की धारा बह रही थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे परमात्मा हमें कुछ देन दे रहे हों, बेटा !वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के नाते, जो प्रकाश है, वह ईश्वर की देन हैं। आज जब हम ईश्वर का गुणगान गाते है तो हृदय मुग्ध हो जाता हैं, क्योंकि आत्मा उस परमात्मा का बालक है। जैसे बेटा ! योग्य माता का बालक, माता की प्रशंसा करता हुआ, मुग्ध हो जाता हैं और प्रशंसा करता ही रहता है। इसी प्रकार वेदों का ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान है' और आत्मा का भोजन है, को गाते गाते आत्मा मुग्ध हो जाता है, अन्तःकरण पवित्र होने के लिए चला जाता हैं। न जाने मानव के हृदय में कहाँ से ज्योति जाग्रत होने के लिए प्रविष्ट हो जाती हैं।

महाराजा शिव पुत्र गणेश

अहा !हमारा यह विषय नही था, जो आज प्रारम्भ होने लगा आज। गणेभ्योः देखो, गणपति के नाम का कई स्थानों पर वर्णन आया। गणपति बेटा !परमात्मा को कहा जाता हैं। जो सर्वगणों में गणपति माना जाता हैं जो संसार में गणना के तुल्य है, उस विधाता को देखो, बेटा !गणेशायते कहते हैं।

मुनिवरों !गणेश मानव को भी कहते है। महाराजा शिव, जिनका राज्य हिमाचल में हुआ, उस माता पार्वती का पुत्र भी गणेश था। उससे पूर्व बेटा !गणेश उपाधि मानी जाती थी। परन्तु वेद गान में कहा गणपति भ्रानचते

विश्वायते रूपायणम वास्तव में गणेश उसको कहते हैं जो गणेति हो, गणेति करने वाला हो, जो महान देखो, अयुक्त रहने वाला हो। जिसको न राग हो, न द्वेष हो। जिसकी घ्राण शक्ति अधिक हो। जो सब गन्ध व सुगन्ध को अपने में धारण करने वाला हो, उसको गणेभ्योः कहते हैं । परमात्मा सबसे बड़ा गणपति माना गया हैं। परमात्मा संसार की सुगन्ध को अपने में धारण करता रहता हैं।

एक समय माता पार्वती ने अपने स्वामी से कहा हे महाराज !हमारा जो यह बालक हैं। जिसको हम गणेश कहते हैं यह हमारे गर्भस्थल से उत्पन्न हुआ है, इसकी घ्राण शक्ति बहुत अधिक हैं। घ्राण शक्ति अधिक होने के नाते यह तो ऐसा है जैसे इसमें परमात्मा के विशेष गुण हो यह तो बहुत संस्कारों वाला हैं। इसको हमने कदापि युवावस्था तथा रजोगुण में नही देखा, सम्प्रति इसमें तीनो गुणों का भास होता हैं या नही?इसका क्या कारण है ?

बेटा !हमने उस त्रेता काल को देखा है, जिस काल में महाराजा शिव और पार्वती थी। उस काल में मुनिवरों ! माता पार्वती अपने सत्संगों में अपने पुत्र गणेश की प्रशंसा अवश्य किया करती थी।

आज हमारे वाक्यों को अभिप्रायः क्या है, वह यह कि जैसे देखो, यह गणेभ्योः वह परमात्मा महान गन्ध सुगन्ध को धारण करने वाला है, ऐसा ही प्रत्येक मानव को बनना चाहिए। यदि कोई मानव कटुवचन भी उच्चारण कर जाएं, उसको सहन कर लेना चाहिए और सहन करके उस पर मनन करना चाहिए। मुनिवरों ! आचार्यों ने ऐसा कहा है, कि जो मानव दूसरों को हानि पंहुचाने का प्रयत्न करता है, वह स्वयं हानि का पुतला बन करके नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। वेद का गान भी ऐसा ही कह रहा था। परन्तु वेदों का व्याख्यान कहाँ तक देवें। वेदों में तो विशाल ज्ञान का भण्डार भरा पड़ा हैं बहुत काल हुआ जब वेदों का स्वाध्याय किया था, इसीलिए आज भी वह हमारे सामने निधि है।

आज महानन्द जी के कथनानुसार तो संसार बहुत अधोगति की और चला गया हैं। आज मानव को विचार लगा लेना चाहिए, कि हमें किस प्रकार का बनना हैं, हमारा जीवन कितना अलौकिक है, और हमारे महान आचार्यों ने कैसे अलौकिक जीवन को माना है

मुनिवरों !देखो, महाराज शिव ने एक समय अपने पुत्र गणेश से कहा हे पुत्र गणेश !तुम अपने अन्तःकरण की भावनाओं का उच्चारण करो। यह क्या विशेषता है, जो हम तुम्हें रजोगुणी नही देख पा रहे हैं?

उस समय उन्होंने कहा हे भगवन !जब मैंने संसार में जन्म धारण किया है, तो संसार में ही रहना हैं आप जैसे बुद्धिमान माता पिता मिले है, फिर भी यह मन देखो, नाना प्रकार की तुच्छताओं में निवास करता है और अच्छी भावनाएं भी सोचता हैं। हे भगवन !इसीलिए हम यही विचारते हैं कि मन से अच्छी वार्त्ता ही करें। जब मन से अच्छी वार्त्ता विचारते रहते है तब भगवन! देखो, उसके रजोगुण आने का कोई कारण ही नही बनता। भगवन !देखो, जन्म धारण करते ही जिह्वा पर ओ३म् की रेखा खींची जाती हैं, उस रेखा में हमें बांध दिया और वह रेखा हमारे समक्ष है।

मन रसना तत्व

इस रसना का सम्बन्ध मन से है इसीलिए यदि ओ३म् शान्त हो जाएगा तो हमारा जीवन ही शान्त हो जाएगा। ओ३म् हमारा सबसे मुख्य जीवन माना गया हैं। इसका भगवन !वेदों में बड़ा महत्व है। हे भगवन !जब नामकरण संस्कार होता हैं उस समय माता पिता कहा करते हैं कतमो असि कहाँ से आए हो? उस समय हम कहते हैं कर्मों का भोग भोगने के लिए आए हैं बाल्यावस्था में उसे ज्ञान तो नही रहता, परन्तु उसे उच्चारण का कुछ ध्यान तो रहता ही है। उस काल में शब्द ध्वनि बन जाती हैं, ध्वनि बन करके हम कर्मों का भोग भोगने के लिए आए हैं। इसीलिए आज हम भगवन !रजोगुणी होकर क्या करेंगें? रजोगुणी होकर भी हमें संसार

में जीवन पूरा करना है और सतोगुणी रह करके भी । भगवन !रजोगुण में रहेंगें, तो जीवन हमारा अधोगति में चला जाएगा और पार्थिव बनता चला जाएगा । यदि हम अग्नि तुल्य सतोगुणी बनेगे, तो जीवन ऊपर की और जाएगा। अन्त में देखो, सूर्य मण्डल में होते हुए बृहस्पति लोक में क्या, मोक्ष तक को प्राप्त हो जाएंगें। इसीलिए भगवन !हमें आज उन गुणों की आवश्यकता नहीं, जिन्हें आप उच्चारण कर रहे हैं।

पूज्य महानन्द जीः गुरुदेव !हमने तो ऐसा सुना है कि गणेश की घ्राण शक्ति बहुत अधिक थी, और ऐसा भी सुनते हैं कि उस बालक का सिर हाथी का था आप तो केवल उसकी विशेषता ही उच्चारण कर रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः हास्य ..और बेटा !क्या उच्चारण करें, जो तुम उच्चारण करो, वह हम भी उच्चारण कर दिया करें।

पूज्य महानन्द जीः गुरुजी !हमने तो ऐसा सुना है कि गणेश जी को तो हाथी का एक विशाल स्तम्भ माना जाता हैं

पूज्यपाद गुरुदेवः हास्य तो महानन्द जी यह वार्त्ता तुम्हारे हृदय में आती हैं?

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !आप, हमारी वार्त्ता क्यों ले रहे हो, हमारे हृदय में आए न आए, आप अपना निर्णय कीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा, महानन्द जी !हमारा तो निर्णय यह है कि मानव के हाथी का सूंड नही होती। अब तुम उच्चारण करो

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !हमारा विश्वास है कि विज्ञान के अनुकूल मानव के कण्ठ के ऊपरी भाग को पृथक करके दूसरा शीश लगाया जा सकता हैं

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !यह सत्य है परन्तु यह भी तो विचारो, कि कहाँ एक मानव का सिर और कहाँ एक हतंग का शीश। कितना विशाल बन जाएगा । यह तो बेटा !तुम्हारे विचारने की बात है, यदि तुम ऐसा ही मानते हो, कि गणेश जी के हतंग की सूण्ड थी, तो बेटा !यह न मानने वाला वाक्य हो जाएगा क्योंकि मानव के कण्ठ का और हतंग के कण्ठ का कोई सम्बन्ध नही। इसीलिए बेटा !हम तुम्हारी वार्त्ताओं को कदापि नही स्वीकार करेंगे ।

पूज्य महानन्द जीः तो गुरुदेव !यदि आप हमारी वार्त्ताओं को स्वीकार नही करेंगें, तो क्या यह हुआ ही नही था।

पूज्यपाद गुरुदेवः अरे, देखो, भाई, इसका यह अभिप्रायः नही, जैसा तुम उच्चारण कर रहे हो। यहाँ ऐसी तुच्छ समाज नही? अरे, किन्हीं अज्ञानियों में जाकर इस व्याख्यान को देना। तुम्हारी वार्त्ता अवश्य स्वीकार हो जाएगी। तुम यहाँ यह वार्त्ता क्यों उच्चारण कर रहे हो, किसी मूर्ख सभा में यह वार्त्ता कह देना। हमें कोई आपत्ति नही । तुम्हारी सत्यवार्ताओं के ग्रहण करने में हमें किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं और न किसी बुद्धिमान को होनी ही चाहिए। परन्तु तुम्हारा यह वाक्य न मानने वाला हैं, हम तुम्हारे वाक्यों को अवश्य स्वीकार कर भी लेते, यदि हमने बेटा !वह काल न देखा होता।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन् !आप ही कुछ कृपा कीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अभी अभी महानन्द जी कुछ प्रश्न कर रहे थे, परन्तु इनके कैसे प्रश्न हो जाते हैं, इनके ऐसे मूर्खता वाले प्रश्न से सभा के सब कार्य भंग हो जाते हैं। हमारी विचारधारा भी ऐसी ही रह जाती है। और उसमें सब कार्य समाप्त हो जाता हैं। यह मूर्खानन्द ऐसे ऐसे प्रश्न कहाँ से लाता हैं।

मुनिवरों !अभी अभी हम प्रारम्भ कर रहे थे, कि मनुष्य को गणेश की भांति बनना चाहिए। देखो, जैसे गणेश अपने में गन्ध और सुगन्ध को धारण करने वाला होता हैं। इसी प्रकार प्रत्येक मानव प्रत्येक देव कन्याओं को

बनना चाहिए, क्योंकि उसी से जीवन का विकास होता है यदि मानव जीवन पा करके अपने जीवन का विकास नही किया, तो मानव का जीवन, न होने का तुल्य माना जाता हैं बेटा !यह हमारा व्याख्यान था। आज हम व्याख्यान देते देते कहाँ पहुँच गए

ब्राह्मण का अभिप्राय

आज हमारे वेद पाठ में ब्राह्मण शब्द की बड़ी ऊँची व्याख्या आई है। देखो, ब्राह्मण किसको कहा जाता हैं। कल महानन्द जी का एक प्रश्न था, वर्ण व्यवस्था जाति से होती है या गुण कर्मों से? यह जातिवाद का शब्द कहाँ से ले आएँ? चलो, कोई बात नही। हम इसका समाधान करेंगें। जैसा हमने सुना है और जैसा हमने पूर्व काल में देखा है, और जैसा आचार्य जनों से सुना है और जैसा वेदों के स्वाध्याय से हमने अनुभव किया है, उसके अनुकूल अवश्य उच्चारण करेंगें।

देखो, हमारे स्वाम्भु मुनि महाराज ने और भी आदि आचार्यों ने वर्णन किया है किमानव को मानव समाज के चार विभाग कर देने चाहिएं, वह चार विभाग कौन से होते हैं? जैसे मानव के शरीर के चार विभाग होते हैं इसी प्रकार हमारे समाज के भी चार विभाग माने जाते है परमपिता परमात्मा ने जैसे हमारे शरीर में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और महान शूद्र नियुक्त किए हैं, ऐसे ही यह प्रजा भी चार भागों में नियुक्त की गई हैं जिससे हमारे राष्ट्र का कार्य, राष्ट्र की उन्नति हो। एक दूसरे को कुदृष्टि से ने देखे, , परन्तु अपने अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहें। देखो, हमारे शरीर में कण्ठ के ऊपर वाले भाग का नाम ब्राह्मण है। ब्राह्मण में तीव्र बुद्धि होती है, वह वेदों का ज्ञाता होता हैं। ऐसे ही हमारे कंठ से ऊपर वाले भाग में सब सत्ता होती हैं क्या देखो, वाक्य पाने की दृष्टि से देखने की, रसना से कुछ आहार करने की, तथा रस लेने की, और वाक्य उच्चारण करने की और भी बेटा, त्यागी और तपस्वी सभी कुछ माना गया है ।

मुनिवरों !जिसमें इतने गुण हों, उसे ब्राह्मण कहा जाता हैं। ब्राह्मण उसी को कहा जाता हैं जैसा अभी अभी वर्णन किया जा रहा था कि ब्राह्मण उसी को कहा जाता है जिसमें बुद्धि और महान इतना त्यागी हो जैसी बेटा !हमारी रसना, जो नाना प्रकार के आहारों को धारण करती है अन्न तथा अन्य सुन्दर पदार्थ मुख में आते ही, न जाने कहाँ चले जाते हैं और इस त्यागी वाणी के द्वारा कुछ नहीं रहता। जो बेटा !ऐसा बुद्धिमान ब्राह्मण हो, जिसने वेदों की विद्या को अच्छी प्रकार निगला हो, स्वाध्याय किया हो। और निगल कर दूसरों को देने वाला हो, उसको ब्राह्मण की उपाधि दी जाती हैं

ब्राह्मण त्यागी हो, तो कैसा जैसे बेटा !हेमन्त ऋतु आ रही है। शरद वायु चल रही है। सर्व शरीर वस्त्रों से ढ़का रहता हैं। परन्तु यह मुखारबिन्दु ऐसे ही रहता है तो ऐसा बेटा !ब्राह्मण, जो इतना बड़ा तपस्वी हो, कि वह विद्या में अपना सब कुछ भूला हो, जो ऐसे गुणों वालो को बेटा !ब्राह्मण कहा जाता है

इसके पश्चात क्षत्रिय आ जाता है, क्षत्रिय उसको कहते है जो बेटा !सबकी रक्षा करने वाला हो। ब्राह्मण पर कोई आक्रमण करें, तो बेटा !क्षत्रिय सुनते ही उसकी रक्षा करें। हमारे शरीर में बेटा !यह भुज क्षत्रिय माने गएं है। भुजों में प्राकृतिक बल होता है, और अपने बल से सब की रक्षा करते हैइसी प्रकार क्षत्रिय सब की रक्षा कर राष्ट्र का कल्याण किया करते हैं। विद्या का प्रसार हो जाता हैं। राष्ट्र के वैश्य जन भी महान बन जाते हैं। यह देखो, बेटा !क्षत्रिय है। हमारे आदि आचार्यों ने स्वाम्भु मुनि ने इन भुजाओं को क्षत्रिय के तुल्य माना हैं

जातिवाद का वास्तविक स्वरूप

इसके पश्चात मुनिवरों !हमारा उदर आता हैं जहाँ जठारग्नि विराज रही है मानो देखो, यह एक बड़ा रहस्य है । सब पदार्थ जो रसना में मुख द्वारा धारण किएं जाते हैं, उदर में स्थित हो जाते हैं। जठाराग्नि उन पदार्थों को

पचा देती है। पचा करके, जो जिसकी सत्ता है, जिसका पदार्थ हैं, वह उसको प्राप्त हो जाता है । बेटा !बरतने का कार्य वैश्य का होता हैं बेटा !राष्ट्र में किसी प्रकार की आपत्ति आ जाएं, राजा पर किसी प्रकार की आपत्ति हो, क्षत्रिय पर किसी प्रकार की आपत्ति हो, ब्राह्मण को दान देने वाला, यह सबको ही देता रहता हैं। जो ऐसे गुणों वाला होता हैं बेटा !उसे वैश्य की उपाधि प्राप्त हो जाती हैं

यहाँ बेटा !शूद्र किसको कहते हैं। महान, जो न तो व्यापार ही कर सके, न कृषि ही अच्छी प्रकार कर सके, जिसमें बुद्धि न हो। मुनिवरों !देखो, जो हमारे शरीर में पद है, वे तीन वर्णों की अच्छी प्रकार सेवा करते है। यह तो बेटा !परमात्मा की रचना है। अब मानव की रचना सुनो।

हमारे स्वाम्भु मुनि आचार्य ने, हमारे गुरु ब्रह्मा आदि ने, इस सम्बन्ध में क्या, एक वर्णन किया हैएक समय में देखो, सतोयुग में कपिल मुनि महाराज, मार्कण्डेय ऋषि महाराज और भृगु ऋषि महाराज आदि ऋषियों का एक दार्शनिक समाज विराजमान हुआ, और नियुक्त किया गया कि हमें चारों वर्णों का प्रकरण लेना हैं, तो किस प्रकार लेना चाहिए और उनकी वर्ण व्यवस्था कैसे व्यक्त करें? उस समय स्वाम्भु मनु महाराज ने, आदि ब्रह्मा ने निवेदन किया हे ब्रह्म देव गुरुदेव !हम तो यह जानने आए हैं कि संसार में राष्ट्र का निर्माण कैसे किया जाएं, यह तो सतोयुग है, सब ही सत्यवादी हैं। न किसी को रोग हैं, न शोक हैं, न द्वेष है। परन्तु आगे तो ऐसा समय नही रहना है। हे भगवन !आप हमें बताईए, राष्ट्र का निर्माण कैसे हो? आपकी कृपा होगी।

गुण, कर्मों से वर्ण व्यवस्था

उस समय मुनिवरों !गुरु ब्रह्मा ने ऐसा कहा कि वास्तव में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र जो होने चाहिए, वह गुण कर्मों के अनुकुल होने चाहिए। तभी राष्ट्र का निर्माण हो सकता है, राजा को महान बनाने के लिए अनिवार्य है कि वह राष्ट्र में धर्म, मर्यादा बाँध कर गुण कर्मों के अनुकूल वर्ण व्यवस्था स्थापित कर, राष्ट्र पालन भली प्रकार करें।

तो मुनिवरों !देखो, उस समय कोई भी जातिवाद न था और न किसी प्रकार का विशेषण था, यह तो स्वाम्भु मुनि आदि आचार्यों ने, मार्कण्डेय ऋषि महाराज आदि ऋषियों ने, दार्शनिक समाज में विराजकर, इस समाज का, राष्ट्र का निर्माण किया था मानो देखो, यह वर्ण व्यवस्था हमारे आदि ऋषियों ने वर्णन की है, दार्शनिक समाज में यह प्रश्न भी आया कि भई !वर्ण व्यवस्था तो नियुक्त कर दी परन्तु प्रजा की यह जानकारी कैसे करें, कि कौन ब्राह्मण है? कौन शूद्र हैं? कौन वैश्य हैं? कौन क्षत्रिय हैं ? उस समय मुनिवरों !आदि ऋषियों ने एक विशेष प्रणाली चलायी, जो आज तक हमें कण्ठ हैं, वह कार्यतो हमने पूर्व समय में किया भी था, यह क्या है ? बेटा !हमारे आदि ऋषि ब्राह्मण जन उन गुणों को जानने वाले बन गए । भिन्न भिन्न स्थान पर, बुद्धिमान आचार्यों के विद्यालय थे, जिन्हें देखो, गुरुकुल कहते थे। जहाँ बालक जाता था, गुरु के कुल में जाने पर, गुरु जानकारी करा देता था, कि अरे, यह बालक तो ब्राह्मण के गुण वाला है, अथवा यह वैश्य के गुण वाला है अथवा क्षत्रिय गुण वाला है या शूद्र बनने वाला हैं।

इस प्रकार माता पिता अपने बालक को पूर्व ही वर्ण में बांध देते थे तो मुनिवारों !यह विद्वानों, बुद्धिमानों का कर्तव्य है यह बेटा !ब्राह्मणों का कर्तव्य है, यह आत्मज्ञानियों का कर्तव्य हैं, जिसकाल में आत्मज्ञानी होते हैं, उस काल में बेटा !वर्ण व्यवस्था ऊँची बन जाती हैं। मुनिवरों !हमने भी ऐसा किया और ऋषि वशिष्ठ मुनि महाराज का तो कर्तव्य ही यह था कि वह राम के राज्य में जितने भी अवर्ण रहते, उनको विद्या के अनूकुल जानकारी करा देते थे। मनिवरों !इतनी विद्या होनी चाहिए जिससे मानव की जानकारी कर सकें।

गुरुकुलों मे वर्ण निर्धारण

बेटा !हमारे आदि आचार्यों ने तो ऐसा कहा है कि एक ब्राह्मण का बालक, एक क्षत्रिय का बालक, एक शूद्र का बालक, एक वैश्य का बालक, जब चारों बालक गुरुकुल में जाते हैं, तो गुरु उनकी जानकारी लेते है कि अरे, यह कौन कौन से गुण बाला बालक हैं। जिसमें ब्राह्मण के गुण हो, ब्राह्मण के कुल में नियुक्त किया जाता था। वैश्य गुणों वाले को, वैश्य कुल में नियुक्त करते थे और जो शूद्र गुण वाला होता जिसमें बुद्धि न होती थी और जो न वेद विद्या पढ़ पाता था और न ही धनुर्वेद को ही सीखता था, उसको मुनिवरों !शूद्र की उपाधि दी जाती थी ऐसा आदि आचार्यों ने बेटा !नियुक्त किया था। उसी के अनूकूल हम यह उच्चारण कर रहे हैं। जिस वर्णव्यवस्था को हमने बहुत पूर्व काल में देखा, आज वह तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर रहे है। ऐसे ही शूद्र का बालक मानो, गुरु के कुल में जाने से यदि वह बुद्धिमान हो, वेदों का स्वाध्याय करने वाला हो, ब्राह्मण के कर्म काण्ड को जानने वाला हो जाता था, तो उस बालक को ब्राह्मण कुल में नियुक्त कर देते थे। परन्तु आज नहीं, हम तो इस संसार को लाखों वर्षों से देखते चले आ रहे हैं । परन्तु यह उस काल की वार्ता है, जिस काल में राम राज्य की स्थापना हो रही थी।

जिस काल में बेटा !बुद्धिमान अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहते है, उस काल का ही नाम बेटा !राम राज्य कहा जाता है। राम राज्य वैसे नही आता, राम राज्य की व्याख्या बहुत ही विशाल है। मुनिवरों !राम के समय को देखा जाता है, तो हमारी बुद्धियों में नाना प्रकार के संकल्प विकल्प आ जाते है राम तो बेटा !विराजमान रहते थे। परन्तु वशिष्ठ मुनि महाराज जो कुल पुरोहित माने जाते हैं उनकी उपाधियां ब्रह्मा आदि मानी गई हैं बेटा !जिस काल में कर्मों के अनुकूल वर्ण व्यवस्था होती है, जिस राजा के राष्ट्र में इस प्रकार की प्रजा होती हैं उसको बेटा !हमारे यहाँ राम राज्य कहा जाता हैं कहाँ तक वार्ता उच्चारण करें बेटा !व्याख्यान बहुत विशाल है कहाँ तक इस आदेश को देवें, देखी हुई वार्ता उच्चारण करने लगे तो बेटा समय के समय समाप्त हो जाते है

वेद विद्या के अधिकारी

अभी अभी हम उच्चारण कर रहे थे, कि हमारे यहाँ कर्मों के अनुकूल वर्ण व्यवस्था मानी गई हैं, और वेद में भी ऐसा ही माना है । वेद में कहा है कि मेरी विद्या पाने का सभी को अधिकार हैं। परन्तु उसको ही अधिकार है, जिसकी क्रिया भी, उसके अनुकूल हो। जो उस पर न चलने वाला हो, उसको मेरी वेद विद्या पाने का कोई अधिकार नही हैं। मुनिवरों !जो चलने वाला हो, वह कोई भी हो, किसी भी कुल में जन्मा हो, परन्तु वह इसके योग्य है। और उसी को अधिकारी माना गया हैं।

पूज्य महानन्द जीः गुरुदेव !जब मानव की वर्ण व्यवस्था इस प्रकार मानी जाती है, तो देवकन्याओं की वर्ण व्यवस्था किस प्रकार मानी गई हैं? इसका भी आपने कुछ निश्चय किया होगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !हमारा निश्चय किया हुआ नही, यह तुम्हें भ्रान्ति हैं। यह तो हमारे आदि ऋषियों का निश्चय किया हुआ हैं।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !हमें तो कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है, जैसे आपका ही निश्चय किया हुआ हैं

पूज्यपाद गुरुदेव जीः अरे, क्यों?

पूज्य महानन्द जीः वह इसीलिए कि हे भगवन !आधुनिक काल में हम यह देख रहे हैं कि जातिवाद माना जा रहा है, आज हम सूक्ष्म शरीर के द्वारा लाक्षागृह पर विचरण कर रहे थे, तो ऐसा देखा, आप कर्मों के अनुकूल क्यों मान रहे हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः हास्य बेटा !यह तो हमारे दार्शनिक जन पूर्व कह चुके है। कहाँ तक उन वाक्यों को दुहराएं तुम्हारे समक्ष। एक समय महर्षि नारद मुनि, उद्दालक मुनि महाराज, पापड़ी मुनि महाराज, शौनक मुनि

महाराज, स्वाम्भु मुनि महाराज, कोपात्री जी, महर्षि कपिल मुनि महाराज आदि ऋषियों का एक समाज विराजमान था। वहाँ वर्णन होने लगा कि सतोयुग क्या हैं? त्रेता क्या हैं ?द्वापर क्या हैं? और कलियुग क्या हैं?

कलियुग

जब तीनों कालों का वर्णन हो चुका और कलियुग की वर्णन होने लगा, तो मुनिवरों !देवर्षि नारद मग्न होने लगे। महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने कहा कि आप मग्न क्यों हो रहे हो? तब देवर्षि नारद मुनि महाराज ने कहा था जिस समय द्वापर समाप्त हो जाएगा, उस समय इतना बड़ा अज्ञान हो जाएगा, कि जिसकी जैसी बुद्धि होगी, उसी के अनुसार धर्म की मर्यादा चलने लगेगी। अहा, तब दार्शनिक समाज ने नारद मुनि से प्रश्न किया कि भगवन !ऐसा क्यों होगा? उन्होंने कहा था कि जिस काल में अज्ञानता आ जाती हैं, जिस काल में धर्म की मर्यादा समाप्त हो जाती हैं, उसी काल का नाम कलियुग माना गया हैं। जैसे मानव की बाल अवस्था, युवा अवस्था, मध्यम अवस्था, वृद्ध अवस्था ये चार अवस्थाएं हैं इसी प्रकार यह सतोयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग है। जब मानव की वृद्ध अवस्था हो जाती हैं उस समय बुद्धि समाप्त हो जाती है, अज्ञानता छाने लगती हैं। तो उसमें वह निधि नही रहती, जो बाल्यकाल में रहती हैं। जिस काल में जो निधि समाप्त हो जाती हैं, उस काल में, वैसे अज्ञान के मत चल जाते हैं। जब देवर्षि नारद ने यह कहा तो बेटा !वहाँ यह नियुक्त किया गया, कि आगे कलियुग का काल आएगा। उस काल में नाना प्रकार के मतों में चल कर महान देखो, वेद के अनुयायी तो बनेंगें, परन्तु वेद के वाक्यों को न मान कर, अपनी जठराग्नि की पूर्ति के ही प्रयत्न किए जाएंगें, यह बेटा !आज नहीं वह देवर्षि नारद ने बहुत समय हुआ, इन वाक्यों का निर्णय किया था। दार्शनिक समाज का यह प्रश्न, कि सतोयुग किसे कहते हैं? कलियुग किसे कहते हैं? इसका वर्णन तो कल करेंगें, यह जो केवल संकेत करने के लिए कहा, यह तो बहुत पूर्व काल में निश्चय किया गया था। परन्तु आधुनिक काल में जातिवाद चल रहा है, तो बेटा !चलने दो इसमें हमारा क्या प्रयोजन है, इसमें हमें किसी प्रकार की आपत्ति नही हैं, बेटा !हम तो उस वाक्य को उच्चारण करेंगे, जो हमारे आदि ऋषियों ने नियुक्त किया है । यदि बेटा !हम तुम्हारी अज्ञानता भरी वार्त्ताओं को मान लेवें, तो बेटा !हमारी आत्मा की हानि हो जाएगी। वेद वाक्यों की हानि हो जाएगी, मर्यादा समाप्त हो जाएगी। इसीलिए बेटा !हम तुम्हारे वाक्य कदापि श्रवण नही करेंगें।

कन्याएँ और वर्णव्यवस्था

मुनिवरों !देखो, अभी अभी हमारा व्याख्यान प्रारम्भ हो रहा था, महानन्द जी ने प्रश्न किया, कि देव कन्याओं की वर्ण व्यवस्था किस प्रकार की मानी जाती हैं। मुनिवरों !हमारे यहाँ ऐसा माना जाता है, कि जिसमें ब्राह्मणों के गुण हो, वही कन्या ब्राह्मण कुल में जाने योग्य है। जिसमें क्षत्रियों के गुण हो, वह कन्या क्षत्रिय कुल में जाने योग्य है। जिसमें वैश्य के गुण हो, वह वैश्य कुल में जाने योग्य है। जिसमें बुद्धि न, उसको शुद्र संगत नियुक्त कर दें। तो मुनिवरों !यह कैसे की जाती हैं? हमने तो उस काल को देखा हैं, आदि ऋषियों से भी सुना हैं, हमारे गुरुदेव ने भी नियुक्त किया हैं, और कहा है कि आदि ऋषि ऐसी जानकारी करते हैं। बेटा !ब्राह्मणी के गुण, जिस कन्या के होते हैं, वह इतनी बुद्धिमती होती हैं कि अन्य कन्याओं के भी वर्ण विभाग उसी प्रकार कर देती हैं। जैसे मुनिवरों !देखो, आचार्य, ब्राह्मण और ऋषिवर कर देते हैं, ऐसा ही बेटा !पूर्व ऋषि पत्नियों ने भी किया हैं। जैसे महानन्द जी तुमने माता अनूसूया जी को देखा होगा ।

पूज्य महानन्द जीः हां हां कृपा कीजिए

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अनुसूया सब क्रियाओं को जान करके, कन्याओं की वर्णव्यवस्था को बनाया

करती थी। ऐसा तुमने देखा भी होगा और सुना भी होगा जैसा हमारे आदि आचार्यों ने कहा, आज तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर रहे है मुनिवरों !देखो, जो कन्या ब्राह्मण के गुण वाली हो, उसको ब्राह्मण के कुल में नियुक्त किया जाता है। जिससे मर्यादा समाप्त न हो। जिसमें क्षत्रिय के कुल वाले गुण हों, बलवान हो, महान, ब्रह्मचर्य करने वाली हो, पति को प्रेरणा देने वाली हो, कि भगवन !राष्ट्र का उत्थान करो, अपने अस्त्र शस्त्रों से वर्णों की सेवा करो। तो मुनिवरों !उसको क्षत्रिय कहा गया हैं।

बेटा !आगे चल कर वैश्य का कुल आता है, जो कन्या व्यापार में साथ देने वाली हो, जो नाना प्रकार की विवर्णता चलाने वाली हो उसी को बेटा !यहाँ वैश्य कहा जाता हैं

इसी प्रकार बेटा !जो तीनों में से कोई भी कार्य न कर सके, उस कन्या को बेटा !शूद्र कुल में नियुक्त किया जाता हैं

पूज्य महानन्द जीः गुरुजी !हमारा वही प्रश्न दुबारा आ चुका हैं, इसका आपने कोई प्रमाण नही दिया, कि किस कुल की कन्या, किस वर्ण में नियुक्त कर देवें, जैसे क्षत्रिय की कन्या में ब्राह्मण के गुण होंवें, तो क्या वह ब्राह्मण के योग्य हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः हां क्यों नही।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन् !चाहे शूद्र की हो।

पूज्यपाद गुरुदेवः हां क्यों नही, चाहे किसी की ही हो, यदि उसमें ब्राह्मण के गुण है, तो वह अवश्य उसके योग्य हैं।

पूज्य महानन्द जीः तो गुरुजी !इसका कोई यथार्थ प्रमाण हो, तो दीजिए कृपा करके।

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !बहुत प्रमाण हैं

पूज्य महानन्द जीः तो एक सूक्ष्म सा दे दीजिए, कृपा होगी।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा सुनो, महानन्द जी ने अभी अभी एक प्रश्न किया, कि हमारे द्वारा क्या प्रमाण हैं, कि किसी कुल की कन्या का किसी ओर कुल में संस्कार किया गया हो, वास्तव में बहुत से प्रमाण हैं। परन्तु एक ऐसा प्रमाण दिए देते हैं, जो सभी के आँगन में आ जाएं, और उसको भली भांति अपने हृदय में धारण कर लें।

कन्या कुल का परिवर्तन

मुनिवरों !यह त्रेता काल का समय हमारे कण्ठ आ गया है। मुनिवरों !मही राष्ट्र का राजा महिदन्त था। वह महान चक्रव्रती राजा था और चक्रवर्ती राजा होने के नाते, लंका भी उसके अधीन थी। एक समय पुलस्त्य ऋषि महाराज ने महाराज शिव से निवेदन करके लंका में एक स्थान नियुक्त किया था। स्वर्ण का गृह था। जिसमें महाराज पुलस्त्य ऋषि विश्राम किया करते थे, कुछ समय के पश्चात ऐसा हुआ, कि जो जिस राष्ट्र का राजा था, वह उस राष्ट्र का राजा चुना गया। लंका का स्वामी महाराजा कुबेर बन गया, और भी सब राजाओं ने अपने राष्ट्रों को अपना लिया। राजा महिदन्त का सूक्ष्म सा राज्य रह गया।

विदुषी मंदोदरी

राजा महिदन्त के न तो कोई पुत्र था और न कोई कन्या थी। कुछ समय के पश्चात ऐसा सुना गया कि राजा महिदन्त के एक कन्या उत्पन्न हुई। तो राजा महिदन्त ने बड़ा ही आनन्द मनाया। नाना वेदों के पाठ कराए, जन्म संस्कार बड़े उत्सव से कराया। उसके पश्चात बेटा !कन्या जब कुछ प्रबल हुई तो महाराज की धर्मपत्नी सुरेखा ने कहा कि हे भगवन !इस कन्या को तो गुरुकुल में जाना चाहिए, जिससे भगवन !यह विद्या पाकर, परिपक्व हो जाएं। उस समय महाराजा महिदन्त अपनी धर्म पत्नी की याचना को पाकर, उस कन्या को लेकर कुल पुरोहित महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के समक्ष नियुक्त किया। बेटा !उस समय महाराजा तत्त्व मुनि महराज

दौ सौ चौरासी वर्ष के आदित्य ब्रह्मचारी थे। वहाँ पंहुच कर, राजा ने और कन्या ने भी महर्षि के चरणों को स्पर्श किया । और राजा ने कहा भगवन !मेरी कन्या को यथार्थ विद्या दीजिए । जिससे भगवन !मेरी पुत्री हर प्रकार की विद्या में सफल हो जाए।

महर्षि बाल्मीकि ने इस सम्बन्ध में ऐसा वर्णन किया है, कि राजा महिदन्त तो अपने स्थान पर चले गएं और ऋषि ने उस कन्या को शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। शिक्षा पाते पाते वह कन्या बड़ी महान बनी। और विद्या में बहुत ऊँची सफलता प्राप्त की। वह यज्ञ और कर्मकाण्ड में प्रकाण्ड हो गई, वह वेदों का हर समय स्वाध्याय करती थी। उस समय ऋषि ने अपने मन में सोचा, कि यह कन्या तो क्षत्रिय की है, परन्तु इसके गुणों को देखते है, तो ब्राह्मण कुल में जाने योग्य हैं । अब क्या करना चाहिए। ऋषिवर, यही नित्य प्रति विचारा करते थे।

मुनिवरों !आगे हमने सुना है कि कुछ काल के पश्चात वह कन्या युवा हो गई। जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा परिपक्व होता हैं, वह कन्या अपने ब्रह्मचर्य से परिपक्व थी। राजा अपनी धर्मपत्नी के कथनानुसार वहाँ से बहते हुए ऋषि से जा कर प्रार्थना की, कि भगवन !अब कन्या को गृह में ले जाना चाहते हैं। अब इसका संस्कार भी करना चाहिए अब इसका संस्कार करना चाहिए, अब मुझे नियुक्त कीजिए, कि मेरी कन्या कौन से गुणवाली है, किस वर्ण में इसका संस्कार करना चाहिए? अहा उस समय ऋषि ने कहा भई !तुम्हारी कन्या तो ऋषि कुल में जाने योग्य हैं, आगे तुम किसी के द्वारा इसका संस्कार करो, हमें कोई आपत्ति नही। राजा वहाँ से उस ब्रह्मचारिणी कन्या को लेकर राज गृह पंहुचे।

मुनिवरों !हमारे यहाँ यह परिपाटी है, कि जब ब्रह्मचारिणी या ब्रह्मचारी गुरुकुल से आए, तो माता पिता यजन और ब्रह्मभोज कर उनका स्वागत करें। मुनिवरों !इसी प्रकार माता पिता ने उस कन्या का यथाशक्ति स्वागत किया। स्वागत करने के पश्चात हमने ऋषि बाल्मीकि के कथनानुसार ऐसा सुना है कि पत्नी ने पति से कहा कि महाराज !अब तो हमारी कन्या युवा हो गई है, इसके संस्कार का कोई कार्य करो।

उस समय बेटा !महाराज नित्य प्रति वर के लिए भ्रमण करने लगे, भ्रमण करते करते पुलस्त्य ऋषि महाराज के पुत्र मनिचन्द्र के द्वार पर जा पंहुचे, मनिचन्द्र के एक पुत्र था, जो बाल्मीकि के कथनानुसार अड़तालीस वर्ष का आदित्य ब्रह्मचारी था। वह पर्जन्य ब्रह्मचारी, वेदों का महान, प्रकाण्ड पण्डित था। महाराज ने मनिचन्द ने निवेदन किया महाराज! मेरी कन्या को स्वीकार कीजिए, मैं तुम्हारे पुत्र से अपनी कन्या का संस्कार करना चाहता हूँ।

रावण विवाह

उस समय मनिचन्द ने कहा महाराज !हमारे ऐसे सौभाग्य कहाँ हैं, जो इतनी तेजस्वी कन्या, हमारे कुल में आए। उस समय बेटा !उस बालक वरुण ने और माता पिता ने उसके संस्कार को स्वीकार कर लिया। उस समय राजा मग्न होते हुए, अपने घर आ पंहुचे।

नक्षत्रों के अनुकूल समय नियुक्त किया गया। कुछ समय के पश्चात वह दिवस आ गया। मनिचन्द अपने पुत्र वरुण से बोले कि पुत्र !आदि ब्राह्मण जनों का समाज होना चाहिए, जिस कन्या का, जिस पुत्री का, जिस पुत्र का, वेद के विद्वानों में, नाना विद्वत मण्डल में संस्कार होता हैं उसका कार्य हमेशा पूर्ण हुआ करता हैं।

उस समय बेटा !नाना ऋषियों को निमन्त्रण दिया गया, निमन्त्रण के पश्चात विद्वत समाज वहाँ से नियुक्त हो, राजा महिदन्त के समक्ष आ पंहुचा। राजा महिदन्त ने देखा कि बड़ा विद्वत मण्डल है। राजा ने यथा शक्ति स्वागत किया। **ऋषियों की परिपाटी के अनुकूल, ब्रह्मचारिणी अपने पति का स्वयं सत्कार करने जा पंहुची। नाना मणियों से गुथी हुई, पुष्पमालाएँ तथा नाना प्रकार की मेवाएँ, उस कन्या ने उनके समक्ष नियुक्त**

की। उन्होंने वह स्वीकार कर लीं इस प्रकार बेटा !राजा ने अपने सम्बन्धियों का यथाशक्ति स्वागत किया। स्वागत के पश्चात, यथा स्थान पर विराजमान किया गया। अहा, बड़े आनंद पूर्वक सांयकाल कन्या के संस्कार का समय हो गया। बड़े आनन्द से वहाँ संस्कार होने लगा। बुद्धिमानों के वेदमन्त्र होने लगें, ब्रह्मचारी अपने वेद मन्त्रों का गान गा रहा था, ब्रह्मचारिणी अपने वेदमन्त्र का गान गा रही थी। भिन्न भिन्न स्थान पर वेदों के गान गाए जा रहे थे, बड़ी आशानंदी आनन्द से बेटा वह संस्कार समाप्त हो गया। वेद की मर्यादा के अनुकूल उन्होने अपने–अपने स्थान पर जा विश्राम किया

अगला दिवस आया, उस समय शरद वायु चल रही थी, और उसके कारण उस बालक के सम्बन्धी स्नान नही कर रहे थे। उस बालक ने कहा अरे, तुम स्नान क्यों नही कर रहे हो? उन्होंने कहा स्नान क्या करें, शरद वायु चल रही हैं

तो मुनिवरों !उस समय बाल ब्रह्मचारी ने, जो वेदों का ज्ञाता था, जो विज्ञान की मर्यादा जानता था, उसने प्रयत्न किया और कहा हे महान वायु देव !तुम हमारे कार्य में विध्न डाल रहे हो, कुछ समय के लिए शान्त हो जाओ। उस समय उस ब्रह्मचारी के संकल्पों द्वारा, वायु कुछ धीमी हो गई। सभी सम्बन्धियों ने स्नान किया। महानन्द, बेटा !तुम यह प्रश्न करोगे, कि उसने वायु को कैसे शान्त कर दिया? बेटा !उसने वह प्रयत्न किया, जिससे वायु का वेग शान्त हो गया। अहा, देखो, वायु में कुछ मंदी हो गई, यह मन के संकल्प का प्रभाव था। यह तो, महान विद्या का विषय है। किसी दूसरे स्थान में इसका उत्तर देंगें।

पूज्य महानन्द जीः अभी दे दीजिए, भगवन !

पूज्यपाद गुरुदेवः नही, भई !किसी द्वितीय स्थान में देंगें।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन् !जैसी आपकी इच्छा ।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !नाना सम्बन्धी स्नान कर अपने अपने स्थानों पर नियुक्त हो गएं । इसके पश्चात द्वितीय समय आया, और वहाँ सब अपने अपने गृह को जाने लगे, उस समय राजा महिदन्त ने यथाशक्ति सभी का स्वागत किया । जब कन्या जाने लगी, तो एक ने कहा अरे, भाई! देखो, यह पुत्र इतना योग्य था, परन्तु राजा महिदन्त ने अच्छी प्रकार स्वागत नही किया उस समय राजा महिदन्त व्याकुल होने लगे, उन्होंने व्याकुल हो कर कहा हे सम्बन्धियों! मैं क्या करूं? मेरा तो यह काल ही ऐसा हैं, कोई समय था जब चक्रव्रती राज्य था। अब तो जितना द्रव्य था, सब लंका चला गया । महाराजा कुबेर उसका स्वामी बन गया हैं। उस समय इन वार्ताओं को स्वीकार कर सबने अपने अपने स्थान की ओर प्रस्थान किया।

विद्या बल

उस बालक ने अपने गृह पंहुच कर सोचा, कि मेरे सम्बन्धी ने जो यह कहा है कि मेरी लंका को कुबेर ने विजय कर लिया है, तो आज मुझे कुबेर से लंका को विजय करना है। बुद्धिमान सर्वत्र पूज्य होता हैं, पुलस्त्य ऋषि महाराज का पौत्र था, इसीलिए वह जिस राष्ट्र में जाता था, वहाँ ही उसका स्वागत होता था। जो स्वागत में कुछ देता, तो ब्रह्मचारी उससे मांगते कि मुझे दस हजार सेना दो, जिससे मेरा काम बनें।

इस प्रकार प्रत्येक राज्य से दस दस हजार सेना एकत्र करके, उसने लंका पर हमला किया। और राजा कुबेर को जीत लिया। उस समय राजा कुबेर ने कहा था कि अरे, भाई !तुम मुझे क्यों विजय कर रहे हो? उस समय उस महान ब्रह्मचारी ने कहा था अरे, कुबेर !मैं तेरे राष्ट्र में शान्ति नही देख रहा हूँ।

जिस काल में, जिस राजा की प्रजा शान्त न हो, उस समय उस राजा को पद से गिरा देना धर्म हैं। और उसके स्थान पर शान्तिदायक आत्मज्ञानी को जो प्रजा को यथार्थ सुख शान्ति देने वाला हो, राजा बनाना चाहिए।

उस समय उस ब्रह्मचारी ने राजा कुबेर को लंका से पृथक कर दिया। वह अपने राष्ट्र में जहाँ का था, वहाँ ही जा पंहुचा। उस समय वह बालक वरुण राजा महिदन्त के सम्मुख जा पंहुचा, और बोला महाराज !मैंने आपकी लंका को विजय कर लिया है। आप अपनी लंका को स्वीकार कीजिए। उस समय राजा महिदन्त ने कहा कि हे ब्रह्मचारी !लंका को तुमने विजय किया हैं, मुझे स्वीकार है। परन्तु स्वीकार करके, मैंने यह लंका अपनी कन्या के दहेज में तुम्हें अर्पण कर दी।

तो मुनिवरों !वहाँ सब राजा नियुक्त किए गएं और वहाँ राजा उस बालक को नियुक्त किया गया। उस समय राजाओं ने, ऋषियों का समाज नियुक्त किया, और कहा कि भाई !यह वरुण बालक, लंका का स्वामी बना, इसका द्वितीय क्या नाम उच्चारण करेंगे? यह तो ब्रह्मचारी पद का नाम है, उस समय ऋषियों, आचार्यों, आदि ने उस बालक का नाम रावण नियुक्त कर दिया।

तो मुनिवरों !यह है हमारा वाक्य, तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, कि महाराजा !महिदन्त की कन्या का संस्कार, उस बालक से हुआ, जो ब्राह्मण के गुणों वाला था। आगे चल करके, चाहे कैसा ही गुण उसमें बन जाएं। यह है बेटा !तुम्हारे समक्ष प्रमाण। समय मिलेगा, तो किसी द्वितीय स्थान में और भी प्रमण देगें। इसके भिन्न भिन्न प्रमाण हैं। अब तो बेटा !हमारा व्याख्यान समाप्त होने वाला हैं

तो मुनिवरों !यह आज का हमारा व्याख्यान वर्ण व्यवस्था के ऊपर था, जो हमारे आर्य ऋषियों ने माना है। बुद्धिमानों का कर्तव्य है, कि यथार्थ वाक्य को अवश्य ही ग्रहण कर लेना चाहिए। अब हमारा व्याख्यान समाप्त हो गया। कल जैसा समय मिलेगा, उसके अनुसार व्याख्यान देगें।

पूज्य महानन्द जीः कल तो भगवन !आप वह व्याख्यान देगें, जिसकी आपसे प्रार्थना की थी।

पूज्यपाद गुरुदेवः हां, कल का कल देखा जाएगा। अच्छा

1962 03 08 कृष्ण और शुक्लपक्ष की व्याख्या

जीते रहो, देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष वेदों का मनोहर गान गा रहे थे। आज हम उन वेद मन्त्रों का पाठ कर रहे थे, जिसमें महान परमात्मा की निधि छिपी हुई है। आज हम उस परमात्मा का गुण गा रहे थे, जिस विधाता ने इस संसार को उत्पन्न किया है, और हमें इस महानता पर पहुँचा दिया है। आज मानव को उस परमात्मा के समक्ष पहुँचना चाहिए, जिसके लिए हम संसार में आए हैं। यदि हम परमात्मा के समक्ष पहुँचने का प्रयत्न न करेंगे, तो हमारा जीवन किसी प्रकर ऊँचा नहीं बनेगा।

आज हमारे वेदपाठ में कृष्ण नरो बड़ेसुन्दर शब्द आ रहे थे। देखो, !कृष्ण कहते हैं अन्धकार को। मुनिवरों ! हमारे यहाँ दो पक्ष माने गए हैं, एक कृष्णपक्ष, अन्धकार का पक्ष और शुक्लपक्ष, प्रकाश का पक्ष। इसी प्रकार मानव के समक्ष दो समस्याएं होती हैं। एक महान अन्धकार की रहती है और दूसरी उज्ज्वल रहने की रहती है। आज इस पर विचार करना चाहिए और उसी के अनुकूल अपना जीवन बनाना चाहिए। बेटा !जिस काल में मानव के समक्ष नाना आपत्तियाँ, नाना अज्ञान आ जाते हैं, तो वह उस मानव का कृष्ण पक्ष कहा जाता है।

आपत्ति काल में दृढ़ता

आज का हमारा वेदपाठ कह रहा था, कि मानव को आपत्ति काल में दृढ़ रहना चाहिए, और जिस काल में प्रकाशित हो जाओ, उस काल में दृढ़ रहना चाहिए। यदि आपत्तिकाल में अपनी मर्यादा को समाप्त कर दिया या जीवनचर्या को समाप्त कर दिया, तो मानव में कोई विशेषता न रहेगी। इसलिए मुनिवरों !जब नाना प्रकार की अपत्तियाँ, नाना प्रकार का अज्ञान आ जाए, तो हमें किसी प्रकार अशान्त नहीं होना चाहिए। अपने कर्तव्य पर

दृढ़ रहते हुए शान्ति से इस संसार सागर से पार होते चले जाएं। मुनिवरों !जब तक हम इस महानता पर नहीं पहुँचेंगे, तब तक हमारा जीवन किसी प्रकार ऊँचा नहीं बनेगा
जब मानव अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहता है तो एक समय वह आता है कि मानव परिपूर्ण हो जाता है और अपनी समस्याओं को पूर्ण कर लेता है। अपने जीवन को उच्च बना लेता है। महान शुक्लपक्ष हमारे सम्मुख आ जाता है। जिस प्रकार मुनिवरों !कृष्णपक्ष का चन्द्रमा अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहता हुआ शुक्ल पक्ष मे पूर्णिमा का चन्द्रमा परिपक्व हो जाता है और पूर्ण हो करके संसार में व्यापक हुआ करता है और अपने प्रकाश से उस महान अहिल्या रूपी रात्रि का भोग किया करता है और उस महानता को पहुँच जाता है जो वास्तविक है।
मुनिवरों !आज हमें उस पर विचार करना चाहिए, हमें अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहना चाहिए। जब तक हम अपने कर्तव्य पर दृढ़ नहीं रहेंगे, तब तक हम जीवन को कदापि भी ऊँचा नहीं बना पाएंगे, न राष्ट्र को और न किसी मानव को ऊँचा बना पाएगे।
देखो, बेटा !परमात्मा को भी कृष्ण कहते हैं, जो कृष्णो वेदो रुद्र ते जिसने यह काल बनाया है, जो कालों का भी काल माना गया है। बेटा !कृष्ण नाम तो योगियों का भी कहा जाता है, जो योगी षोडश कलाओं को जानने वाले है। परन्तु बेटा !यहाँ तो हम पक्षी का वर्णन कर रहे थे।
आज हमें महानन्द जी से संकेत मिलता है कि आधुनिक समय तो अशान्ति में जा रहा है। राष्ट्र भी अशान्त है, राजा भी अशान्त है, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या अशान्त है। जहाँ अशान्ति रहती है, वहाँ मानव का उत्थान किसी प्रकार नहीं हुआ करता। जिस काल में मानव को आत्मिक शान्ति मिल जाती है, उस काल में मानव उच्च हो जाता है। उसका उत्थान हो जाता है, अन्यथा बेटा !कदापि नहीं।
पूज्य महानन्द जीः आत्मिक शान्ति के लिए साधन क्या है?
पूज्यपाद गुरुदेव –बेटा !ज्ञान का मार्ग ही ऐसा है, जिसको ग्रहण करने से आत्मिक शान्ति मिलती है।
पूज्य महानन्द जीः वह ज्ञान क्या पदार्थ है, और कहाँ से आता है?
पूज्यपाद गुरुदेव –अरे, ज्ञान, वेद की विद्या कहाँ से आती है? बेटा !वेद की विद्या हमें परमात्मा ने प्रकाशित की है।
पूज्य महानन्द जीः परमात्मा ने यह प्रकाश किस लिए प्रकाशित किया?
पूज्यपाद गुरुदेव बेटा !अपने पुत्र आत्मा के लिए, उस विधाता ने वेद की विद्या को प्रकाशित किया, जिसको पाकर मानव अपने जीवन को ऊँचा बना लेता है। उस स्थिति को प्राप्त कर लेता है, जो वास्तविक है। उस स्थिति को प्राप्त कर परमात्मा में रमण करने वाला बन जाता है।
मुनिवरों !एक समय ज्ञान के विशेषण में बालक नचिकेता ने यमाचार्य से कहा था भगवन् !आप मुझे उस विद्या को ग्रहण कराओ, जिस विद्या को पा करके, इस संसार सागर से पार हो जाऊं। मुनिवरों !उस समय आचार्य ने कहा हे बेटा, नचिकेता !तुम इस विद्या को प्राप्त न करो। संसार के नाना प्रकार के सुखों को ले लो, जिनमें तुम्हें आनन्द मिलेगा। इस विद्या को लेकर क्या करोगे? उस समय उस महान् आठ वर्षीय ब्रह्मचारी नचिकेता बालक ने कहा था हे ऋषिवर !हे गुरुदेव !आप मुझे उस विद्या का निर्देश करा रहे हो, उन पदार्थों को दे रहे हो, जो पदार्थ नष्ट होने वाले हैं। विधाता !मुझे तो वह विद्या दो, जो कदापि नष्ट नहीं होती।
तो मुनिवरों !आज मानव को इस विद्या को ग्रहण करना है, जिससे संसार सागर से पार हो जाएं। यह संसार रूपी सागर परमात्मा का बनाया हुआ है, आज इससे हमें पार होना है, जब तक हम इस संसार से पार न होंगे, तब तक हमारा जीवन कदापि ऊँचा नहीं बनेगा। आज मानव नाना प्रकार की भ्रान्तियों में घिरा हुआ बैठा है,

दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है, जो मानव दूसरों को हानि पहुँचाता है उसकी स्वयं हानि हो जाती है, हानि का पुतला बन करके संसार में नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

आज मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत हो, दूसरों की निन्दा में लगा रहता है, दूसरों की त्रुटियों को ग्रहण करता है। अरे, मानव !आज तू दूसरों की त्रुटियों को ग्रहण क्यों कर रहा है? अरे, इनकी अच्छाईयों को ग्रहण कर, तुम्हारे द्वार अच्छाइयों का ढेर लग जाएगा, तुम अच्छाईयों के पुतले बन जाओगे।

यह है बेटा !हमारा आज का व्याख्यान, जो प्रारम्भ हो रहा था। हम उच्चारण कर रहे थे कि कृष्ण कहते हैं अन्धकार को। कृष्ण पक्ष आता है तो चन्द्रमा धीरे धीरे समाप्त होने लगता है। और आगे चलकर एक समय आता है, कि बेटा !चन्द्रमा का एक अंकुर भी नहीं रहता, अन्धकार में लय हो जाता है। परन्तु देखो, अमावस्या के पश्चात् द्वितीया आती है, उस समय चन्द्रमा धीरे धीरे बढ़ता है और धीरे धीरे उन्नत हो करके, अपना जीवन महान् बना लेता है और एक समय वह आता है जब वह पूर्ण परिपक्व हो जाता है। अन्धकार प्रकाश में लय हो जाता है, शुक्ल पक्ष हो जाता है। इसी प्रकार मानव को अपने धर्म पर दृढ़ रहना चाहिए और मर्यादा में चलना चाहिए। आपत्ति आने पर भी उसे सहना चाहिए। सहन करते रहे, तो उसके उज्ज्वल होने का समय अवश्य आ जाएगा।

भगवान राम की मर्यादा

मुनिवरों !हम उस काल को देख चुके हैं, जिस काल में राजा, महाराजाओं पर महान् आपत्तियाँ आती थीं। उन आपत्तियों को सहन करने के कारण उनका प्रकाश आज तक संसार में चला आ रहा है। महाराज राम के द्वारा कितनी आपत्तियाँ आई, परन्तु वह उन सबमें दृढ़ रहे और अन्त में बेटा !रावण तक को विजय किया। धर्म पारायण वह कैसे थे, कि जब लंका से चलने लगे, तो उस समय लंका का स्वामी विभीषण को नियुक्त किया। विभीषण ने चलते समय राम को कुछ उपहार देना चाहा। उस समय राम ने लक्ष्मण से कहा, हे विधाता !यह मुझे कुछ उपहार देना चाहते हैं। तुम्हारी क्या इच्छा है। उस समय लक्ष्मण ने कहा, हे राम !आप चाहें तो ग्रहण कर लीजिए। परन्तु न मर्यादा यह कहती है और न राजधर्म यह कहता है कि जिसको आपने दान में दे दिया हो और उस दान से आप कुछ लेवें, यह आपके योग्य कदापि नही राम ने लक्ष्मण के कथनानुसार उस उपहार को विभीषण के अर्पण कर दिया और कहा, यह न मर्यादा कहती है न धर्म ही कहता है। मैंने विजय करके तुम्हें इसका राजा बनाया है। अपने राज्य का पालन करो। यह ही तुम्हारा सबसे विशेष कर्त्तव्य है।

तो मुनिवरों !राजा राम ने मर्यादा में बन्ध करके ऐसा किया। आज मानव को विचारना चाहिए कि जब मानव मर्यादा में दृढ़ रहता है, तब उसका उत्थान अवश्य हो जाता है। परन्तु जब मर्यादा तोड़ देता है, तो उसके विनाश का समय आ जाता है।

मुनिवरों !व्याख्यान देते देते कहाँ पहुँच गए। बेटा !देखो, !शुक्लपक्ष का वर्णन कर रहे थे। हमें सोचना चाहिए, यदि हम शुक्लपक्ष का वर्णन कर रहे थे, तो हमें सोचना चाहिए कि हम शुक्ल पक्ष तुल्य हो जाएं, हमारे हृदय में प्रकाश हो जाए या देखो, विद्या का, लक्ष्मी का प्रकाश हमारे गृह में हो जाए, तो हमें अभिमान में नहीं आना है, हमें दृढ़ रहना चाहिए और उस आपत्तिकाल को भी विचारना चाहिए जो हम पर आ चुका था। जो इस महान अन्धकार में आ जाता है, इस माया में लिप्त हो जाता है, वह अपने जीवन को नष्ट कर देता है। अन्त में उस मानव की सब सम्पत्ति समाप्त हो जाती है। जो मानव मर्यादा में बन्ध कर अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहता है उसका जीवन परम्परा से बना रहता है और अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है।

तो मुनिवरों !आज हमें विचारना चाहिए। क्या करें बेटा !महानन्द जी के कथनानुसार व्याकुल होना पड़ता है। इन्होंने कहा है महाराजा शिव के पुत्र गणेश को आज के संसार ने हाथी का सिर नियुक्त किया है। यह कितना

अज्ञान युक्त है अरे, यह संसार कितने अन्धकार में पहुँच गया है। इससे तो प्रतीत होता है कि संसार स्वार्थ में बंधा जा रहा है। अरे, निस्वार्थ होकर ही धर्म की मर्यादा नियुक्त होती है। जब स्वार्थ आ जाता है तो उस समय धर्म, मर्यादा समाप्त हो जाती है।

यज्ञशेष से स्वर्णिम नेवला

मुनिवरों !देखो, !त्रेता काल में जिस समय रघु राज्य किया करते थे, एक समय वृष्टि न हुई। अकाल पड़ गया, पृथ्वी विष उगलने लगी। सब व्याकुल हो गए। उस समय बेटा !महर्षि उदांग ऋषि ने नाना सामग्री, नाना साकल्य एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसा सुना जाता है कि उन्होंने वह साकल्य लगभग पन्द्रह दिवस एकत्रित किया। उस साकल्य से उन्होंने उस महान् वन में एक विशाल यज्ञ किया। यज्ञ करते ही देवता प्रसन्न हो गए और फलस्वरूप उस समय वृष्टि प्रारम्भ हो गई।

मुनिवरों !यज्ञ के स्थान पर एक नेवला रहता था। उस नेवले ने यज्ञ शेष में जाकर स्नान किया। उस यज्ञ शेष से केवल आधे शरीर का स्नान हुआ। सुना जाता है उसका यह आधा शरीर स्वर्ण बन गया। ऐसा सुना जाता है कि उसके पश्चात् वह नेवला ऐसे ही चलता रहा और प्रतीक्षा करने लगा कि किसी अन्य स्थान में ऐसा यज्ञ हो, कि जिसके यज्ञ शेष में स्नान करने से, शेष आधा शरीर भी स्वर्ण का ही हो जाए। नेवला उसी प्रकार चलता रहा, धीरे धीरे द्वापर आ गया।

द्वापर काल में, मुनिवरों !देखो, !महाराजा युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ में राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञ में सब राज्य सम्पत्ति लगा दी गई। ऐसा सुन्दर यज्ञ था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उस समय वह नेवला भी उस यज्ञशाला में जा पहुँचा और यज्ञ शेष में स्नान जा किया। किन्तु उसका शरीर स्वर्ण का न हुआ। नेवला व्याकुल होने लगा। उस समय महाराजा युधिष्ठिर ने नेवले से कहा, अरे, नेवले !तुम शोक युक्त क्यों हो रहे हो? उस समय नेवले ने कहा, मैं शोकयुक्त इसलिए हो रहा हूँ, क्योंकि देखो, महाराज !एक समय उदांग ऋषि महाराज ने यज्ञ किया था, जो सूक्ष्म सा यज्ञ था, परन्तु यज्ञ के होने से वृष्टि हो गई थी, और यज्ञ के यज्ञशेष में स्नान करने से आधे शरीर का ही स्नान हुआ, परन्तु वह स्वर्ण का बन गया। हे महाराज !आपने इतना बड़ा यज्ञ किया है, मैंने इस यज्ञशेष में भी स्नान किया परन्तु मेरा शेष आधा शरीर स्वर्ण का न हुआ। इसका क्या कारण है? उस यज्ञ में क्या विशेषता थी? मैं इसलिए व्याकुल हो रहा हूँ। यह कैसा यज्ञ जिससे मेरा आधा शरीर स्वर्ण का न बना?

यह सुनकर महाराजा युधिष्ठिर व्याकुल होने लगे। उनकी व्याकुलता देखकर नेवले ने महाराजा युधिष्ठिर से कहा, हे महाराजा !आप क्यों व्याकुल हो रहे हो? महाराजा युधिष्ठिर ने कहा मैं इसलिए व्याकुल हो रहा हूँ कि मैंने इतना महान यज्ञ किया परन्तु इसका कोई महत्व नहीं, क्योंकि आपका आधा शरीर सोने का होने से रह गया। यह यज्ञ तो न होने के तुल्य है। उस समय महाराजा कृष्ण ने, जो षोडश कलाओं को जानने वाले योगी थे, कहा अरे, नेवले !शान्त रहो !आगे तो वह समय आ रहा है जब इतना भी नहीं रहेगा। आगे अन्धकार का काल आ रहा है जब संसार में नाना प्रकार की अज्ञानता छा जाएगी। मानव के जीवन का कोई विकास न होगा। उस समय तुम्हारा यह आधा शरीर जो स्वर्ण का हो गया है, यह भी इस प्रकार का न रहेगा। आगे तो ऐसा समय आने वाला है कि शुभ कार्यों के लिए भी नाना प्रकार के सम्प्रदाय चल जाएंगे।

मुनिवरों !महाराज कृष्ण ने जो कुछ कहा वह होकर रहा। क्या करें, बेटा !महानन्द जी के कथनानुसार, जैसा इन्होंने कई स्थानों पर वर्णन किया है, आधुनिक काल में तो कोई अपने को ब्रह्म माने बैठा है, कोई कहता है कर्म करने की आवश्यकता नहीं। कोई अपने को कृष्ण की आत्मा कह रहा है, कोई अपने को मोक्ष आत्मा कह रहा है। परन्तु यह वाक्य संसार को भ्रम में डाल रहा है। आज मानव को प्रकाश में पहुँचना है और अपने

जीवन का कुछ महत्व संसार को देना है। हमारे शरीरों से तो क्या, बुद्धिमानों से संसार को कुछ मिलेगा। बुद्धिमान वह होता है जिसके रोम रोम से सब इन्द्रियों से अमृत की धारा बहती हो। उस धारा को जो मानव ग्रहण करता है, वह अमृत तुल्य हो जाता है। बेटा !वह कौन सी धारा है? वह वेद की धारा है। जब वेद का ज्ञान मानव के समक्ष रहता है, उस काल में वह संसार अन्धकार में नहीं जाया करता है।

भगवान कृष्ण की सोलह हजार गोपियों का रहस्य

महानन्द जी के कथनानुसार आज का मानव कह रहा है कि महाराजा !कृष्ण के तो सोलह हजार रानियाँ थीं। मुनिवरो !मानव ने इस रहस्य को समझा नहीं, कि वह सोलह हजार गोपियाँ जिनके साथ महाराजा कृष्ण विहार किया करते थे, वे क्या थीं? ऐसा कहा जाता है कि महाराजा !कृष्ण सोलह हजार वेद की ऋचाएँ जानते थे, और उनके साथ विनोद किया करते थे। एकान्त स्थान में विराजमान हो करके वेद की विद्या को अच्छी प्रकार विचारा करते थे। उन गोपिकाओं, ऋचाओं से बेटा !विनोद किया करते थे, जिससे उन्होंने संसार के ज्ञान विज्ञान को जाना। मुनिवरों !कहाँ तक यह वार्त्ता उच्चारण करें।

आज तो हमारा केवल यही व्याख्यान प्रारम्भ हो रहा है, कि महाराजा !कृष्ण ने नेवले से कहा था, हे नेवले ! यह जो हमारा ज्ञान है, आगे चलकर लुप्त हो जाएगा, कुछ काल आगे चलकर फिर अन्त हो जाएगा। जिस काल में दोनों प्रकार का विज्ञान होता है, उस काल का वास्तव में उत्थान हो जाता है। बेटा !दो प्रकार का विज्ञान कौन सा है? आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान । जब यह दोनों विज्ञान साथ साथ चलते हैं, तो बेटा !वह युग महान कहा जाता है। उस काल में मानव का उत्थान होता है, उस काल में मानव सब वार्त्ताओं का जानने वाला होता है।

सोलह कलाधारी भगवान कृष्ण

मुनिवरों !नेवले ने महाराजा कृष्ण से प्रश्न किया, हे महाराज !ऐसा सुना जाता है कि आप षोडश कलाओं के ज्ञाता हैं। आप इन षोडश कलाओं को कैसे जानते हैं? उस समय, मुनिवरों !महाराजा कृष्ण ने षोडश कलाओं का वर्णन किया कि प्रत्येक मानव षोडश कलाओं का बना हुआ है, जो इन कलाओं को जान लेता है, वह सोलह कलाधारी हो जाता है।

देखो, मुनिवरों !मानव के हृदय में मानव के शरीर में बेटा !पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्म इन्द्रियाँ होती हैं, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार होते हैं और देखो, मधुवाता होता है इन सबको मिलाकर सोलह कलाएं होती हैं। जो इन्हें जान लेता है, वह बेटा !महान योगी बन जाता है। महाराजा कृष्ण प्रत्येक इन्द्रिय के विषय को अच्छी प्रकार जानते थे। जानने के नाते उन्हें सोलह कलाधारी कहा जाता था।

मुनिवरों !आज हमें विचारना चाहिए, कि वेद की विद्या क्या है? वेद की विद्या से मानव का उत्थान कैसे होता है? महानन्द जी के कथनानुसार आज का मानव बड़े अन्धकार में चला जा रहा है। आज मानव का विकास उसी स्थान में होगा जब वेद का प्रसार होगा, वेद की विद्या मानव के समक्ष होगी। आध्यात्मिक विद्या और भौतिक विद्या जब दोनों मानव के समक्ष होंगी, तो मानव का वास्तविक उत्थान हो जाएगा। जिस काल में दोनों का प्रचार और ज्ञान होता है, उस काल को राम राज्य कहा जाता है।

कल महानन्द जी ने प्रश्न किया कि हमारे, आपके वाक्य मृत मण्डल में क्यों जाते हैं? यह क्या दशा है जो इस प्रकार आपत्ति काल भोगना पड़ा है? परन्तु आज भी हम इसका उत्तर न दे सके और व्याख्यान देते देते बहुत दूर चले गए। हम उच्चारण कर रहे थे, कि मानव को अपने कार्यों में दृढ़ रहना चाहिए। जो मानव जैसा करता है, वैसा ही भोगता है। बहुत पूर्व काल में हमने जो कर्म किए हैं, आज उन्हीं का फल भोगना पड़ रहा

है। इसमें कुछ भी असत्य और न इसमें कोई भ्रान्ति है।

पूज्य महानन्द जीः आपके व्याख्यान तो यथार्थ होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु भगवन् !आधुनिक काल में ऐसे व्यक्ति हैं, जो नाना प्रकार की विद्याओं को अच्छी प्रकार जानते नहीं और न वेदों का स्वाध्याय ही करते हैं। उनके हृदय में नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ, नाना प्रकार की अशुद्धियाँ रहती हैं इसलिए उनका निर्णय करना आपका कर्त्तव्य है।

पूज्यपाद गुरुदेव –महानन्द जी !जिसके द्वारा यथार्थता न हो, जो यथार्थ कार्यों को भी यथार्थ न मान रहा हो, बेटा !वह मानव कदापि नहीं मानेगा। वह तो अन्धकार में पहुँचा हुआ है।

पूज्य महानन्द जीः गुरुजी !आपने किसी स्थान पर कहा था कि आत्मा परमात्मा भिन्न भिन्न पदार्थ हैं, परन्तु आधुनिक काल में कुछ व्यक्तियों का सिद्धान्त, कि आत्मा परमात्मा एक ही है। सबसे पूर्व तो यह ही भ्रान्ति का वाक्य है। महर्षि व्यास ने भी ऐसा ही माना है परन्तु आप इसको इस प्रकार क्यों मान रहे हो? हम आपके वाक्यों को सत्य क्यों मान लें?

पूज्यपाद गुरुदेव –हमारे वाक्यों को सत्य न मानो इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं, परन्तु हम तो वही व्याख्यान उच्चारण करेंगे, जो हमें सत्य प्रतीत देते हैं, और वेदों के अनुकूल हैं। महानन्द जी !महर्षि व्यास ने ऐसा कदापि नहीं कहा, बेटा !जैसा महाराजा कृष्ण ने नेवले से कहा था कि आगे वह काल आ रहा है जब संसार में नाना प्रकार की अज्ञानता छा जाएगी, तो हो सकता है आधुनिक काल में ऐसा मान लिया हो, यह हम नहीं कह सकते। यह हमारा सिद्धान्त नहीं, आदि आदि ऋषियों ने ऐसा ही वर्णन किया है। महाराजा कृष्ण के द्वापर काल तक तो हमने देखा है कि सब दार्शनिकों ने और सब ऋषियों ने आत्मा परमात्मा को पृथक पृथक ही माना है। आपत्तिकाल होने के नाते हमें प्रतीत नहीं, इस कलियुग में क्या हुआ, क्या न हुआ। इसमें आत्मा परमात्मा को एक मान लिया, या न माना। यह बेटा !अपने अपने मार्ग हैं। इनसे हमें कोई अभिप्राय नहीं, हमें तो बेटा !परमात्मा की, उस विद्या से अभिप्राय है, जो परमात्मा ने हम बालकों के लिए दी है। यह विद्या है वेद, जिसको पाने से मानव का विकास होता है। बेटा !हम यह नहीं कहते और न किसी काल में कहा है कि हमारे व्याख्यान सत्य हैं। हमने तो यह कहा है कि जो तुम्हें यथार्थ प्रतीत हो उसे ग्रहण कर लो और जो यथार्थ न लगे उसे त्याग दो। इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं और न किसी बुद्धिमान को होनी चाहिए। हमने तो जैसा पाया है और जैसी हमारी विद्या है उसके अनुकूल नित्यप्रति व्याख्यान देते रहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !यह तो सत्य है, परन्तु आप तो वार्त्ता को दूर ले जाते हैं। हमने जो आपसे प्रश्न किया था, उसका आपने कोई उत्तर नहीं दिया। आप तो एक ही वार्त्ता बहुत ऊँचे और आगे ले जाते हैं। आपको तो समय व्यतीत करना है।

पूज्यपाद गुरुदेवः)हास्य के साथ (देखो, भाई !यह कैसे मूर्खों वाले प्रश्न कर रहा है

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन् !कृपा कीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अभी अभी हमारा एक महान वाक्य चल रहा था, वह मध्य में ही रह गया। महानन्द जी के प्रश्नों का उत्तर तो हम कल देंगे। हम उच्चारण कर रहे थे कि महाराज कृष्ण ने नेवले से कहा कि यह संसार तो अधोगति को जा रहा है। इस संसार की गति को न देखो, आज तुम शान्त होकर, उस महान गान को गाओ, जिससे तुम्हारा वास्तविक विकास हो। मुनिवरों !आज मानव यह ही मान बैठा है, कि वास्तव में नेवले का शरीर स्वर्ण का हो गया था। बेटा !उसका शरीर स्वर्ण का नहीं हुआ था। यह तो एक वैज्ञानिक वार्त्ता है। नेवले ने कहा था कि जब मैंने महान उस यज्ञशेष को पाया तो जहाँ तक उसका अंश पहुँचा, वहाँ तक मेरा हृदय इतना पवित्र बन गया, कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। महाराज युधिष्ठिर के यज्ञ

शेष को भी मैंने ग्रहण किया, परन्तु इसमें मुझे कोई आनन्द नहीं आया।

युग काल का निर्धारण

उस समय मुनिवरों !महाराजा कृष्ण ने नेवले से कहा था, हे नेवले !तुम कैसी वार्ता उच्चारण कर रहे हो? तुम्हारा वाक्य महान है परन्तु अगला काल तो और व्याकुल होने को आ रहा है। उस समय नेवले ने कहा, हे योगेश्वर !आप तो षोडश कलाओं के ज्ञाता हैं, यह सतोयुग क्या पदार्थ है?

उस समय महाराजा कृष्ण ने कहा था, सतोयुग उस काल को कहते हैं जिस काल में वेद की विद्या होती है। प्रत्येक मानव निर्द्वन्द्व रहता है, राग, द्वेष किसी से नहीं रहता। जिस काल में धर्म के चारों चरण हों उसे सतोयुग कहते हैं। जिस काल में धर्म का एक पद समाप्त हो जाता है उसको हम त्रेता कहा करते हैं। जिस काल में अग्नि प्रचण्ड हो, परन्तु कुछ सूक्ष्म हो। इसके पश्चात द्वापर आ जाता है जिस काल में देव और दैत्यों की संख्या एक तुल्य हो जाती है, धर्म के दो चरण शेष रह जाते हैं, उसे द्वापर कहते हैं। जिस काल में धर्म की मर्यादा वृद्ध होने लगती है, जैसे मानव का बाल्य काल, युवा और मध्यम और उसके पश्चात् वृद्धपन आता है, जिसमें आवरण ही शेष रह जाते हैं, इसी प्रकार यह कलियुग है। जिसमें मर्यादा का केवल एक पद ही रह जाता है और अधर्म की मर्यादा बहुत अधिक होती है। रावण के पुत्र नारायन्तक ने भी इसकी ऐसी ही व्याख्या की है। जिस काल में भौतिकता से ही कार्य होने लगता है, कालों से ही सब कार्य होने लगता है उस काल को कलियुग कहते हैं।

राजा रावण के अपूर्ण कार्य

यह नहीं कि सतोयुग, त्रेता और द्वापर में कलों से कार्य नहीं होता था। रावण के राष्ट्र में इतना बड़ा विज्ञान था, कि रावण का पुत्र नारायन्तक अपने यन्त्रों द्वारा चन्द्रलोक तक पहुँच गए थे। राजा रावण इतना बड़ा वैज्ञानिक था, जिसका कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। मुनिवरों !जब राजा रावण समाप्त होने लगा और जब उसके अन्तिम श्वास चल रहे थे, तो राजा राम से कहा, हे राम !अब तो मैं मृत्यु को प्राप्त हो रहा हूँ, परन्तु मेरे दो चार ऐसे कार्य थे, जिनको मैं करने वाला था। एक तो यह था कि अग्नि में जो धुआं उठता है यह न रहे। दूसरा यह था, कि चन्द्रमा में आने जाने का मार्ग बना दूं और तीसरा यह था कि काल को अपने वश में कर लूं । परन्तु यह भी मेरे वश में न हो सका। चौथा यह था कि पृथ्वी के नीचे अतल और वितल लोक हैं उनको जानूं। जल में जो नाना दोष हैं, इन्हें भी यन्त्रों द्वारा खत्म करना चाहता था, परन्तु न कर सका, अब तो मेरा अन्तिम समय आ गया। भगवन् !मैंने चन्द्र लोक को अच्छी प्रकार पाया है। मेरे राष्ट्र में यातायात बड़ा अच्छा है। विमान आदि भी अधिक हैं। मेरे राष्ट्र में वैज्ञानिक यन्त्र भी आपने देखे होंगे, अब तो सब समाप्त हो गए हैं। उस समय राम ने कहा, भाई !अब तो आपका अन्तिम समय होने वाला है, यह कोई भी कार्य आपका पूर्ण न हो सकेंगा।

मुनिवरों !आधुनिक काल का विज्ञान उतनी गहराई तक नहीं पहुँचा है, जैसे हमें महानन्द जी के वाक्यों से प्रतीत होता है। उन दिनों भौतिक विज्ञान इतना प्रबल था कि सब कार्य यन्त्रों द्वारा होता था। यदि हम उसी को बेटा !कलियुग मान लें तो यह वाक्य कदापि सत्य नहीं बैठता। यथार्थ यह है कि कलियुग नाम अज्ञान का है। जिस काल में अज्ञान होता है, उस काल को कलियुग कहा जाता है। जिस प्रकार मानव की चार अवस्थाएं होती हैं, बाल्यावस्था, युवावस्था, मध्यम अवस्था और वृद्धावस्था, वृद्धावस्था में मानव की बुद्धि नहीं रहती, वह क्लेशों में घिर जाता है, नाना प्रकार की अशान्ति उसके हृदय में छा जाती है, जिस प्रकार मानव की परमात्मा ने ये चार अवस्थाएं बनाई हैं, इसी प्रकार परमात्मा ने सृष्टि के ये चार गुण बनाए हैं। इनको चतुर्युगी कहते हैं। यह इसी प्रकार परिक्रमा करती रहती है, जैसे मानव की अवस्थाएं। सृष्टि के प्रारम्भ में

परमात्मा ने इन सबकी अवधि नियुक्त की है।

मुनिवरों !अभी अभी हमारा आदेश क्या चल रहा था? उस समय नेवले ने कहा, भगवन् !यह वाक्य तो आपका यथार्थ हो गया, परन्तु एक वार्त्ता और जानना चाहते हैं कि जब इस काल का नाम कलियुग है तो आपके काल को क्या कहा जाए, जब दुर्योधन इन पाण्डवों को नष्ट करना चाहता था? उस समय महाराजा कृष्ण ने कहा, हे नेवले !तुम्हारा यह वाक्य सत्य है परन्तु इसका तो यहाँ समाधान हो जाता है कि द्वापर के काल में देव और दैत्य दोनों तुल्य माने गए हैं, इसी प्रकार यहाँ आधी प्रजा एक दूसरे को नष्ट भ्रष्ट करने वाली तथा आधी परोपकार करने वाली हैं। उस समय नेवले ने कहा, महाराज !यदि आप दुर्योधन को दैत्य मानेंगे तो आपका वाक्य कदापि सत्य नहीं होगा। महाराज कृष्ण ने कहा अरे, नेवले !हम दुर्योधन को दैत्य नहीं मान रहे, परन्तु वह दैत्य इसलिए माना जा रहा है क्योंकि वह हमारी वार्त्ताओं को स्वीकार नहीं करता और अपने विधाताओं को नष्ट भ्रष्ट करना चाहता है। जो दूसरों को नष्ट करता है उसको दैत्य कहा जाता है, उसे धर्मात्मा कदापि नहीं कहा जाता है।

मुनिवरों !इन प्रश्नों को करने के पश्चात् नेवला अपने स्थान को जाने लगा। उस समय महाराजा कृष्ण ने कहा, हे महान नेवले !हे महान् ऋषि !आप अपने स्थान में जाकर परमात्मा का चिन्तन करो और यह चिन्तन न करो कि महाराजा युधिष्ठिर ने यज्ञ, कुछ न किया। अब इतना तो हो रहा है आगे वह काल आने वाला है जब यह सब कुछ भी न होगा। इन शान्तिदायक वार्त्ताओं को पा करके नेवला अपने स्थान पर चला गया। उस समय महाराजा युधिष्ठिर ने महाराज कृष्ण से कहा, मैंने यह यज्ञ कुछ नहीं किया। भगवन् !नेवला यहाँ से अशान्ति को प्राप्त होकर गया है। उस समय महाराजा कृष्ण ने कहा, हे महाराजा युधिष्ठिर !यह सब कुछ यथार्थ है, जो तुमने यह उच्चारण किया। परन्तु वह काल उनके साथ था, आज का काल हमारे साथ है। आधुनिक समय की नीति तो यह है कि जैसा समय आए, वैसा करो। उसी में मानव का विकास है। जब महाराजा कृष्ण ने ऐसा कहा तो महाराजा युधिष्ठिर शान्त हो गए।

तो मुनिवरों !जैसा हम कल व्याख्यान दे रहे थे, कि देव ऋषि नारद ने और भी आदि ऋषियों ने जो कुछ कहा वह यथार्थ ही कहा है। बहुत से मनुष्य तो कहते हैं कि भविष्य की वार्त्ता कही नहीं जा सकती, परन्तु ऋषियों ने भविष्य की वार्त्ता कैसे दी है? मुनिवरों !यह उन योगियों का अनुमान था, अनुमान मिथ्या भी हो सकता है। उन्होंने जो कुछ कहा है काल और मर्यादा के अनुकूल कहा है। परमात्मा ने जो काल, जो मर्यादा बनाई है, वह एक रस रहने वाली है। मानव की मर्यादा बदलने वाली है। मुनिवरों !उनका कोई न कोई वाक्य नष्ट हो सकता है। परन्तु मानव अपने अनुमान उच्चारण किया करता है।

मुनिवरों !महाराजा कृष्ण ने कलियुग की जो व्याख्या की है, वास्तव में वह यथार्थ है। परन्तु यह वाक्य निश्चय नहीं, कि उस काल में सब अज्ञानी रहते हैं। उस काल में बुद्धिमान भी रहते हैं, दार्शनिक भी रहते हैं। हर काल में हर प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यह अवश्य हो जाता है, कि किसी काल में धर्मात्मा अधिक बढ़ जाते हैं, तो किसी काल में दैत्य। तो मुनिवरों !देखो, यह है आज का हमारा आदेश। हम प्रारम्भ कर रहे थे, कि मानव के दो पक्ष हैं, कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष। एक अन्धकार का, दूसरा प्रकाश का । एक आपत्तिकाल है, दूसरा उज्ज्वल होने का। एक पुण्य उदय होने का, दूसरा पाप उदय होने का। पाप और पुण्य बेटा !हमारे अन्तःकरण में नियुक्त रहते हैं। जब मानव का पुण्य उदय होता है, तो मानव का विकास होता चला जाता है। जब मानव के समक्ष पाप आता है, तो वह अधोगति में चला जाता है। कर्मो के अनुकूल भोगना अनिवार्य हो जाता है।

मुनिवरों !कल हम जैसा महानन्द जी ने प्रश्न किया है, कर्मो के विषय में व्याख्यान देंगे, कि मानव कैसे कैसे कर्म करके, कहाँ का कहाँ भोगता फिरता है। अब हमारा यह व्याख्यान समाप्त हो गया है । आज के हमारे

व्याख्यानों का अभिप्राय है कि हर काल में हर प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। हर काल में देव और दैत्य रहते हैं। कोई भी काल हो मानव को दृढ़ रहने की आवश्यकता है। अब हमारा व्याख्यान समाप्त हो गया । कल समय मिलेगा तो द्वितीय व्याख्यान प्रारम्भ करेंगे। अब हमारा वेद पाठ होगा। इसके पश्चात् हमारी वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।)वेद पाठ(। रात्रि 2 बजे बी.सी .पार्क, सरोजनी नगर

1962 03 09 कर्मों की गति

जीते रहो !देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ । हमारा वेद पाठ प्रारम्भ हो रहा था । आज के प्रथम वेदमन्त्रों में परमात्मा की पूर्णता का वर्णन आ रहा था। परमात्मा इतना महान् और अलौकिक है कि मानव उसका पार नहीं पाता। वह मानव के हृदय में बैठा हुआ, अपनी यमपुरी को रचा रहा है। परमात्मा यमपुरी को क्यों रचा रहा है? उसका क्या मन्तव्य है?

बेटा, परमात्मा का मन्तव्य तो कोई नहीं केवल अपना कार्य पूर्ण कर रहा है। पूर्णता का मन्तव्य ले लो या कुछ उच्चारण कर दो, परन्तु हमने तो यही जाना है, कि परमात्मा हमारे हृदय में यमपुरी रचा रहा है। मुनिवरों !जो भी हम कर्म करते हैं, जैसा हमारा कर्म है, हमारे कर्मों का फल देने वाला है। जो परमात्मा हमारे पाप पुण्य कर्मों का फल देने वाला हो, न्याय करने वाला हो उसको बेटा !यम रूप से पुकारा जाता है।

यम

मुनिवरों !यम नाम तो वायु का भी है। वायु को यम क्यों कहते हैं? यम वायु कैसी होती है? बेटा !जब यह आत्मा इस सर्वांग शरीर को त्याग कर अन्तरिक्ष में जाता है, तो यह अपने सूक्ष्म शरीर द्वारा, उस यम नाम की वायु में रमण करता है। उस काल में बेटा !हम वायु को भी यम कहा करते हैं। परन्तु वास्तव में यहाँ परमात्मा का ही वर्णन आ रहा था, क्योंकि परमात्मा यम रूप धारण करके हमारे पाप पुण्य कर्मों का फल देने वाला है।

कर्म भोग की अनिवार्यता

आज हमारे हृदय में वह कौन सा स्थान है, जहाँ परमात्मा यह न्याय कर रहा है? आज हम विचारते हैं और यह उच्चारण करते हैं कि कोई स्थान नहीं, वह तो न्याय है। द्वितीय प्रश्न आता है कि जब कोई स्थान नहीं, तो परमात्मा न्याय कैसे करता है। आज यह एक बड़ा दार्शनिक विषय बन जाता है। आज मानव को विचारना चाहिए कि वह परमात्मा विभु है, तो वह कौन सा विभु है, जहाँ हमारे पाप पुण्य, कर्मों का फल दे रहा है? आज हमें वेदों के अनुकूल प्रतीत होता है कि वह परमात्मा हमारी आत्मा के समक्ष बैठा हुआ है। जो भी मानव कर्म करता है, उसके संस्कार, उसके अन्तःकरण में नियुक्त हो जाते हैं। जब मानव तुच्छ कर्म करने के लिए चलता है तो उस समय मानव को संकेत मिलता है, कि अरे, मानव !यह कुमार्ग है, , इस पर न जा। मानव उस कर्म को कर लेता है, तो बेटा !वही कर्म परमात्मा उसके अन्तःकरण में नियुक्त कर देता है। जो बेटा ! हमने किया है वह अन्तःकरण में विराजमान हो गया है, और वह हमें भोगना अनिवार्य है। उसको भोगे बिना हमारा कार्य न चलेगा।

महानन्द जी ने आज हमें एक संकेत किया है, और कई स्थानों में कहा है कि बहुत से मानव ऐसे हैं, जिन्होंने तपस्या करके तुच्छ कर्मों को समाप्त कर दिया है। परन्तु यह नहीं, यह वाक्य तुम्हारा विचित्र है। यह भी देखो, मानने वाला वाक्य बन जाता है। जैसा मानव ने कर्म किया है, उन्हें भोग करके, उसका अन्तःकरण शुद्ध बनेगा। जैसे आज प्रकाश हो रहा है, परन्तु वह प्रकाश उस काल तक रहेगा, जब तक उसमें प्रकाश देने वाले पदार्थ हैं। दीपक जल रहा है, परन्तु उसी स्थान तक प्रकाश देता रहेगा, जब तक उसमें वह पदार्थ है। जब

वह पदार्थ न होंगे, तो वह अपना प्रकाश देना समाप्त कर देगा। इसी प्रकार बेटा !हमारा अन्तःकरण है। जब तक अन्तःकरण में संस्कार हैं जब तक हम भोगते रहेंगे।

आज परमात्मा से जिज्ञासु कहता है कि हे परमात्मन् !मेरा हृदय प्रकाश दे रहा है, अब मैं इसमें कोई पदार्थ नियुक्त नहीं करूंगा, जिससे यह प्रकाश देता है। तो मुनिवरों !तब तक उस अन्तःकरण रूपी महान दीपक में कोई पदार्थ नहीं पड़ेगा, तो प्रकाश कदापि नही देगा भोगना भी नही पड़ेगा, जब इसमें नियुक्त करता है, तो भोगना भी अनिवार्य है। यह कैसा सुन्दर वाक्य हमारे समक्ष आ पहुँचा है। महानन्द जी ने हमसे एक स्थान में प्रश्न किया, कि सृष्टि के प्रारम्भ में मानव की आकृति ऐसी थी, जैसे भालू की।

मुनिवरों !आज का वेदमन्त्र तो यह कह रहा था, कि जब महान् सृष्टि प्रारम्भ होती है, तो उस समय जो विमुक्त आत्माएं होती हैं, जिन्हें पूर्वकाल का ज्ञान रहता है, वह आत्मा आ करके परमात्मा के नियमों के अनुकूल अपने महान शरीर को धारण कर लेती है। उनसे यह महान संसार बन जाता है। संसार की गति इस प्रकार की हो जाती है। यह व्याख्या हम अधिक न देंगे। यह विषय तो हमारा कल का है, अब तो हमारा यह वाक्य चल रहा था, कि मानव जैसा कर्म करता है, वैसा उसे भोगना अनिवार्य है। अन्तःकरण में उसके संस्कार नियुक्त रहते हैं परन्तु प्रतीत नहीं कि मानव का अन्तःकरण किस काल में जाग जाए, किस काल में समाप्त हो जाए। आज मानव को विचारना चाहिए कि हमने जो कर्म किया है, वह हमें भोगना अनिवार्य हैं इसलिए हमें शुभ कर्म करना चाहिए। जैसे बेटा !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने राजा जनक से कहा था, हे जनक !यह मन तो शान्त रहता ही नहीं, यह तो कार्य करता ही रहता है, इसलिए तुम मन को शुद्ध बनाओ। जिससे तुम्हारा जीवन महत्वदायक बन जाएगा।

शुभकर्मो से मन की स्थिरता

तो मुनिवरों !महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा था, कि मन में अच्छे संकल्प नियुक्त करो, मन अच्छे कार्यों में लग जाएगा। जब यह मन शुभ अशुभ कार्य करता ही रहेगा, तो इसे शुभ कार्यों में लगा दो। जब शुभ कार्यों में लग जाएगा, तो मन स्थिर हो जाता है। अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। जन्म जन्मान्तरों के संस्कार अन्तःकरण को शुद्ध कर, उस प्रभु से सम्बन्ध करा सकते हैं, जो परमात्मा विभु है जो पाप पुण्य कर्मों का फल देने वाला होता है। उस स्थान में, हम परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध कर सकेंगे, अन्यथा हमारे द्वारा परमात्मा से सम्बन्ध करने का कोई भी द्वितीय साधन नहीं। केवल एक ही साधन है कि आज मानव को अपने अन्तःकरण को पवित्र बनाना चाहिए। यह निश्चय है कि जैसा भी मानव कर्म करता है, वैसा ही भोगता है।

मुनिवरों !देखो, !महाराजा कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, अरे, अर्जुन !तुम किस काल की वार्ता उच्चारण कर रहे हो, यह तुम्हारे योग्य नहीं। यह काल तो तुम्हारे संग्राम करने का है। यह आत्मा तो समाप्त नहीं होती, तू कौन सी अज्ञानता में आ रहा है। जब यह आत्मा समाप्त ही नहीं होती, तो तू किसको नष्ट करेगा, सब आत्माएं विभु हैं। यह न जन्म लेती हैं न मृत्यु को प्राप्त होती है। यह आदेश पा करके अर्जुन ने प्रश्न किया, तो भगवन् !मैं यह जानना चाहता हूँ कि जब यह आत्मा समाप्त ही नहीं होती, तो इसे अज्ञानता में क्यों लगा रहे हो?उस समय योगेश्वर कृष्ण ने कहा अरे, अर्जुन !मानव का जैसा समय होता है वैसा उसे भोगना पड़ता है । समय के अनुकूल कर्म करना भी अनिवार्य है। अपने कर्तव्य को पहचाना ।

तो देखो, !आज मानव का कर्तव्य है कि समय के अनुकूल कार्य करे। शुभ वातावरण आए, शुभ वातावरण को भोगो। यदि समय अशुभ आ जाए, तो वहाँ भी शुद्ध भोगने की चेष्टा होनी चाहिए जैसा हमारा धर्म कहता है। उसके अनुकूल अपने जीवन को अवश्य ऊँचा बना लेना चाहिए। तो यह है बेटा !हमारा आज का आदेश जो

प्रारम्भ हो रहा था

गुरुदेव का पूर्व कर्म

महानन्द जी का कई समय का प्रश्न आज हमारे कण्ठ आ गया है। हम इनके प्रश्नों का उत्तर देने का अवश्य प्रयत्न करेंगे। जैसा भी हमारे समक्ष हुआ है। उसका उत्तर देने का अवश्य प्रयत्न करेंगे। आज कर्मों के विषय में ही इनका प्रश्न है। यह कर्म बड़ा प्रबल है। मुनिवरों !देखो, आज कर्म गति इतनी महान मानी गई है कि जो कर्म हमने लाखों वर्ष पूर्व किया, आज हम उसको भोग रहे हैं। हमारे कर्मों का भोग है। प्रत्येक मानव का भोग होता है, और वह अपने कर्मों को अवश्य भोगा करता है।

मुनिवरों !हमारे वेद मन्त्र का क्या मन्तव्य था? वेद गान कह रहा था कि मानव को अपने जीवन का विकास करना चाहिए। आध्यात्मिक विद्या पर अपनी दृष्टि पहुँचानी चाहिए। आध्यात्मिक विद्या क्या है? आध्यात्मिक विज्ञान क्या है? जिन्होंने आध्यात्मिक विद्या का अनुभव किया है उनका अनुभव लो परन्तु आज आध्यात्मिक विद्या का उत्थान करो।

आज मुनिवरों !महानन्द जी से नाना प्रकार का संकेत मिल रहा है, आधुनिक काल में बड़े बड़े यन्त्र बन रहे हैं। भौतिक विज्ञान बहुत प्रबल हो रहा है। आध्यात्मिक विज्ञान समाप्त होता जा रहा है। भौतिक विज्ञान की प्रबलता से कोई महान लाभ नहीं। इसका तो केवल संसार को विनाश को प्राप्त कराना है और कोई मन्तव्य नहीं।

महाराजा अंबरीक

मुनिवरों !देखो, आज तो कोई भी यन्त्र स्थिर नहीं है। आज वह हमारे द्वापर का क्या वाक्य है? बेटा !जिस समय महाराजा अम्बरीक, जो द्वितीय राष्ट्र के राजा थे, परन्तु वह भी महाभारत का संग्राम देखने आ पहुँचे। उस समय उन्होंने महाराज कृष्ण से सम्बन्ध स्थापित किया। महाराजा कृष्ण ने पूछा, भगवन् !आप कहाँ को विराज रहे हैं? उस समय अम्बरीक ने कहा, मैं तो महाभारत का संग्राम देखना चाहता हूँ।

तुम संग्राम देखना ही चाहते हो या संग्राम भी करोगे?

महाराज !मैं संग्राम भी अवश्य करूंगा, यदि अवसर मिल गया।

तो तुम्हारा अवसर कौन सा है?

जिस पक्ष में हानि होगी, वही मेरा पक्ष होगा। और वही मेरा अवसर होगा।

अरे, तुम्हारे द्वारा क्या प्रमाण है, कि तुम हानि वाले पक्ष में संग्राम करोगे?

महाराज !मैंने अपने जीवन में और मेरे एक वैज्ञानिक ने भी तीन यन्त्रों की खोज की है। एक यन्त्र ऐसा है कि एक यन्त्र के प्रहार से, दोनों पक्षों की सेना समाप्त कर, वह यन्त्र मेरे समक्ष वापस आ जाएगा।

उस समय महाराजा कृष्ण ने अर्जुन से कहा –अरे, भाई !यह तो संग्राम न होने देगा। हमें क्या करना चाहिए? उस समय मुनिवरों !महाराजा कृष्ण ने बड़े नीतिज्ञ होने के नाते कहा, जब तुम इतने बड़े बलवान हो, इतने बड़े वैज्ञानिक हो, तो तुम दान कितना दे सकते हो?

उस समय उसने कहा जितना भी आप आज्ञा करेंगे, वह ही मैं दान के लिए उद्यत हो जाऊंगा। महाराजा कृष्ण ने कहा तो भाई, हमें दान देना है, तो अपने सिर का दान दे दो।

उस समय अम्बरीक ने कहा, वास्तव में मैंने अपने कण्ठ से ऊपर का भाग आपको दान दे दिया, परन्तु में संग्राम देखना चाहता हूँ। उस समय, देखो, योगेश्वर कृष्ण ने कहा, अच्छा, तुम संग्राम को देखो, परन्तु तुम्हारा जो कण्ठ है, वह हमारा हो चुका है। अब तुम्हारे भुज समाप्त हो चुके हैं, इनसे कार्य करना अब तुम्हारा कर्तव्य नहीं।

उस समय महाराजा अम्बरीक ने तथास्तु कह करके कहा, महाराज !मैं आपको अपने कण्ठ से ऊपर का भाग दान दे चुका हूँ। तब महाराजा कृष्ण ने उसके लिए एक ऊँचा स्थान बनवाया, जिस पर विराजमान होकर, वह महाभारत का संग्राम देख सके।

मुनिवरों !हम यह क्यों उच्चारण कर रहे थे। तात्पर्य यह था कि ऐसे विज्ञान बढ़ने से विनाश ही होता है। मानव का या राष्ट्र का कैसे उत्थान होता है, यह हमारे समक्ष बहुत सी वार्त्ता आ जाती है। क्या करें, बेटा !उस काल को देखा है, उस काल के अनुकूल व्याख्यान हमारे कण्ठ आ जाते हैं। मानव का विकास उस काल में होता है, जिस काल में मानव का जीवन ऊँचा होता है।

समुद्र मन्थन का स्वरूप

मुनिवरों !देखो, हमारे यहाँ वेदों में एक अलंकार आता है, और वह यह है कि देव और दैत्यों ने समुद्र का मन्थन किया। मन्थन के पश्चात् चौदह रत्न निकले। मुनिवरों !यह देव और दैत्य कौन थे जिन्होंने समुद्र मन्थन किया? महानन्द जी ने एक समय प्रश्न किया था, कि परमात्मा ने कच्छप बन करके समुद्र मन्थन किया था, यह वाक्य सत्य है? वास्तव में तो यह अलंकार ही है। मुनिवरों !परमात्मा को भी कच्छप रूप से पुकारा जाता है, क्योंकि वह सर्वांग संसार को अपनी पीठ पर धारण कर रहा है। पृथ्वी भी उसके आसरे है। लोक लोकान्तर भी उसी के आसरे है, यह सब ही उसकी पीठ पर स्थिर हो रहे हैं। यदि वह स्थिर न करे तो यह संसार क्षण भर भी नहीं रह सकता बेटा !।

तो मुनिवरों !इसका क्या अभिप्राय है, समुद्र मन्थन कैसे किया गया? मुनिवरों !जब सृष्टि प्रारम्भ हुई प्रारम्भ होते ही, समुद्रों का मन्थन किया। मुनिवरों !जब हिरण्याक्ष दैत्य आए, पृथ्वी को अपने में धारण कर लिया, तो बेटा !यहाँ देवता आ पहुँचे और उन दैत्यों से संग्राम किया और हिरण्याक्ष को नष्ट करके कुछ अन्तरिक्ष में पहुँचा दिया, कुछ मृत्युलोक में पहुँचा दिया, और कुछ लोक लोकान्तरों में पहुँचा दिया। यह देखो, समुद्र मन्थन है। बेटा !मानव जब अपने संकल्पों को प्रदीप्त करता है, और उसमें से रत्नों की खोज करता है, तो वह भी समुद्र मन्थन है। मानव के द्वारा कौन से रत्न हैं, जिनकी खोज करनी चाहिए?

मुनिवरों !देखो, कल हम उच्चारण कर रहे थे कि महाराज कृष्ण षोडश कलाओं को जानने वाले थे। मानव के हृदय में पाँच प्राण होते हैं, पाँच कर्म इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ और एक मन यह सब सोलह कला होती हैं। योगेश्वर कृष्ण ने इन सबके विषय को जाना और मन को स्थिर करके उन रत्नों की खोज की, जो परमात्मा ने, सृष्टि के प्रारम्भ में, समुद्र मन्थन करके महान विकास कर दिया। प्रश्न आता है कि वे रत्न थे या न थे। यदि नहीं थे तो कहाँ से आए? तो बेटा !इससे प्रतीत होता है कि जब परमात्मा इस शून्य प्रकृति को अपनी प्राण रूपी सत्ता देता है, तो यह महत् निकलने लगती है। यह अपना प्रकाश देने लगती है। उस समय धीरे धीरे यह संसार रच जाता है। बेटा !परमात्मा ने अपना महत् देकर चौदह रत्न इस पृथ्वी से निकाले। यह है बेटा ! परमात्मा का मन्थन। समुद्र कहते हैं प्रकृति को, जिसका कोई पार नहीं। यह मन्थन किसके लिए किया?

बेटा !देखो, जैसे माता का बालक है। गो दूध देती है, माता दुग्ध की क्रिया बनाती है। क्रिया बना करके उस दुग्ध का मन्थन करके उसमें से घृत निकाल लेती है। वह माता किसके लिए घृत निकाल लेती है? वह जो उसका परिवार उसके द्वारा है। वह उस घृत को अपने बालक को अर्पण कर देती है ऐसे ही बेटा !परमात्मा इस महान् प्रकृति का मन्थन अपने, बालक आत्मा के लिए करता है।

तो मुनिवरों !आज हम व्याख्यान देते देते बहुत दूर पहुँच गए हैं। व्याख्यान क्या देना था, और कहाँ पहुँच गए। यह तो कोई हमारा विषय ही नहीं था। महानन्द जी दुबारा कहेंगे कि आपका कल हुआ ही नहीं। अभी अभी

कहने वाले हैं, हमें अभी अभी उनका उत्तर देना है। व्याख्यान तो बड़ा विशाल बन गया है, क्या करें समय इतना नहीं।
तो मुनिवरों !अभी अभी हमारा व्याख्यान चल रहा था कि परमात्मा ने अपने महान बालक आत्मा के लिए समुद्र का मन्थन किया, चौदह रत्न निकाले जो मानव के लिए महत्त्वदायक हैं। मुनिवारों !ऐसा कहते है, महानन्द जी ने एक समय ऐसा भी कहा, कि उन रत्नों में से परमात्मा ने श्यामकर्ण घोड़े को निकाला, महान धेनु को निकाला, यह सत्य है?
मुनिवरों !देखो, श्याम कर्ण बेटा !श्याम कर्णोति ब्रजते मानो देखो, इसमें जितने तत्त्व हैं सब महान प्रकृति से आए हैं, जैसे सूर्य है, चन्द्रमा है, कामधेनु है, अग्नि है, वरुण है, ये सब प्रकृति के मन्थन से आए हैं। मुनिवरों! देखो, यह क्या है ? धेनु माता को भी कहते हैं, धेनु गो को भी कहते हैं। बेटा !हम पृथ्वी को गो कहा करते हैं। परमात्मा ने इसको मन्थन करके स्थिर किया। श्यामकर्ण मन को भी कहते हैं, श्यामकर्ण अग्नि को भी कहते हैं। यहाँ कई रूपरेखा मानी गई हैं। श्यामकर्ण बेटा !सूर्य को भी कहते हैं।
मुनिवरों !देखो, परमात्मा ने इन सबको निकाला। देखो, माता धेनु को उत्पन्न किया, जिससे संसार की उत्पत्ति होती है। परमात्मा ने चौदह रत्नों को निकाला, जिसका शेष व्याख्यान अब कल उच्चारण किया जाएगा। आज तो समय इतना आज्ञा नहीं दे रहा है। व्याख्यान बड़ा विचित्र बन गया है।
अभी अभी हमारा क्या आदेश चल रहा था? हम कर्मों के विश्लेषण में व्याख्यान दे रहे थे, कि मानव जैसा कर्म करता है, वैसा ही भोगा करता है। परन्तु परमात्मा ने जब इतने विशाल समुद्र को हमारे लिए मन्थन किया है, तो आज हमारा कर्त्तव्य है कि हम परमात्मा के मन्थन किए हुए संसार रूपी समुद्र से पार हो जाएं और पार होकर परमात्मा की गोद में चले जाएं, यही हमारा कर्त्तव्य है।
अहा !हमारा क्या आदेश चल रहा था। मुनिवरों !आज तो हम तुम्हें एक सूक्ष्म सी वार्त्ता उच्चारण कर देवें जैसा महानन्द जी का आदेश था।
पूज्य महानन्द जीः कृपा कीजिए, भगवन् !।
मुनिवरों !आज हमारा कर्मों के सम्बन्ध में व्याख्यान चल रहा था। बहुत ही विशाल व्याख्यान दे रहे थे। आज हम तुम्हें यह वार्त्ता उच्चारण कर देवें, जो कार्य किसी काल में हुआ, परन्तु उसकी रूपरेखा पश्चात् में निर्णय देंगे।
मुनिवरों !यह सतोयुग के काल का समय है । हमारे गुरु ब्रह्मा वेद के प्रकाण्ड पण्डित और विद्या के भण्डार थे। मुनिवरों !देखो, उनका महान् शिष्य मण्डल भी था, उनके एक पुत्र महा सृष्टु मुनि महाराज थे। मुनिवरों ! एक समय महा सृष्टू मुनि महाराज अपनी तुम्बा नाम की धर्मपत्नी के साथ एक स्थान पर विराजमान थे। उन दोनों के हृदय में एक भावना उत्पन्न हुई, कि हमारे कोई पुत्र होना चाहिए। परन्तु पुत्र तेजस्वी हो। हमारे पिता ब्रह्मा ने कहा है कि तुम दोनों को जितने समय की अवधि दी है, ब्रह्मचर्य का पालन करो और तपस्या करो। दोनों एकान्त स्थान में वेदों को विचारते रहते थे। उन्होंने अपने पिता को कण्ठ किया। उनके पिता ब्रह्मा उनके समक्ष आ पहुँचे। उस समय दोनों ने निवेदन किया महाराज !अब हम एक पुत्र चाहते हैं। उस समय उन्होंने आज्ञा दी कि तुम अवश्य पुत्र उत्पन्न करो।

पूज्यपाद गुरुदेव की शाप कथा

मुनिवरों !उस समय हमने सुना है कि उनके आदेशानुकूल महासृष्टु मुनि महाराज ने यज्ञाति यजन्ते यज्ञ किया, भजन किया, वेदों का स्वाध्याय किया और उसी के अनुकूल गर्भस्थल की स्थापना की। आगे बेटा !यह संसार चलता रहा। कुछ समय के पश्चात् तुम्बा नाम की धर्मपत्नी से पुत्र उत्पन्न हुआ। उस बालक का जन्म

संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया। सृष्टु मुनि महाराज ने अपने बालक का नाम कुत्री मुनि नियुक्त कर दिया।

बाल्यकाल से ही पति और पत्नी दोनों उसे इतने ऊँचे वातावरण में शिक्षा दिया करते थे, कि वह वेदों का प्रकाण्ड विद्वान बन गया। बेटा !देखो, जब वह 25 वर्ष का आदित्य ब्रह्मचरी बन गया, उस समय उसने अपने माता पिता से निवेदन किया कि मुझे आज्ञा दो, मेरी इच्छा है कि मैं इस समय देखो, ब्रह्मवर्चो अस्ति ब्राजनोति देतम योगस्ते शुभः योगा भावनाय यस्तम् परमपिता परमात्मा की उपासना करना चाहता हूँ जिससे मेरे जीवन का विकास हो। मैं उस आध्यात्मिक विज्ञान को खोजना चाहता हूँ, जिसको हमारे गुरु ब्रह्मा आदि सब आचार्य खोजते चले आए हैं।

कुत्री मुनि की ज्ञान पिपासा

उस समय बेटा! जब उनके माता पिता ने उसके अन्तः करण की यह वार्त्ता सुनी तो वह प्रसन्न हो गए, और प्रसन्न हो करके आज्ञा दी, बेटा !तुम्हें धन्य है। हमारे कैसे सौभाग्य है, जो ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ, जो अपनी मृत्यु को विजय पाने की सोच रहा है। पुत्र !जैसी तुम्हारी इच्छा है, वैसा कार्य करो और उसके अनुकूल अपने जीवन को ऊँचा बनाओ।

उस समय वह बालक माता पिता की आज्ञा पा करके, बहते हुए वह करुड़ मुनि महाराज के समक्ष जा पहुँचे। करुड़ मुनि महाराज ने उनका बड़ा ऊँचा सत्कार किया और कहा, आनन्द हो ब्रह्मचारी जी ! उस समय उसने कहा महाराज !आनन्द है, क्या तुम्हारे पिता भी आनन्द हैं। उसने कहा विशेष आनन्द है। जब सब आनन्दपूर्वक वार्त्ता कह सुनाई तब बालक वहाँ से बहते हुए अगले स्थान पर जा पहुँचे। जहाँ बेटा !महर्षि सुदक्षमुनि महाराज, त्वकेतु मुनि महाराज और अमरेती मुनि महाराज विराजमान थे। ऋषियों के मध्य में जाकर, उनके चरणों को स्पर्श किया और स्पर्श करते हुए आनन्द पूर्वक वार्त्ता उच्चारण की। ऋषियों ने भी जान लिया, कि यह तो सृष्टु मुनि महाराज का बालक है, ब्रह्मचारी है और ऋषि बनने के लिए जा रहा है। मुनिवरों !वहाँ से आज्ञा लेकर अगले स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ कार्तिक मुनि महाराज रहा करते थे। जहाँ बेटा ! अम्बेतु ऋषि, अकेतु मुनि महाराज, अंगिरा आदि आचार्य वहाँ विराजमान थे। अकेतु मुनि महाराज ने उनका बड़ा ऊँचा सत्कार किया।

मुनिवरों !वह काल कितना ऊँचा था, जिस समय बुद्धिमानों का इतना सत्कार होता था। बुद्धिमान होने के नाते, जिस ऋषि के स्थान पर जाते थे, ऋषि उनका ऊँचा सत्कार किया करते थे। वहाँ से आज्ञा लेकर बहते हुए अगले स्थान पर जहाँ, देखो, कपिल मुनि महाराज, मधेतु ऋषि महाराज, गंगकेतु ऋषि, प्राची मुनि महाराज और द्रुगनी और क्रणवन्ती ऋषि महाराज और भी आदि आदि ऋषि विराजमान थे। लोमश मुनि भी विराजमान थे। दार्शनिक विषय हो रहा था । उस दार्शनिक समाज में जाकर उन्होंने सबको नमस्कार किया। आनन्दपूर्वक सबने उनका सत्कार किया। महर्षि लोमश ने कहा, कहिए, भगवन् !आप कहाँ से विराज रहे ह?। उस समय उन्होंने कहा, मैं तो भगवन् !आप ऋषियों के दर्शन करने के लिए आ रहा हूँ। दर्शन कर आनन्दित हो जाऊंगा। तब लोमश मुनि ने कहा, अरे, तुम कहाँ जा रहे हो? यहाँ तो दार्शनिक विषय हो रहा है। यह तो बड़ा गूढ़ विषय है। वह दार्शनिक समाज में विराजमान हो गए। नारद मुनि महाराज भी वहाँ थे।

उस समय दार्शनिक समाज में यह निर्णय किया जा रहा था, कि जब एक कल्प समाप्त हो जाता है, उसके पश्चात् ब्रह्मा का एक दिवस माना जाता है। यह इस प्रकार क्यों है? ब्रह्मा किस पदार्थ का नाम है? ब्रह्मा कोई मानव है, या ब्रह्मा कोई बुद्धिमान है। या ब्रह्मा परमात्मा को कहते हैं। लोमश मुनि ने निर्णय किया कि वह जो ब्रह्मा का दिवस है, वह ब्रह्मा की आयु है, वह सौ कल्प के पश्चात मानी गई है। ब्रह्मा की जितनी

आयु है, इतनी आयु तक यह परमात्मा के गर्भ में आनन्द लेता रहता है। बेटा !इसका विषय तो कल उच्चारण करेंगे, आज समय नहीं।

देखो, यह ऋषि बालक, उस दार्शनिक समाज से आज्ञा पा कर बहते हुए शौनक ऋषि महाराज के समक्ष आ पहुँचे। शौनक मुनि ने उस ऋषि बालक का बड़ा ऊँचा सत्कार किया।

तो बेटा !जब तक उस ऋषि बालक के हृदय में कोई प्रेरणा न हुई, वह बहते रहे और अन्त में सोमभाव ऋषि के द्वार जा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर प्रेरणा हुई, कि जिस मन्तव्य के लिए मैं भ्रमण कर रहा हूँ अभी तक वह पूर्ण नहीं हुआ। मुझे ज्ञात ही नहीं रहा, मुझे तो कोई गुरु धारण करना चाहिए। गुरु बना करके अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए।

उस समय देखो, शम्भु मुनि महाराज से कहा, महाराज !आप मार्ग में रहते है। आपका बड़ा ऊँचा स्थान है। यहाँ कोई ऐसा ऋषि है जो गुरु योग्य है? जो हमें ऊँचा मार्ग दिखा देवे। उस समय उन्होंने कहा, ऐसा ऋषि तो है, परन्तु हमें तो ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे आप जिज्ञासु नहीं हैं। उस समय बालक ने कहा महाराज !मैं तो बड़ा जिज्ञासु हूँ। आप मुझे निर्णय तो करें। उन्होंने कहा, यहाँ से चले जाओ, और देखो, ब्रह्मा के शिष्य रहते हैं, जिनको शृङ्गी ऋषि कहते हैं उनके स्थान पर चले जाओ। वह तुम्हारा सत्कार करेंगे और वह तुम्हें ऊंचे पद पर पहुंचा देंगे । उस समय ऋषि बालक ने कहा कि उनमें क्या विशेषता है? वह इस योग्य क्यों हैं? उस समय कहा, हमने तो ऐसा सुना है कि आज 84 वर्ष हो गए हैं उन्होंने मिथ्या उच्चारण नहीं किया है, सत्यवादी हैं। द्वितीय वाक्य यह है कि उन्होंने अपनी आत्मा का परमात्मा से मेल करा दिया है। वह गुरु के योग्य हैं, उन्हें गुरु क्यों नहीं बनाते?

शृङ्गी ऋषि द्वारा कुत्री मुनि की शिक्षा

बेटा !यह वार्त्ता उस बालक के आँगन में आ गई। वह वहाँ से बहता हुआ इस आत्मा के समक्ष जा पहुँचा। उसका बड़ा ऊँचा सत्कार हुआ, उपहार में बड़े पदार्थ दिए। वह ब्रह्मचारी था, ब्रह्मचारी का सत्कार करना, प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है। ऋषि ने बेटा !उनका सत्कार किया। सत्कार के पश्चात् वह बालक प्रसन्न हो गया, और मन में उन्हें गुरु चुन लिया। इस आत्मा ने भी गुरु के नाते उस बालक को शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। शिक्षा देने लगे, योगाभ्यास की निधि पर निधि देने लगे। यह तो न प्रतीत मानव का कैसा तुच्छ समय आ करके मानव को नष्ट भ्रष्ट कर देता है। उस समय वह बालक किसी कार्य में अधूरा था। बालक ने कहा, हे भगवन् !अब मुझे आज्ञा दीजिए, मैं तपस्या करने के लिए तत्पर हो रहा हूँ। मैंने बहुत योगाभ्यास किया है आज मैं उस महानता को पाना चाहता हूँ जिस महानता से हमारे आदि ऋषियों ने महान विज्ञान को पाया है, आज मैं वहीं जाना चाहता हूँ। उस समय देखो, इस आत्मा ने कहा, अरे, बालक !अभी तू इस योग्य नहीं हुआ है, जों तू इतनी पूर्ण निधि पर पहुँच जाएगा।

उस समय बेटा !वह गुरु की आज्ञा को नष्ट करके बहते हुए। कजली वन में जा करके समाधि में लय हो गए। योगाभ्यास के नाते, केवल आयु के अधीन न रहकर, ऐसा सुना है कि बेटा !उन्होंने 250 वर्ष की समाधि की। बेटा !गणना के अनुकूल वह 250 वर्ष की समाधि के पश्चात् भी तपस्या करता रहा । तपस्या करते करते उसे 250 वर्ष से भी कुछ अधिक वर्ष हो गए। जब अधिक वर्ष हो चुके, तो मुनिवरों !यहाँ यह निधि मानी जाती है। जब योग में महान इस प्रकार आरूढ़ हो जाता है तो उस समय बेटा !समाधि जाग्रत करने के लिए, ऋषिवर नियुक्त रहते हैं। वहाँ देखो, आदि गुरु ब्रह्मा ने अपने पुत्र सृष्टु मुनि महाराज को नियुक्त किया, कि जाओ, वह बालक अपनी तपस्या में आरूढ़ हो रहा है। बेटा !उन्होंने अपने योगबल से उस बालक की तपस्या को

जाना। बेटा !उसके अन्तःकरण में वह जाग्रत थी उसके योग की स्थिति शुद्ध हो गई।

महान तपस्वी कुत्री मुनि को अभिमान

उस समय क्या करें, बेटा !उस बालक को अभिमान हो गया कि मैंने सभी पदार्थों को विजय कर लिया। वह वहाँ से बहते हुए संकेतु ऋषि महाराज के समक्ष पहुँचे। संकेतु ऋषि ने कहा कहिए, आपकी तपस्या में क्या सफलता हुई? आपने तो बड़ा ही योगरूढ़ किया है। उस समय उन्होंने का देखो, मेरे गुरु ने तो ऐसा कहा था कि तू पूर्ण निधि पर पहुँचने के योग्य नहीं, परन्तु मुझे तो आज प्रतीत होता है, जैसे मैंने अपने गुरु ब्रह्मा के पद को और अपने गुरु के पद को, क्या मैंने तो तीनों लोकों को विजय कर लिया है। उस समय जब बालक को यह अभिमान हो गया, तो अन्य ऋषियों के समक्ष पहुँचे। बेटा !सृष्टि मुनि के समक्ष पहुँचे। सृष्टु मुनि ने कहा अरे, बालक क्या रहा तुम्हारी तपस्या में? मुनिवरों !उस समय उसने पिता को पिता न जानकर अभिमान में कहा, हे पिता तूने क्या तपस्या की है, आज जो मैंने की है आज मैंने तीनों लोकों को विजय कर लिया है, तीनों लोकों का स्वामी बन चुका।

तो मुनिवरों !जब बालक को यह अभिमान छा गया। आगे चलते गए। आदि आदि ऋषियों से सम्बन्ध किया और सभी ऋषियों से यह अहंकारदायक वाक्य कहा और उन्हें ठुकरा देता था। मुनिवरों !वह इतना महान तुच्छ बन गया, कि उसका किया हुआ परिश्रम, सब समाप्त हो गया। अन्त में बहते हुए वह विभाण्डक ऋषि के द्वार जा पहुँचे। उनसे भी वही अहंकारदायक वाक्य कहे। उस समय बेटा !विभाण्डक ऋषि ने कहा अरे, तुम्हारे गुरु कौन हैं?

उन्होंने कहा मेरे गुरु श्रृंगी ऋषि हैं। मुझे उनकी शिक्षा है। उस समय उन्होने कहा अरे, तुम्हारे गुरु तो बड़े ब्राह्मण हैं, वह तो सत्यवादी हैं। उनसे यह अहंकारमय वाक्य उच्चारण न कर देना। यदि तुमने उच्चारण किया, तो हमें प्रतीत है, जैसे तुम्हें मृत्यु दण्ड प्राप्त हो जाएगा। उस समय उस बालक ने कहा अरे, नहीं, क्या उच्चारण कर रहे हो? उन्हें अपने पदों से ठुकराने लगे।

कुत्री मुनि को गुरु द्वारा श्राप

अन्त में मुनिवरों !यह स्वयं ब्रहमणे इस आत्मा के समक्ष आ पहुँचे। उन्होंने प्रश्न किया अरे, कहो बालक ! तुम्हारी तपस्या में क्या प्रबलता हुई? उसने उत्तर दिया, कि मैंने तो तीनों लोकों को विजय कर लिया है। अन्तरिक्ष, द्यौ लोक, मृत्त लोक और अपने गुरु पद को प्राप्त कर लिया है। आप तो यही कहते थे कि क्या तपस्या कर पाओगे। भगवन् !मैंने तीनों लोकों को विजय कर लिया है। अच्छा क्या करें, बेटा !जब न पता कौन कौन से कर्मों का जब भोग आता है तो मानव की बुद्धि उसी प्रकार हो जाती है। बेटा !उस बालक की यह भावना पाकर और योग द्वारा उसके अन्तःकरण को जान करके, कि उसकी मृत्यु निकट आ गई है, उसी के अनुकूल उन्होंने अपने मुखारविन्द से यह कहा कि अरे, तुच्छ ऋषि के बालक !तुझे इतना बड़ा अभिमान, जा मृत्यु को प्राप्त हो जा।

उस समय बेटा !वह बालक मृत्यु को प्राप्त हो गया। बेटा !तुम यह प्रश्न करोगे, कि क्या परमात्मा के नियम के प्रतिकूल मृत्युदण्ड मिल जाता है? इसका उत्तर यह है कि जब समय आ जाता है, तो समय के अनुकूल ही ऐसा वाक्य कहा जाता है।

आदि ब्रहमा जी द्वारा शृङ्गी ऋषि जी को श्राप

जब मृत्यु दण्ड प्राप्त हो गया, तो त्राहिमाम त्राहिमाम मच गई। ऋषियों में हाहाकार मच गया। अरे, यह क्या हुआ, ऋषि का बालक, ऐसा तपस्वी, मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय ब्रहमा आचार्य, ऋषि मण्डल को ले

करके क्रोध में छाए हुए वहाँ आ पहुँचे और कहा, अरे, तुच्छ बालक !तूने एक ऋषि के बालक को नष्ट कर दिया। जब तुम इतने बुद्धिमान थे, तो तुमने उसको यथार्थ शिक्षा क्यों न दी? शिक्षा देकर उसको ऊंचे मार्ग पर चलाते, परन्तु तुमने मृत्यु का दण्ड दे दिया। अब तुम्हें भी इन कर्मों का फल भोगना पड़ेगा। जन्म जन्मान्तरों की वार्ता तो यह है कि तुम सूक्ष्म शरीर द्वारा, जैसे ओर भी लोक हैं, उन सबमें जन्म पाते हुए, सतोयुग, त्रेता और द्वापर सब ही काल को देखो, परन्तु जिस समय कलियुग के 5500 वर्ष व्यतीत हो जाएंगे, उस समय तुम्हारा एक अज्ञान गृह में जन्म होगा। वह तुच्छ जन्म हो करके, जितनी भी तुम्हारी यह ज्ञान निधि है, यह तुम्हारे समक्ष न रहेगी, वह समाप्त हो जाएगी, शरीर में अज्ञानता छा जाएगी। आकृति बहुत ही तुच्छ बन जाएगी, परन्तु एक महान अवस्था आ करके जिसको हमारे योगियों ने देखो, समाधि अवस्था कहा है जिसको वहकड़ी वाणी भी कहते हैं, जिसको प्राण अवस्था भी कहते हैं, शरीर की ऐसी गति बन करके, उस शरीर से आत्मा का उत्थान हो करके, अन्तरिक्ष मण्डल में, जहाँ सूक्ष्म शरीर वाली महान् आत्माओं के सत्संग के द्वारा, उस शरीर द्वारा तुम्हारी आकाशवाणी मृत मण्डल में पहुँचेगी। वह काल इतना तुच्छ होगा कि उस काल में कोई तुम्हें तुच्छ कहेगा, कोई पाखण्डी कहेगा, कोई किसी प्रकार से पुकारेगा, तुम्हें यह कर्म भोगना पड़ेगा।

श्राप कौन और किसको देता है?

तो आज मुनिवरों !तुम्हें प्रतीत हो गया होगा कि आज वह काल है, जिस काल में हम लाखों वर्ष पूर्व किए हुए कर्मों को भोग रहे हैं। बेटा !तुम्हें ज्ञात हो गया होगा, कि वह हमारा किया हुआ कर्म है, जो बेटा !एक ऋषि बालक को दण्ड देकर मृत्यु को प्राप्त कराके आज हम इस अवस्था को पा रहे हैं।

बेटा !तुम यह प्रश्न करोगे कि महान आत्मा श्राप नहीं देती। गुरु ब्रह्मा ने श्राप दिया तो गुरु ब्रह्मा भी महान पाप के भागी बन गए। मुनिवरों !देखो, उसका उत्तर यह है कि मानव का श्राप क्या है? वह तो कर्मों के वशीभूत होना है, और कर्मों में बन्धना है, किसी प्रकार भी बन्ध जाओ। ऐसा वेदों के वाक्य है, ऐसा हमारे आचार्यों ने कहा है। श्राप वह देता है, जिसकी महान आत्मा होती है परन्तु वह देता किसको है? वह उसके अन्तःकरण को जान लेता है। किसी अज्ञानी को श्राप देता है तो उस ज्ञानी का आत्मिक बल सूक्ष्म बन जाता है। जो बेटा !ज्ञानी सब कुछ जानता हुआ, जिस कार्य को कर देता है, उसको बेटा !अच्छी प्रकार दण्ड देना चाहिए। उसमें कोई हानि नहीं होती, क्योंकि वह तो दण्ड देना है। हमारे गुरु जी ने हमें दण्ड दिया।

उस समय गुरुजी ने यह भी कहा था कि उस काल में तुम्हें गुरु भी प्राप्त न होगा। उस समय गुरु से निवेदन किया और कहा, भगवन् !हमारा कल्याण कैसे होगा? जब हम अपने सूर्य मण्डलों को त्यागकर मृत्त मण्डल में जन्म पाएंगे और जन्म धारण करके हमें महान कोई योगाभ्यासी अमृती गुरु प्राप्त न होगा तो जीवन कैसे बनेगा? तो उस समय गुरु ने प्रसन्न होकर कहा, जाओ !जब तुम्हारे उस शरीर की पचास वर्ष की अवस्था होगी उस समय तुम्हें कोई ब्राह्मणी आत्मा प्राप्त हो जाएगी।

बेटा !कई समय से तुम्हारा प्रश्न चल रहा था। आज तुम्हें उसका उत्तर मिल गया। आज हम लाखों वर्ष पूर्व किए हुए, कर्मों को भोग रहे हैं और भोगते रहेंगे, जब तक अवधि है। यह है बेटा !आज का हमारा व्याख्यान। आज के व्याख्यानों का अभिप्राय है, कि मानव को शुभ कार्य करने चाहिए, जिससे मानव ऊँचा बने, और मानव का विकास हो। मुनिवरों !देखो, क्या करें, हमने तो विचारा भी बहुत, परन्तु गुरु का अपमान न सह सके, वह उल्टा ही पड़ गया, हमें भोगना पड़ गया। समय की प्रबलता, मानव पर जब समय कठिन आता है तो शुभ कार्य भी अशुभ बन जाता है, उसकी रूपरेखा ही अशुभ बन जाती है। क्या करें बेटा !संसार की गति को। गुरु का अपमान, कि गुरु को जीत लिया, हम सह न सके और उसको मृत्यु दण्ड दे दिया। उसकी उल्टी

रूपरेखा बन करके, लाखों वर्षों का किया हुआ कर्म, आज भोगा जा रहा है। यह परमात्मा की कैसी विचित्रता है, जिसमें ऐसे ऐसे कर्मों के फल भी मानव को भोगने पड़ते हैं।
तो यह आज का आदेश समाप्त हो गया, कल अवसर मिलेगा तो बेटा! कल द्वितीय वाक्य उच्चारण करेंगे महानन्द जी, जैसा तुमने कहा, हमें किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं, कि मृत मण्डल में कोई पाखण्डी उच्चारण कर रहा, कोई कुछ कह रहा है, हमें कोई मंतव्य नही, जब गुरु ने हमें ऐसा जन्म दिया तो वह भोगना ही पड़ेगा। उसके अनुकूल परमात्मा से याचना करना, हमारा कर्त्तव्य है। हमारे यह व्याख्यान चलते हैं, और चलते रहेंगे। परमात्मा की निधि है। आज हम इसको विचारते रहें, और इस निधि का इसी प्रकार प्रसार करते रहें जब तक परमात्मा ने, हमारे गुरु ने, अवधि दी है।
अब हमारा यह आदेश समाप्त हो गया है, कल अवसर मिलेगा, तो कल दार्शनिक विषय पर व्याख्यान देंगे।
पूज्य महानन्द जीः धन्य हो भगवन् !
पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अब हमारा वेद पाठ प्रारम्भ होगा, इसके पश्चात् हमारी वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।)वेद पाठ(

12 03 1962 देवर्षिनारद व महर्षि सनतकुमार संवाद

देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष वेदमन्त्रों का गान गा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेदमन्त्रों का अभी अभी हमने तुम्हारे समक्ष पाठ किया। आज हृदय प्रातः मना रहा था और वेदवाणी में इतना ललाहित हो रहा था, और पुकार पुकार कर कह रहा था, कि परमात्मा का गुणगान गाते ही चले जाओ। आज के वेदपाठ में बहुत सी माधुर्यता और अलौकिकता थी। आज हमें वेदपाठ माधुर्यता से ही करना चाहिए, और अन्तःकरण से करना चाहिए, वह हमें शान्तिदायक होगा। जब हम वेदमन्त्रों को नाममात्र से ही उच्चारण करते हैं और उनका अच्छी प्रकार मन्थन नहीं करते, तो वेद के अक्षरों की रटन्त करने से कोई भी लाभ प्राप्त नहीं होता। लाभ उसी काल में प्राप्त होगा, जब हम वेदवाणी के अनुकूल अपने विचारों को ऊँचा बनाएंगे। वेदवाणी कुछ उच्चारण कर रही है और हमारा जीवन उसके विपरीत चल रहा है, तो उस वेदवाणी से कुछ लाभ न होगा। लाभ उसी काल में होगा जब बुद्धिमान ब्राह्मण वेदमन्त्रों का मन्थन करता है, उसका अनुवाद करके सरल से सरल बना लेता है। इसी प्रकार हमें अपने जीवन को इतना सरल और नम्र बना लेना चाहिए, कि हम महान् और विचित्र बनते रहें।

परमात्मा को नमः

आज हमारे प्रारम्भ के मन्त्र में नमः का पाठ किया जा रहा था। परमपिता परमात्मा को नमस्कार कर रहे थे। परमात्मा के रचाए हुए पदार्थों को नमस्कार कर रहे थे, देवताओं की याचना कर रहे थे। इन्द्राय नमः हमारा कल्याण करने वाले हे इन्द्र !आ, और हमारे ऊपर जो वत्रासुर का आक्रमण हो रहा है इसे शान्त कर। हम इस पापी वत्रासुर को नहीं चाहते। जो हमारे ऊपर आक्रमण कर रहा है और हमें शान्ति नहीं पहुचाता। तू, अपने वज्र को लेकर इसको शान्त कर।

इन्द्र वत्रासुर संग्राम

मुनिवरों !यह वत्रासुर क्या पदार्थ है? आज मनुष्य को गम्भीरता पूर्वक विचारना चाहिए कि यह क्या पदार्थ है? जो आक्रमण करता चला जा रहा है। वत्रासुर मनुष्य की मृत्यु का सामान कर रहा है, देवताओं को हानि पहुँचा रहा हैं, किसको वत्रासुर कहते है। मेघों को वत्रासुर कहते है। मुनिवरों !हमारे दुष्ट विचारों का नाम भी वत्रासुर है। जब नाना तुच्छ विचार हमारे ऊपर छा जाते हैं, तो छा जाने का नाम वत्रासुर है। मेघ समुद्रों से जल को

लेते हैं, परन्तु पृथ्वी पर वृष्टि नहीं करते, वनस्पतियों को नहीं उगाते। इसलिए याचना किया करते हैं कि हे इन्द्र !आ और इस वत्रासुर से संग्राम करके इसे शान्त कर, इसको नष्ट कर।

मुनिवरों !वह इन्द्र कौन है? वह इन्द्र हमारा ज्ञान है। हमारे शरीर में जब देवासुर संग्राम होता है उस समय देव इन्द्र की याचना करते हैं कि हे इन्द्र !आ और यह वत्रासुर पापी हमारे समक्ष आ रहा है, इसको शान्त कर। उस समय जब ज्ञान का मन्थन करते हैं, और ज्ञान रूपी इन्द्र को अपने में धारण करते हैं, तो वह वत्रासुर शान्त हो जाता है। पाप शान्त हो जाता है। जैसे मुनिवरों !जलों से उत्पन्न होकर, मेघों ने जन्म लिया, जन्म लेकर वृष्टि नहीं करते, तो महाजनों को कितना कष्ट होता है। कृषि करने वाले, वैश्य कितने लालाहित रहते हैं। परन्तु वृष्टि नहीं होती तो वनस्पतियाँ व अन्न नहीं उगता जिससे हमारी ब्रह्मचर्यता ऊँची बनती है।

मुनिवरों !उस समय सब देवताजन याचना करते हैं कि हे इन्द्र !तू आ और वत्रासुर से संग्राम कर। मुनिवरों ! यहाँ इन्द्र वायु को कहा गया है। इन्द्र और वत्रासुर दोनों का संग्राम होता है। इन्द्र अपने प्राण रूपी वज्रों से मेघों पर आक्रमण करता है और मेघों को छिन्न भिन्न करने का नाम ही वृष्टि है। वत्रासुर का शान्त हो जाना ही, हमारे लिए शान्तिदायक है।

हे इन्द्र !आपको बारम्बार नमस्कार किया जा रहा है। आज के वेदपाठ में नमः का बड़ा सुन्दर पाठ आ रहा था। जब बुद्धिमान समक्ष आता है, उसको नमस्कार किया जाता है, चरणों को स्पर्श करते हुए नमः किया जाता है। हे इन्द्र !नमः। मुनिवरों !जैसे माता का प्रिय बालक अपनी माता के चरणों को स्पर्श करते हुए नमः करता है, और उस समय माता कहा करती है कि हे पुत्र !आयुष्मानः भवः। यह सुन्दर आशीष देकर अपने प्रिय बालक का स्वागत करती है। इसी प्रकार ब्राह्मण जब बुद्धिमान मण्डल में जाते हैं, पुरोहित, अपने यज्ञमान के द्वार जब जाता है, तो उस समय अपने पुरोहित का स्वागत करते हुए, चरणों को स्पर्श करते हुए नमः करता है, और ब्राह्मण कहा करते हैं आयुष्मानः कुशल मंगलस्ते अर्थात् कुशल से, आनन्द से रहो और तुम्हारी आयु बड़ी दीर्घ हो। ऐसे यज्ञमान हमारे संसार में होते रहें, जो भजन करने वाले, बुद्धिमानों का स्वागत करने वाले, और बुद्धिमानों से कुछ प्रेरणा और सदुपदेश लेने वाले हों।

मुनिवरों !यह आज नमः का शब्दार्थ आ रहा था। माता को नमः, हे पृथ्वी माता !हम तेरी गोद में आए हैं, तेरे लिए नमः, प्राणों के लिए नमः। हे प्राण !तू वास्तव में शुद्ध और पवित्र है। परमात्मा की देन है। संसार में ओत प्रोत हो रहा है। वेद में प्राणों को भी नमः कहा गया है। मुनिवरों !प्राणों को ही नमः नहीं, परन्तु दुष्टों को भी नमः, ठगी करने वाले को भी नमः। परन्तु ठगी करने वाले को कैसे नमः की जाएगी। उसे भुजों से नमः न करो। यदि कोई दुष्ट तुम्हारे समक्ष आ जाए, तो उसे डण्डे से नमः करो और कहो कि आ, हम अपने स्थान में स्थिर हैं। उस समय डण्डे से नमस्कार करना चाहिए।

मुनिवरों !यहाँ नाना प्रकार के नमः शब्दार्थ आए। वेद ने तो यहाँ तक कहा कि सिंह को भी नमस्कार। कौन से सिंह को? जो कजली वन आदि का राजा है, अधिराज है उसको भी नमस्कार। आत्म तत्व को जानने वाला, प्रेम से नमस्कार करता है। मुनिवरों !महर्षि लोमश मुनि से प्राप्त हुआ, कि एक समय वह कजली वन में भ्रमण कर रहे थे। मृगराज आए और उनके चरणों में ओत प्रोत हो गया। जहाँ सिंह तक ओत प्रोत हो जाते हों, उस आत्मा के बल की क्या सीमा हैं। मुनिवरों !यहाँ माता गार्गी के जीवन से नाना प्रकार की विशेषताएं हमें प्राप्त होती हैं। वह एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि से मिलने मार्ग में जा रही थी, तो मार्ग में एक मृगराज आया और आ करके माता गार्गी को नमस्कार किया, और उनके चरणों में ओत प्रोत हो गया।

मुनिवरों !आज हमें उस नमः को अपने में धारण करना है, जिससे वास्तव में हमारा कल्याण होगा, जिस नमः से अपने उद्देश्य का पालन कर सकें । जिस नमः से राजा अपने राष्ट्र का पालन करता है, उस नमः को हमें

हृदय से अपना लेना चाहिए। वेदों में भिन्न भिन्न प्रकार से शब्दार्थ आता है। हमारे आचार्यों ने नाना प्रकार की वार्त्ता लेकर सुन्दर वाक्यों में कहा है, प्राणों को नमः। हे प्राण !तू, शुद्ध और पवित्र हैं। आज तू हमारे में रमण कर, हमें पवित्र बनाना चाहते हैं। आज हम उस प्राण को जानते हैं, जिस प्राण से हमारे योगीजन अपनी प्रक्रियाओं को जानकर, मूलाधार और ब्रह्मरन्ध्र में रमण करते हुए, यौगिकता को प्राप्त हो जाते हैं। आज हमें उस प्राण की आवश्यकता है। हे इन्द्र !आपको वास्तव में नमः। आपने हमें नाना प्रकार की सुविधाएं दी है। नाना प्रकार की विद्या इन वेदों में दी हैं। हे इन्द्र !तू वास्तव में इस संसार का कल्याण करने वाला है, रक्षक है। आज हम रक्षा चाहते हैं।

मुनिवरों !आज हमें निस्वार्थ होकर चलना है, और परमात्मा की गोद में जाना है। तो अपनी त्रुटियों को त्याग करके, चलना है। यदि हमारे हृदय में नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं, स्वार्थ है और ऊपर से परमात्मा को भजते जा रहे हैं, तो उससे कोई लाभ न होगा। लाभ उसी काल में होगा, जब हम निस्वार्थ होकर, परमात्मा की गोद में जाने का प्रयत्न करेंगे। अपने को त्याग देंगे, तो एक समय वह अवश्य आएगा, जब परमात्मा हमें अपना लेगा। जब हमारे हृदय में परमात्मा के जानने की जिज्ञासा ही उत्पन्न न होगी, तो परमात्मा हमें कैसे अपनाएगा। मुनिवरों !आज हमें अपने अन्तःकरण को पवित्र बना लेना चाहिए।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !आज तो आप प्राणों की व्याख्या पर कुछ उच्चारण कीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !इसकी व्याख्या, हमने पूर्व स्थान में की है।

पूज्य महानन्द जीः तो भगवन् !आज आपको कोई दोष लग जाएगा?

पूज्यपाद गुरुदेवः)हास्य के साथ (अरे, यह मूर्खों वाली वार्त्ता कहाँ से ले आए। चलो, प्राणों के ऊपर हो जाएगा। परन्तु इसका व्याख्यान हम पूर्व दे चुके हैं।

पूज्य महानन्द जीः तो भगवन् !आज ओर कर दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा, धन्यवाद !तो महानन्द जी कौन सा?

पूज्य महानन्द जीः भगवन् !नारद मुनि और सनत्कुमार का जो सम्वाद है, वह बड़ा प्रिय लगता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः)हास्य के साथ (अच्छा धन्यवाद।

मुनिवरों !आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने पुनः से प्राणों की व्याख्या करने का आदेश दिया। अभी अभी यह विनोद की वार्त्ता प्रकट कर रहे थे। इन्होंने अभी अभी कहा कि यदि आप प्राण की द्वितीय व्याख्या कर देंगे तो क्या आपको दोष लग जाएगा। इनके शब्द कितने जिज्ञासा के और महान् हैं। हर समय विनोद ही विनोद करते रहते हैं। वास्तव में मनुष्य को विनोद में ही रहना चाहिए। जब मानव विनोद ही विनोद करता है, तो उसका हृदय पवित्र, निर्मल और स्वच्छ होता है। मुनिवरों !आज हम परमात्मा की गोद में जाना चाहते थे। परन्तु आज प्राणों की व्याख्या द्वितीय निर्णय कर दें। देव ऋषि नारद और सनत्कुमार दोनों का सम्वाद बड़ा विचित्र है, सुनें।

प्राण मीमांसा

मुनिवरों !परमपिता परमात्मा ने हमारे यहाँ दो प्रकार का प्राण दिया है। एक सामान्य प्राण है और एक विशेष प्राण है। सामान्य प्राण वह पदार्थ है, जो संसार को चला रहा है, लोक लोकान्तरों में रमण कर रहा है। सूर्य मण्डल में, वायु मण्डल में, जल मण्डल में, अन्तरिक्ष मण्डल सबमें ओत प्रोत हो रहा है। परन्तु द्वितीय विशेष प्राण है, जो आत्मा की आज्ञा से चला करता है। हमारे शरीर में आत्मा के अनुकूल पाँच प्रकार के प्राण माने गए हैं प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान। ये पाँच प्राण हैं। इन पाँचों प्राणों की संज्ञा बड़ी विचित्र है। आगे समय आता रहेगा, तो इनकी व्याख्या करते रहेंगे। आज तो जैसा महानन्द जी ने कहा है प्राण के ऊपर ही

कुछ व्याख्या करनी है। मनुष्य को प्राणों को विचारना चाहिए, कि प्राण हमारा कितना संचालक है, यह प्राण हमें कहाँ कहाँ तक पहुंचा देता है यह प्राण ही संसार को चला रहा है जितने भी चराचर प्राणी हैं ये सब प्राणधारी हैं। आज देखो, !ऋषियों का सम्वाद हमारे कण्ठ आ गया हैं।

देवर्षि नारद को अज्ञानता

मुनिवरों !एक समय किसी कारण वश देवर्षि नारद को अज्ञानता छा गई। उन्होंने सोचा कि अब मुझे चलना चाहिए, और इस अज्ञानता को शान्त करना चाहिए। वह अपने स्थान से चलकर महर्षि पापड़ी मुनि महाराज के द्वार जा पहुँचे। महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने उनका बड़ा स्वागत किया और पूछा कि आओ !आनंद से हो। नारद मुनि ने कहा, कि भगवन् !आनन्द कहाँ है। आज हममें अज्ञानता छा रही है। आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है, आत्मिक शान्ति का इच्छुक हूँ। तब महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने कहा कि भगवन् !मेरी तो इच्छा ऐसी है, कि आप महर्षि सनत्कुमार के द्वार पहुँचे, आपको आत्मिक शान्ति अवश्य प्राप्त हो जाएगी।

महर्षि सनत्कुमार के द्वार पर देवर्षि नारद

मुनिवरों !इस आदेश को पा करके देवर्षि नारद वहाँ से चलकर महर्षि सनत्कुमार के द्वार जा पहुँचे। महर्षि ने उनका बड़ा ऊँचा स्वागत किया और उनको ऊँचा स्थान दिया, और कहा कि महाराज !पधारिए। नारद मुनि जी विराजमान हो गए। महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे देवर्षि नारद! आपका हृदय मग्न नहीं हो रहा है, आपका विनोद कहाँ चला गया है? उस समय नारद मुनि ने कहा कि महाराज !आज मैं आपके चरणों को स्पर्श करने आया हूँ, जिससे मुझे आत्मिक शान्ति प्राप्त हो जाए। उन्होंने पूछा कि आत्मिक शान्ति क्यों नहीं? नारद ने कहा कि महाराज !न प्रति क्यों नहीं है।

मुनिवरों !तब सनत्कुमार ने कहा कि जिन विद्याओं को तुमने पाया है और जिनको नहीं पाया है, उन्हें निर्णय कराओ। उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि भगवन् !मैंने षट् शास्त्रों को, वेदों को, उपवेदों को, गणित विद्या को, सर्वज्ञ विद्याओं को पाया है परन्तु आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है। महर्षि नारद के इस आदेश को पा करके, महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !यह जानकारी सर्वोत्तम है, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। यह जानकारी सबसे मनोहर और विचित्र है। आज तुम जानकारी को ऊँचा बनाओ, यह जानकारी तुम्हें संसार में रमण करा देगी। नारद मुनि ने कहा कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इस जानकारी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है संसार में।

वाणी की उपासना

इस आदेश को पाकर महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि इससे बढकर भी एक पदार्थ है, और वह है वाणी। आज तुम वाणी की उपासना करो, यथार्थ उच्चारण करो, जो भी वाक्य बोलो, वह यथार्थ बोलो। यथार्थ उच्चारण करने से वाणी में ओज और तेज आ जाएगा। यह वाणी, वह पदार्थ है कि महर्षि शृङ्गीऋषि महाराज ने 84 वर्ष तक मिथ्या का कोई भी वाक्य उच्चारण नहीं किया, जो कहा करते थे, वहीं यथार्थ हुआ करता था। यदि किसी मनुष्य को यह कह दिया कि मृत्यु को प्राप्त हो जा, तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता था। हे नारद !अनेक ऋषियों का ऐसा प्रमाण मिलता है। महर्षि अत्रि मुनि का एक आदेश मिला। महर्षि अत्रि मुनि ने अपने जीवन में 120 वर्ष तक सत्यता का पालन करके देखा। यदि वह मार्ग में उड़ते हुए पक्षी को यह कहते कि यह पक्षी मेरे द्वार पर आ जाए, तो वह उड़कर उनके द्वार आ जाता था। हे नारद !यह वाणी बड़ा ऊँचा पदार्थ है, इससे मिथ्या उच्चारण न करो। तुम्हारी वाणी में ओज और तेज उत्पन्न हो जाएगा। यह वाणी वह पदार्थ है, जो तुम्हें परमात्मा से मेल करा देगी। यह वह अमूल्य पदार्थ है, जो हमें समुद्र रूपी सागर से पार ले जाती है।

आज तुम वाणी की उपासना करो, वाणी से यथार्थ उच्चारण करो।

मन

देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस वाणी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है, इस संसार में? सनत्कुमार ने कहा इस वाणी से बढ़कर भी एक पदार्थ है, और वह है मनी राम। यह मन बड़ा ऊँचा है। वायु से भी तीव्र गति वाला है। यह मन तुम्हें इन्द्र लोक तक पहुँचा देगा। इस मन को स्थिर करो, । यह तुम्हें बहुत ऊँचा पहुँचा देगा।

मुनिवरों !इसका निर्णय देते हुए दार्शनिकों ने कहा है कि जैसे किसी मानव ने, किसी ब्रह्मचारी ने, किसी ब्रह्मचारिणी के सौन्दर्य को देखा या किसी ब्रह्मचारिणी ने किसी ब्रह्मचारी के सौन्दर्य को देखा और ब्रह्मचारिणी से प्रश्न किया जाए कि हे प्रिय देवकन्या !तूने इस सौन्दर्य को देखा है। वह कौन सा पदार्थ तेरे द्वारा है, जिससे तूने इस सौन्दर्य का देखा है। उस समय उत्तर मिलेगा कि मेरे नेत्रों ने इस सौन्दर्य को देखा है। उस समय दार्शनिक कह रहा है कि अरे, नेत्र तो जड़ पदार्थ है, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है। आगे दार्शनिक कह रहा हैं कि नेत्रों के पीछे पिछला पटल है। उन नेत्रों से ज्योति पाकर के, उस पिछले पटल ने, उस सौन्दर्य को देखा। दूसरे दार्शनिक ने कहा कि भाई! पिछला पटल भी तो जड़ पदार्थ है, इसमें देखने की सत्ता कहा है? आगे दार्शनिक कह रहा है कि नहीं, पिछले पटल ने उन वासनाओं को ले जाकर तन्मात्राओं के समक्ष रखा। तन्मात्राओं से यह संसार रचा हुआ है। जिन तन्मात्राओं से सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने उस विशाल संसार को रचा है। तन्मात्राओं ने सौन्दर्य को देखा है। आगे दार्शनिक कह रहा है कि तन्मात्रा भी तो प्रकृति के पदार्थ हैं, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है? उस समय दार्शनिक कह रहा है अरे, इन तन्मात्राओं ने सब कुछ इस मनीराम के द्वार पहुँचा दिया है। यह मनीराम स्थिर है तो निर्णय अच्छा करेगा, और यदि चंचल है तो इसकी विलक्षण गति हो जाएगी, मनुष्य की मृत्यु का सामान बनाने लगेगा। एक प्रमाण हमारे समक्ष आ पहुँचा है। सनत्कुमार ने नारद से कहा सुनो, इस प्रमाण को, यह एक अलंकार है। मन कैसे स्थिर होगा, सुनो।

मन की स्थिरता

एक द्रव्यपति थे, उनके द्वार एक सेवक जा पहुँचा, और उनसे कहा कि मैं आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। द्रव्यपति ने कहा क्या, वेतन लोगे? उस सेवक ने कहा, महाराज !मैं वेतन कुछ नही लूंगा परन्तु मेरा एक नियम है, कि जब मुझे कार्य करने को नहीं मिलेगा, तो तब ही मैं आपको मृत्यु प्राप्त करा दूंगा। द्रव्यपति ने कहा कि अच्छा, तुम मेरे द्वारा कार्य करो। वह सेवक द्रव्यपति के द्वारा कार्य करने लगा। द्रव्यपति जो उच्चारण करता, सेवक उस कार्य को कर देता। कुछ समय के पश्चात्, उस द्रव्यपति को कोई कार्य उस सेवक को देने को न रहा। द्रव्यपति बहुत चिंतित होने लगा। एक समय मार्ग में भ्रमण कर रहे थे, वहाँ एक बुद्धिमान मिला और उसने द्रव्यपति से कहा कि आप तो बड़े थकित होते चले जा रहे हैं। तब उन्होंने सब वार्त्ता कह सुनाई कि मेरे द्वार पर एक सेवक आया हुआ है। उसने मुझसे वचन लिया हुआ है कि जब उसे कोई कार्य करने को न रहेगा तो वह मुझे मृत्यु को पहुँचा देगा। अब मेरे पास उसको कार्य देने के लिए नहीं रहा है, इसलिए मैं उसके भुजों से नहीं बचूंगा। उस समय बुद्धिमान ने कहा कि भाई !तुम उसको अपने कार्य में क्यों लगा रहे हो, संसार के कार्य में लगा दो। उसको छूटकारा नहीं मिलेगा, और तुम उसके भुजों से बच जाओगे। बुद्धिमान की वार्त्ता सुनकर द्रव्यपति गृह आया और आकर उसको संसार का कार्य बता दिया कि जाओ, तुम संसार का कार्य करो, तुम्हें छुटकारा नहीं मिलेगा। वह संसार के शुभ कार्य करने लगा, उसको छुटकारा नहीं मिला और द्रव्यपति उसके भुजों से बच गया।

यही दशा मनुष्य के मन की है। यदि मन को संसार के शुभ कार्यों में और परमात्मा के चिन्तन में लगाए रखते हैं, तो तब तक यह यथार्थ रहता है और जब इसको छुटकारा मिला, संकल्प विकल्प आए, तो मनुष्य मृत्यु का सामना करने लगता है।

बुद्धि

सनत्कुमार ने नारद मुनि से कहा कि हे नारद !आज तुम मन को स्थिर करो, मन की याचना करो। यह मन बड़ा ऊँचा पदार्थ है, यह मन तुम्हारा परमात्मा से मिलान करा देगा। नारद मुनि ने कहा कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस मन से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है? सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !इस मन से बढ़कर बुद्धि है, पर यह परमात्मा की देन है, बड़ा ऊँचा पदार्थ है। आज परमात्मा से उच्चारण करो, कि हे परमात्मा !हमें बुद्धि दो, जिससे विधाता !हम संसार को अच्छी तरह निर्णय कर सकें। यह मन सब वासनाओं को ले जाकर, बुद्धि को दे देता है, कि हम उस सौन्दर्य को क्या मानें। बुद्धि निर्णयात्मक है।

मुनिवरों !हमारे आचार्यों ने बुद्धि कई प्रकार की मानी है। बुद्धि, मेघा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा इन चार प्रकार की बुद्धियों का विवेचन आता है। आज समय आज्ञा नहीं दे रहा है। किसी द्वितीय काल में बुद्धि का विवेचन किया जाएगा।

पूज्य महानन्द जी भगवन !बुद्धि का सूक्ष्म सा आदेश दे दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेव नहीं, बेटा !द्वितीय काल में, अच्छा

तो मुनिवरों !देखो, बुद्धि हमारे जीवन की संचालक है। बुद्धि से कार्य करना चाहिए। मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा तीनों प्रकार की बुद्धि आ जाने के पश्चात् यह आत्मा परमात्मा में रमण कर जाता है। मोक्ष प्राप्त हो जाता है। आज हम इन बुद्धियों पर विचार नहीं करते।

इसके पश्चात् नारद मुनि ने कहा महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ, कि बुद्धि से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

अन्तःकरण

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !इस बुद्धि से बढ़कर यह अन्तःकरण है। तुम इस अन्तःकरण को पवित्र बनाओ। इसको पवित्र बनाने से तुम्हारा जीवन शिरोमणि बन जाएगा। यह अन्तःकरण वह पदार्थ है, कि जिसमें जितने बड़े लोक लोकान्तर हैं, जैसे हमारा यह पृथ्वी मण्डल है ऐसी ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ इस सूर्य मण्डल में समा जाती हैं और जैसा सूर्य मण्डल है ऐसे ऐसे एक सहस्र मण्डल बृहस्पति मण्डल में समा जाते हैं। परन्तु यह सूक्ष्म सा अन्तःकरण है, इसमें यह सब लोक लोकान्तर समा जाते हैं। ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड, जो परमात्मा का रचा हुआ है, इस अन्तःकरण में समा जाता है। यह अन्तःकरण इतना पवित्र है, इसको ऊँचा बनाओ। बुद्धियों को अन्तःकरण में रमण कर दो। जब बुद्धि अन्तःकरण में रमण करने लगेगी, तो तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र बन जाएगा।

उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज !मैं अन्तःकरण की ओर अधिक व्याख्या नहीं चाहता, मैं तो यह जानना चाहता हूँ, कि इस अन्तःकरण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

स्मृति

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !इस अन्तःकरण से बढ़कर यह स्मृति है। महानन्द जी दूर न जाओ, आज हमारे जीवन पर विचार कर लो। आज से हमने लाखों वर्षों पूर्व वेद संहिताओं का पाठ किया और आज पुनः से अपने कर्मों के अनुकूल, तुम्हारे समक्ष उस वेद पाठ को कर रहे हैं। आज हमें पुनः से सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यह जो वार्ता तुम्हारे समक्ष आती चली जा रही है यह लाखों वर्ष पूर्व हमने वेदों का मन्थन किया। यह सब

क्या है? यह सब अमूल्यता स्मृति की है। जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हमारे अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं, उनके जाग्रत होने का नाम स्मृति है। आज मुझे मेरे प्यार महानन्द जी ने कहा, कि यह आपका वाक्य कैसे होता है। आज के विज्ञान में यह वार्त्ता भी आ गई। आज तुम्हें विचारना चाहिए, यह स्मृति है। हे नारद !स्मृति को ऊँचा बनाओ।

इस निर्णय के पश्चात् नारद मुनि ने कहा महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ कि स्मृति से बढ़कर भी इस संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

ब्रह्मचर्य

सनत्कुमार ने कहा कि स्मृति से बढ़कर ब्रह्मचर्य है। यह ब्रह्मचर्य ओज और तेज को देने वाला है, यह ब्रह्मचर्य ब्रह्म में रमण करा देता है। आज तुम ब्रह्मचारी बनो, ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। यदि हम ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं करते, तो हमारा जीवन नाम मात्र है, यह कोई मानवता नहीं है। हे नारद !यहाँ माता गार्गी ने भी ब्रह्मचर्य की बड़ी प्रशंसा की है, और कहा है कि ब्रह्मचारी, मनुष्य संसार में ऊँचा कहा जाता है, तेजस्वी कहा जाता है, आदित्य कहा जाता है, मृत्युञ्जय नाम से कहा जाता है, उसको रुद्र कहते हैं। आज इस ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। ब्रह्मचर्य से मनुष्य मृत्यु को विजय कर लेता है। आज तुम ब्रह्मचारी बनो। ब्रह्मचारियों की अनेक वार्त्ता हैं। लोमश मुनि ने जीवन भर ब्रह्मचर्य की रक्षा की। देखो, अन्त में कितनी आयु वाले बने, और मोक्ष को प्राप्त किया।

ब्रह्मचर्य की रक्षा करने वाले, महर्षि अगस्त्य तीन आचमन में समुद्र पान करने वाले बने। आज मनुष्य ने इस रहस्य को जाना नहीं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मा ने मुझे महर्षि अगस्त्य के आदेशों का निर्णय दिया। महर्षि अगस्त्य ने तीन आचमनों में समुदों को पान कर लिया। सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !ब्रह्मचर्य वह होता है, जो समुद्रों के समुद्रों को पान कर लेता है। वह तीन आचमन कौन से हैं? वह ज्ञान, कर्म और उपासना, तीन प्रकार की विद्याएं और यह संसार रूपी समुद्र है। इन तीन प्रकार की विद्याओं का पान करना, इस संसार को पान कर लेना है। संसार को खारी बनाकर त्याग देना है। जिज्ञासु को, आज विचारना चाहिए, कि महर्षि अगस्त्य ने तीन प्रकार की विद्याओं को धारण करते हुए, इस संसार रूपी समुद्र को, जो हमें दृष्टिगोचर हो रहा है, इससे पार हो गए। इसको खारी बनाकर त्याग दिया था। मुनिवरों !इसके पश्चात् नारद मुनि ने ब्रह्मचर्य की व्याख्या पाते पाते प्रश्न किया कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ कि ब्रह्मचर्य से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

अन्न

नारद मुनि के इस आदेश को पाकर सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !ब्रह्मचर्य से बढ़कर यह अन्न है। इस अन्न और वनस्पतियों की याचना करो। यह अन्न हमें ओज और ब्रह्मचर्य का देने वाला है, यह अन्न हमारा पूज्य है, इस अन्न की याचना करते चले जाओ। नारद मुनि ने कहा कि क्या यह अन्न ही सबसे बड़ा है।

पृथ्वी

महर्षि सनत्कुमार ने कहा नहीं नारद !इस अन्न से बढ़कर पृथ्वी है, तुम पृथ्वी की याचना करो, यह पृथ्वी हमारी माता है। हमारी दो प्रकार की माता होती हैं, एक जननी माता और एक पृथ्वी माता। जब हम माता के गर्भस्थल से आते हैं, तो पृथ्वी माता के गर्भस्थल में आ जाते हैं। जैसे माता के गर्भाशय में, माता की लोरियों द्वारा हमारा लालन पालन होता है, इसी प्रकार जब माता पृथ्वी की गोद में आते हैं तो नाना वनस्पतियों से और अन्न द्वारा हमारा पालन होता है। यह पृथ्वी हमारी कल्याणकारी है, इस पृथ्वी को धेनु कहा जाता है,

इस पृथ्वी को नाना प्रकार से पुकारा गया है। हे नारद !यह पृथ्वी हमारी माता है, हम इसके गर्भ में आए हैं। आज हम इस पृथ्वी की याचना करें, इस पृथ्वी को विज्ञान से जानें। यह पृथ्वी इतनी भोली है, कि जिस पदार्थ की हम कल्पना करते हैं वह हमारी इच्छा के अनुकूल दे देती है। राजा रावण के पुत्र नारायन्तक ने तो कहा कि यह पृथ्वी इतनी भोली है कि इसमें कैसा भी वैज्ञानिक बन जाओ, आध्यात्मिक वैज्ञानिक को आत्मिक शान्ति देती है, और भौतिक वैज्ञानिक को भौतिक विज्ञान। मनुष्य, इसका अनुसरण करता है और विचारता है कि हे पृथ्वी माता !तू वास्तव में कामधेनु है, कामनाओं की पूर्ति करने वाली है, तू आ और हमारी कामनाओं की पूर्ति कर। तू देवी है, वेदों ने तुझे देवी नाम से पुकारा है।

मुनिवरों !यहाँ वैज्ञानिकों ने मन की कल्पनाओं से खोजा कि हम तो इसमें से नाना प्रकार के वज्रों की, मणियों को पाएंगे तो पृथ्वी वह ही वज्रों की मणियाँ उसे दे देती है। मनुष्य ऊँचे ऊँचे पदार्थो की कामना करता है, वह प्राप्त हो जाते हैं। हे पृथ्वी !तेरे से विद्युत की कामना करते हैं, तू विद्युत को देने वाली है। राष्ट्र की कामना करते हैं तो हे पृथ्वी !तू राष्ट्र को देने वाली है। हे पृथ्वी !हम वास्तव में तेरी गोद में आए हैं। जननी माता के गर्भ से इस पृथ्वी माता की गोद में ऊँचे कर्म करते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आदेश पाकर नारद मुनि ने सनत्कुमार से कहा कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या पृथ्वी से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

तेज

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !इस पृथ्वी से बढ़कर यह तेज है, जो संसार में ओत प्रोत हो रहा है। संसार को चला रहा है। यह तेज ही जब वृष्टि करता है, तो पृथ्वी से सब तत्त्व उत्पन्न हो जाते हैं। यह तेज जब समुद्रों में पहुँच जाता है, तो जलों का उत्थान होता है। जल से मेघ बनते हैं। मेघों से वृष्टि हो जाती है। वृष्टि में नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। जिनको मनुष्य खाता है, और इससे ब्रह्मचर्य आता है। ब्रह्मचर्य सुरक्षित होता है, तो स्मृति ऊँची होती है। स्मृति ऊँची होती है तो अन्तःकरण पवित्र होता है। जब अन्तःकरण पवित्र होता है तो बुद्धि पवित्र होती है और जब बुद्धि पवित्र होती है, तो यह मन पवित्र होता है। जब मन पवित्र होता है, तो यह वाणी पवित्र होती है और जब वाणी पवित्र होती है, तो हम संसार की जानकारी अच्छी प्रकार कर लेते है।

इसके पश्चात् नारद मुनि ने कहा, महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ, कि तेज से बढ़कर भी पदार्थ है संसार में?

अंतरिक्ष

सनत्कुमार ने कहा, हे नारद !इस तेज से बढ़कर यह अन्तरिक्ष है। जो वाक्य आज हम उच्चारण कर रहे हैं, यह अन्तरिक्ष में रमण कर जाता है, और अन्तरिक्ष से यह वाक्य आता है, हमारी बुद्धियों के अनुकूल। जो विद्या हमने पाई है, उस अन्तःकरण के अनुकूल मेधा, बुद्धि उत्पन्न होकर उसका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से लग कर वही वाक्य उच्चारण करने लगता है। इसको मेधा बुद्धि कहते हैं। अन्तरिक्ष से सम्बन्धित है। यह अन्तरिक्ष हमारी बुद्धियों का प्रेरक है। हमारे जीवन का प्रेरक है, आयु का प्रेरक है, अग्नि क प्रेरक है। यह प्रेरणा करने वाला अन्तरिक्ष ही है।

नारद मुनि ने कहा, महाराज !इस अन्तरिक्ष से बढ़कर भी कोई पदार्थ है।

अम्बर

सनत्कुमार ने कहा कि अरे, इससे बढ़कर यह अम्बर है। जिसमें देखो, लोक लोकान्तर रमण करते हैं। चन्द्र

मण्डल, सूर्य मण्डल, ध्रुव मण्डल, सप्तऋषि मण्डल, भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम् ये लोक लोकान्तर हैं। आरुणि मण्डल है, अगस्त मण्डल है अचंग आदि लोक लोकांतर हैं आज लोक लोकान्तरों का प्रकरण नहीं आ रहा है, संक्षेप में उच्चारण कर रहे हैं, कि ये सब लोक लोकान्तर अम्बर में रहते हैं। अपनी अपनी परिधि में, अपना अपना कार्य करते हैं।

नारद मनि ने कहा कि महाराज !इस अम्बर से बढ़कर भी कोई पदार्थ है?

प्राण

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !अम्बर से बढ़कर यह प्राण है, इस संसार में जो सबमें ओत प्रोत हो रहा है, संसार का कल्याण कर रहा है। यह प्राण आत्मा का सहायक है। यह प्राण इस शून्य प्रकृति को चलाने वाला है। आज हे नारद !तुम प्राण की याचना करो। यह प्राण तुम्हारी आत्मिक शान्ति का प्रेरक है।

मुनिवरों !नारद जी प्राण का आदेश पाकर शान्त हो गए, और कहा कि मुझे आत्मिक शान्ति प्राप्त होने जा रही है। उस समय सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद !इस प्राण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है, और वे परमपिता परमात्मा है, जो प्राण को भी देने वाला है। जो महान संसार को चलाने वाला है, हमारी आत्मा में प्रेरणा देने वाला है। हे नारद !तुम्हें आत्मिक शान्ति पानी है, तो परमपिता परमात्मा की गोद में चले जाओ।

अहा !नारद मुनि मौन हो गए। आज मुझे कितनी ऋषि की प्रेरणा मिली है। संसार के ज्ञान विज्ञान का मुझे निर्णय कराया है। मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान और सब तेजों का विज्ञान मुझे निर्णय कराया।

तो यह है मुनिवारों !आज हमारी प्राणों की व्याख्या ।

पूज्य महानन्द जी –'धन्य हो भगवन !किसी स्थान पर तो आप बड़ी बुद्धिमत्ता की वार्ता करते हैं ।

पूज्यपाद गुरुदेव –(हास्य के साथ(तो महानन्द जी !प्रतिदिन बुद्धिमत्ता की नहीं ।

पूज्य महानन्द जी) हास्य के साथ(नही भगवन !आज तो बहुत ही बुद्धिमत्ता की हैं।

अच्छा धन्यवाद

तो मुनिवरों !आज तुम्हारे समक्ष परमात्मा और प्राण की व्याख्या कर रहे थे। हे प्राण !तू वास्तव में शुद्ध और पवित्र है। हमारे शरीर को पवित्र बनाने वाले प्राण !आ, हमारा कल्याण कर। हम अपना कल्याण चाहते हैं। हे भगवन् !हमें सोम का पान करा। हे भगवन् !हम तेरे द्वारा अमृत पान करने आए हैं। आज के आदेशों का अभिप्राय था कि हे कल्याणकारी इन्द्र !तू आ, और हमारा कल्याण कर। हे इन्द्र !तू हमारे जीवन का संचालक है। अपने जीवन को ऊँचा चाहते हैं। हमारा कल्याण कर।

यह है मुनिवरों !आज का हमारा आदेश। अब वेद का पाठ होगा और इसके पश्चात् हमारी वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

01 04 1962 सृष्टि रचना का उद्देश्य

देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष वेदों का मनोहर गान गा रहे थे। यह तो तुम्हें वेदमन्त्रों के पाठ से प्रतीत हो गया होगा, कल के समान आज भी जटा पाठ के अनुसार वेदमन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे। जैसा कि हम पूर्व स्थान में कह चुके हैं कि वेदों का गायन अनेक प्रकार से होता है।

वेद गायन से शुद्धि

आज वेदों का गान गाते समय हृदय में बड़ी मनमन्ता उत्पन्न हो रही थी, और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि

जैसे विधाता हमारी रसना में और हमारे कण्ठ में विराजमान हो करके हमें उत्साह दे रहा है, कि मेरी वाणी का ओर अच्छी प्रकार से प्रसार करो। जिससे कि मेरी वाणी सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत प्रोत होकर, इस अन्तरिक्ष को, इस भू मण्डल को पवित्र कर दें, अर्थात् यह सारा संसार पवित्र हो जाए। क्या करें समय का अभाव है। आज हमारी इच्छा तो यह थी, कि उच्च स्वर से और अधिक वेदों का गान किया जाए, जिससे कि अन्तरिक्ष में वेदों के मन्त्रों का रमण हो करके, वातावरण अच्छी तरह शुद्ध हो जाए।

यह ब्रह्माण्ड, यह सारी सृष्टि, आपकी बनाई हुई है। हमारी रसना में आपका ही बल दिया हुआ है। हमारे कण्ठ में भी आप विराजमान हैं, आपकी ही कृपा से, आपकी ही सत्ता से हम वेदमन्त्रों का गान कर पाते हैं। आपकी वाणी कहती है कि यह वायुमण्डल, यह अन्तरिक्ष वेदमन्त्रों से ही शब्दाययमान हो करके, शुद्ध हो जाता है। यह आपकी बड़ी मनोहरता है।

हमारे आँगन में एक वार्ता नहीं आ रही है कि आपका बनाया हुआ संसार क्या पदार्थ है? इसको क्या आपने रचाया है? और यह क्यों रचाया है? और आपने कौन कौन से पदार्थों से यह संसार बनाया है।

आत्मा, परमात्मा का स्वरूप अहा !आज परमात्मा से निवेदन करें, परमात्मा से उच्चारण करें कि हे परमात्मन् !आपके बनाए हुए संसार में, आज प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या दुःखित होती चली जा रही है, एक मानव दूसरे मानव पर घात लगाए बैठा है। परन्तु वेदवाणी तो कहती है कि परमात्मा ने संसार को मनोहर उत्पन्न किया है। वेदवाणी के उच्चारण से इस विशाल वायु मण्डल को शुद्ध किया जाए, जिससे कि मानव के अन्तःकरण में शुद्ध भावानाएं आएं।

कुछ मानव कहते है और महानन्द जी का संकेत भी बारम्बार आता है, कि मानव अपने को परमात्मा का रूप मानता है।

परन्तु हे विधाता !यदि आप ही यह आत्मा है, या यदि आप ही परमात्मा है, तो आपके बनाए हुए संसार में एक दूसरे के रक्त के अभिलाषी क्यों बन बैठे हैं? यह क्या आपका ऐसा बनाया हुआ ब्रह्माण्ड है, जिसमें मानव दुःखित होता चला जा रहा है। मानव में परस्पर शुत्रुता क्यों है? इस प्रकार का यह संसार क्यों है? यह तो बड़ा विचारणीय प्रश्न है।

बेटा !एक समय महर्षि अटुल मुनि महाराज, देवर्षि नारद, सनत् कुमार आदि आचार्य, लोमश मुनि महाराज, विभाण्डक ऋषि महाराज, ऋषि पारा मुनि और उनके पुत्र धुन्ध ऋषि महाराज, आप्त ऋषियों और महान दार्शनिकों के समाज में विचार चल रहा था कि यह परमात्मा का बनाया हुआ संसार तो है, परन्तु यह इस प्रकार का क्यों है? इस प्रकार के संसार में परमात्मा का क्या महत्त्व है? हम परमात्मा को क्या मानें? स्वयं परमात्मा क्या पदार्थ है? यदि यह आत्मा ही परमात्मा है, तो एक मानव दूसरे का शत्रु क्यों बना बैठा है? और कौन किसका राजा बना बैठा है? कौन किसकी प्रजा बनी बैठी है? आज का मानव इस पर दार्शनिक दृष्टि से विचार करता है। परन्तु हम तो वेदोक्त मन्त्रों के आधार पर विचार करते है।

सृष्टि का निर्माण कैसे

परमात्मा ने इतने बड़े ब्रह्माण्ड को, इस प्रकृति से बनाया है। अहा !उस परमात्मा ने ब्रह्मात्व से इस संसार को उत्पन्न किया है। जैसे ब्रह्मा नाना प्रकार से सुन्दर वेदी को रच देता है, वेदी को रच कर वेदमन्त्रों के द्वारा सब कुछ सिद्ध करके देवों)भौतिक (तथा देवों)विद्वान होता, उद्गाता, अध्वर्यु आदि (की स्थापना करके यज्ञवेदी को उत्पन्न कर देता है। अरे, अब हमारे समक्ष वेदी के दो रूप उपस्थित हो जाते है। एक भौतिक वेदी, दूसरी आध्यात्मिक वेदी । देखो, भौतिक वेदी हमको आध्यात्मिक यज्ञ में पहुंचा देती है।

देखो, हमारे अन्तःकरण में भी यज्ञशाला विराजमान है। उसमें आत्मा आहुति देने वाला हैं परमात्मा सामग्री देने

वाला है और मुनिवरों !परमात्मा ब्रह्मा बन करके आत्मा को प्रेरणा देकर के और ऊँचे पथ पर चला रहा है और इसी प्रकार से संसार को भी चला रहा है।
देव मुनि नारद ने कहा कि प्रश्न तो यह था कि जो परमात्मा इस संसार में ओत प्रोत है, लोक लोकान्तरों को उत्पन्न कर रहा है, जिसकी सृष्टि का कोई अंत नहीं पाता, इस पर यदि यह आत्मा परमात्मा का अंश है, तो परमात्मा के बनाए अनुकूल संसार को, अनन्त ब्रह्मांड को क्यों नहीं जान पाता? मुनिवरों !देखो, यह पृथ्वी मण्डल हैं, पृथ्वी मण्डल के ऊपर बुध मण्डल है, बुध मण्डल के ऊपर मंगल है, मंगल से ऊपर अनेक चक्षणि आदि लोक है। इस विशाल विश्व में नाना सूर्य मण्डल हैं, नाना चन्द्र है, अगस्त मुनि मण्डल, वशिष्ठ मुनि मण्डल, आरुणि मण्डल और नाना मण्डल ध्रुव लोक, बृहस्पति लोक, अचंग लोक, मचंग लोक, भू :भुवः और स्वः आदि लोक लोकान्तर परमात्मा के बनाए हुए है। अहा !यह परमात्मा की कैसी मनोहरता है? यदि यह आत्मा परमात्मा का ही अंश है, तो यह क्यों नहीं, इस परमात्मा की बनाई सृष्टि का अन्त पा लेता? इस पर आत्मा को परमात्मा का अंश मानने वाले यह समाधान देते है कि यह आत्मा जब परमात्मा का दर्शन करके, परमात्मा बन जाता है तब वह इन सबका प्रत्यक्ष कर ही लेता है।
उस दार्शनिक महर्षियों के समाज में पारा ऋषि ने कहा कि यह आत्मा किसके दर्शन करता है? उस परमात्मा के दर्शन करता है। उसके दर्शन से आत्मा ब्रह्म तो अवश्य बन जाता है। यह तो सत्य है कि परब्रह्म को पाकर ब्रह्म बन जाता है। इसमें कोई संकोच नहीं। यह एक विचारणीय विषय है। देखो, जब मानव की स्मरण शक्ति ऊँची होती है, योगी बन कर आत्मदर्शन करके, परमात्मा के दर्शन की स्थिति में पहुंच जाता है। परन्तु वह ब्रह्म पद पर पहुंची आत्मा परब्रह्म कदापि नहीं बन पाती, कदापि नहीं बनेगी। महान दार्शनिक महर्षि अटुल मुनि, महर्षि उद्दालक मुनि, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि, अष्टावक्र, आचार्य आदियों का यही अटल निश्चय है।
एक बार राजर्षि जनक महाराज ने भी आचार्य अष्टावक्र से याज्ञवल्क्य के वाक्यों का प्रमाण देते हुए यही प्रश्न किया था, मुनिवरों !उस समय आचार्य अष्टावक्र ने यही कहा था कि आत्मा परब्रह्म का साक्षात्कार करके ब्रह्म तो बन जाता है, परन्तु परब्रह्म कदापि नहीं बनता। याज्ञवल्क्य महाराज के उपदेश को आपने ठीक ठीक समझा नहीं। महर्षि याज्ञवल्क्य ने तो कहा था कि प्रभु ने संसार को रचा है। यह संसार गणों में विभक्त है। इस संसार से वह गणनीय है। वह हमारा स्वामी है। हम उसके आश्रित हैं। उसी ने संसार को उत्पन्न किया है। इसको पाकर के आत्मा ब्रह्म बन जाता है, परन्तु परब्रह्म कदापि नहीं बनता।
बेटा !यह एक आचार्य का आदेश नहीं, यह तो सब आचार्यों का आदेश है। हमने अपने गुरु ब्रह्मा जी से कहा था कि महाराज !हम यह जानना चाहते है कि यह ब्रह्मा क्या पदार्थ है। क्योंकि आपने तो व्याकरणादि सहित चारों वेदों का स्वाध्याय किया है। आप एक एक अक्षर से कई कई प्रकार से अनुवाद करने वाले हैं।
मुनिवरों !उस समय गुरु ब्रह्म जी ने कहा कि जैसे माता का और पुत्र का, पिता का और पुत्र का सम्बन्ध होता है, वैसे ही आत्मा परमात्मा का सम्बन्ध माना गया है।
हे मुनिवरों !एक समय हमारे महानन्द जी ने कहा कि परमात्मा ब्रह्मा की शक्ति बनकर संसार को उत्पन्न करता है, उनके ऐसे प्रश्नों का समाधान पूर्व समय में कर चुके है। परन्तु महानन्द जी के अधिक आग्रह के कारण इसका समाधान पुनः इस प्रकार से उपस्थित करते है।
परमात्मा को ही ब्रह्मा कहते है। परमात्मा स्वयं ही सृष्टि की स्थापना करता है। प्रश्न होता है, कि कैसे बनाता है? किस पदार्थ से बनाता है?
मुनिवरों !देखो, जैसे यज्ञ का ब्रह्मा यज्ञशाला में विराजमान होकर अपने स्वयं के शरीर से भिन्न द्रव्यों का

आयोजन यज्ञ के लिए करता है और कराता है, यज्ञवेदी को रचाता है, तो यज्ञमान उससे भिन्न होते है। इसी प्रकार से मूल प्रकृति को महत्व प्रदान करके सृष्टि उत्पन्न करता है। यह प्रकृति प्रलय काल में अव्यक्त रूप थी। उसी सूक्ष्म प्रकृति को महत्तव रूप में परिवर्तित करके, इसमें प्राण प्रदान करके, इसमें क्रिया पैदा करके तन्मात्राओं को पैदा करता है। तन्मात्राओं से पञ्चभूत, बेटा !पञ्चभूतों से यह संसार बन गया है। बेटा !देखो, उस महान परमातमा ने उस सूक्ष्म और महान प्रकृति से संसार को बनाया। हमारे शरीरों को बनाया। इसमें अहंकार है, नाना प्रकार के विषय सूक्ष्म रूप से है।

अब विचारणीय प्रश्न यह है कि परमात्मा ने यह सब किसके लिए बनाया? अव्यक्त प्रकृति को इस प्रकार चेतन में लाने की परमात्मा को क्यों आवश्यकता पड़ी? क्योंकि परमात्मा तो पूर्ण है, निर्द्वन्द्व है, परमात्मा को स्वयं संसार में आने की क्या आवश्यकता है? और संसार को क्यों बनाने कि आवश्यकता है

प्रलय काल में जीव

मुनिवरों !जैसे माता अपनी लोरियों में बालक को जीवन दान करती है, उसी प्रकार हम आत्माओं के लिए परमात्मा ने इस सृष्टि को उत्पन्न किया है। प्रलय के समय यह सारी सृष्टि और सारे जीव उस परमात्मा के गर्भ में हो जाते हैं।

महानन्द जी ने अनेक बार कहा कि जैसे समुद्र का जल ही नदी, नद, तालाब और सरोवरों आदि में पड़कर भिन्न भिन्न आकार एवं रूप धारण कर लेता है तथा उन सब जलाशयों में एक सूर्य का ही अनेक रूप में प्रतिबिम्ब पड़ता है, ऐसे ही परमात्मा के ही ये सब रूप एवं अंश है।

पर महानन्द जी, आप निराकार परमात्मा के लिए साकार पदार्थों का, बने हुए पदार्थों का कैसे उदाहरण देते हैं? अरे, बेटा !परमात्मा तो निराकार है। किसी निराकार का और अपरिणामी पदार्थ की युक्ति देते तो सुन्दर होता, बुद्धि संगत होता। परमात्मा सदा अपरिवर्तनशील है। उसके लिए अपरिवर्तनशील का उदाहरण कैसा और क्यों? ये उदाहरण तो परमात्मा पर कदापि घटते ही नहीं।

हे मुनिवरों !परमात्मा को प्रत्यक्ष और साक्षात्कार करने से पहले अपनी आत्मा को अच्छी प्रकार से समझो, जानो और अपनी आत्मा में उस परब्रह्म को पा लो। तब यह आत्मा भी परब्रह्म को पाकर ब्रह्म बन जाएगा, पर परब्रह्म कदापि नही बनेगा। यह अद्धितीय परब्रह्म कभी नहीं बनेगा। नही तो, यह आत्मा अपने कर्मों के चक्रों में फिरता ही रहेगा।

मुनिवरों !हमारे व्याख्यान का आरम्भ तो परमातमा ने सृष्टि को क्यों उत्पन्न किया? किसके लिए किया? क्यों ऐसा दुःख भरा संसार परमात्मा ने उत्पन्न किया ?

महानन्द जी ने एक समय कहा था कि यह तो परमात्मा खेल खेल रहा है।

अच्छा मुनिवरों !जरा विचार कीजिए, कि खेल कौन खेला करता है। खेल वही खेला करता है, जो अज्ञानी होता है। मुनिवरों !देखो, जैसे एक माता का बहुत छोटा सा पुत्र है, वह पुत्र तभी तक नाना प्रकार के खेल खेलता है जब तक बाल्यावस्था रहेगी, अज्ञानता रहेगी और जब उसे वेदों का ज्ञान हो जाएगा, महान ज्ञान हो जाएगा, वह परम पद की इच्छा में मग्न हो जाएगा, वह महान बन जाएगा। इस प्रकार से तो तुम्हारे कथनानुसार परमात्मा भी अज्ञानी हो जाएगा। जबकि परमात्मा तो ज्ञानियों का भी ज्ञानी है। परमात्मा हर प्रकार से पूर्ण है। खेल तो अपूर्ण खेला करता है।

देखो, महान मुनिवरों !हममें अपूर्णता है। हममें सीमितता है। इस काल कोठरी में, इस अजिर में, इस शरीर में आए हुए हैं। हमारा ज्ञान सीमित है, हमारा विज्ञान सीमित है, हमारे जो कार्य है, वे भी सीमित है। हमारे नियम भी सीमित है अर्थात हमारे सारे कार्य सीमित है अहा !परमात्मा को देखो, वह पूर्ण है, उसकी विद्या

असीमित है। वह महान बुद्धिमान है, वह हर प्रकार से पूर्ण, विद्या में पूर्ण, सृष्टि रचना में पूर्ण, हमारे कर्मों के फल देने में पूर्ण अर्थात् वह परमात्मा हर प्रकार से पूर्ण है। इसलिए परमात्मा कदापि खेल नहीं बनाता। इसलिए हमको मान लेना चाहिए कि परमात्मा हमारे लिए सृष्टि को उत्पन्न करता है और हम उसमें कर्म करने के लिए उद्यत हो रहे है।

महानन्द जी बार बार कहा करते हैं कि आजकल के सभी आचार्य मानते हैं, कि आत्मा और परमात्मा एक ही पदार्थ हैं। आप इसको ऐसा मान रहे हैं। पर मुनिवरों !यह हमारा ही व्याख्यान नहीं, यह हमारा ही आदेश नहीं। हम तो इस काल को, इस समय को, इस महान समय को बहुत समय से देखते चले आ रहे है। अहा !हमने तो यह विचार दार्शनिकों से पाया है। मुनिवरों !आदि दार्शनिकों का यही सिद्धान्त है, यही मानते चले आए हैं। बेटा !जो इससे भिन्न मानेगा, वह एक दूसरे को दोषी बनाएगा।

पूज्य महानन्द जीः तो गुरुजी !आधुनिक काल में ऐसा मानते हैं, कि आत्मा परमात्मा एक ही पदार्थ है। आपने तो इनको भिन्नता दे दी है। भगवन् !एक नहीं, आधुनिक काल के तो बहुत से, कुछ ऐसा ही कहते है। आधुनिक काल के ही नहीं, महर्षि व्यास मुनि जी ने भी ऐसा ही कहा है कि यह आत्मा ही परमात्मा बन जाता है। जब यह आत्मा परिश्रम करके अपने को पालेता है तो अपने को पाना ही ब्रह्म को पाना है। यह अपने आप ब्रह्म है। और कोई ब्रह्म नहीं है और न कोई कुछ है।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो महानन्द जी !यह महर्षि व्यास मुनि ने कहा है क्या?

पूज्य महानन्द जीः हाँ !भगवन् !ऐसा ही कहते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः अरे, कहते है या तुम मान रहे हो ऐसा? कौन कहता है? तुम्ही तो उच्चारण कर रहे हो या और कोई कह रहा है?

पूज्य महानन्द जीः नही भगवन् !आधुनिक काल के ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मनिष्ठ ऐसा माना करते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो महानन्द जी !इससे तो हमें ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि जैसे तुम भी ब्रह्मनिष्ठ बन गए।

पूज्य महानन्द जीः नहीं, भगवन् !हम तो ब्रह्मनिष्ठ नहीं बन रहे हैं। हमारा तो केवल आपसे एक प्रश्न है।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा, महानन्द जी !इसका तो संक्षेप में उत्तर यह है कि महर्षि व्यास मुनि ने ऐसा नहीं माना। महर्षि व्यास मुनि ने तो ऐसा माना है और वेदान्त में अपनी बहुत कुछ बुद्धि के द्वारा जाना और विज्ञान के द्वारा भी उन्होंने जाना और उन्होंने आध्यात्मिक विज्ञान पर बल दिया, बेटा !जो हमने महर्षि व्यास के वचनों को पाया और उन्होंने ऐसा कहा है कि यह आत्मा अपने को जब पा लेता है, तो अपने को पा करके परब्रह्म को पा लेता है, और परब्रह्म को पा करके यह आत्मा ब्रह्म बन जाता है। बेटा !तो हम तुम्हारे वाक्यों को सत्य मानें या व्यास मुनि के?

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !जिसकी आप कल भी व्याख्या कर रहे थे, कि महाराजा कृष्ण ने भी अर्जुन को बार बार ऐसा कहा है कि तुम मुझे पाओ, और मेरे अर्पण कर दो और मुझे जो पा लेता है, वह मेरे में ही रमण कर जाता है। तो यह कैसे? और आपने कल भी इसकी व्याख्या की और व्यास मुनि के वाक्यों को तो ऐसा कहते हैं, तो महाराजा कृष्ण के वाक्यों को क्या कहेंगे?

पूज्यपाद गुरुदेवः महानन्द जी !बेटा !तुम इस वार्त्ता को जान तो पाते नहीं, वैसे ही प्रश्न कर देते हो। महाराजा कृष्ण ने अर्जुन से कई स्थान में कहा है कि हे अर्जुन !अपने जन्म जन्मान्तरों की बहुत सी वार्त्ताओं को मैं जानता हूँ और तू नहीं जानता। बेटा !यह तो तुम जान गए होगे। हमारे कथनानुसार भी और हमारी स्थिति को जान करके भी तुम्हें यह जानना ही होगा कि ये जन्म जन्मान्तरों के संस्कार मानव को कहाँ तक ले जाते है। तो महानन्द जी !इससे हमें ज्ञात होगा, कि महाराजा कृष्ण ने केवल एक ही गान गाया, जो हम कल उच्चारण

कर रहे थे। गान तो हमने गाकर वर्णन नहीं किया, पर उन्होंने यही गान गाया कि देखो, मैं जानता हूँ और तू नहीं जानता, यह आत्मा अमर है, अखिल है, विभु है।

पूज्यपाद गुरुदेवः देखो, !यह परमात्मा महान है, यह न कदापि जन्मता है और न कदापि नष्ट होता है। देखो, यह भी है, तू मेरे अर्पण कर।

शिष्य के अज्ञान की समाप्ति

तो मुनिवरों !देखो, !यह यहाँ गुरु शिष्य का भाव आ जाता है। जब गुरु को शिष्य का अज्ञान समाप्त करना होता है, अज्ञान नष्ट करना होता है, तो ज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्य से कहता है कि हे अज्ञानी !तेरे में जो अज्ञानता है, वह मुझे दे, उसे तू मुझे अर्पण कर दे, और हर प्रकार से तू मुझे ही मान और जब तू मुझे मान जाएगा और अच्छी प्रकार जान जाएगा मुनिवरों !देखो, जब तू ज्ञानी को अच्छी प्रकार जानेगा, तो उस समय ज्ञानियों के भी ज्ञानी उस पूर्ण ज्ञानी परमात्मा को पा करके महान ज्ञानी बन जाएगा। तो बेटा !ऐसा उन्होंने कहा है। तो हम क्या कहें? बेटा !हम तुम्हारे वाक्यों को क्या कहें? हमारा यह आदेश है, हमने यह पाया है और यही सुना है, वही तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर दिया है।

बेटा !आगे जो तुम्हारी इच्छा हो वह मानते रहो, इसमें हमारी कोई हानि नहीं है।

नास्तिकता से पतन

पूज्य महानन्द जीः गुरुजी !इसमें हानि का तो कोई प्रश्न ही नहीं आता, भगवन् !हम परमात्मा को नहीं मानें तो भी इसमें हमारी क्या हानि होती है। हि हि हि हास्य.....

पूज्यपाद गुरुदेवः हाँ !यह तो तुम्हारा वाक्य सत्य है। यदि तुम परमात्मा को न मानो तभी तुम्हारी क्या हानि है? बेटा !इसमें तो बहुत बड़ी हानि हो जाएगी।

पूज्य महानन्द जीः भगवन् !क्या हानि हो जाएगी?

पूज्यपाद गुरुदेवः हानि यह हो जाएगी कि जो इतने बड़े ज्ञानी को नहीं मानता, जो इतने बड़े पूर्ण ज्ञानी को नहीं मानता, जिसने हमारे शरीर को बनाया, जिसने हमें नाना प्रकार के आहार करने के पदार्थ दिए, जिसने तत्त्व दिए है, आज यदि हम उस प्रभु का आदर नहीं करेंगे या उसको नहीं मानेंगे, तो बेटा !हम सा धूर्त संसार में कौन होगा? महानन्द जी !इसलिए तुम में धूर्तता आ जाएगी, और तुम अपने को खो बैठोगे और तुम्हारा सभी ज्ञान समाप्त हो जाएगा।

प्रभु विश्वास से लाभ

पूज्य महानन्द जीः गुरुजी !यदि हम परमात्मा को मानेंगे तो हमारा ज्ञान सुरक्षित रहेगा? यदि परमात्मा को न मानेंगे तो हमारा ज्ञान समाप्त हो जाएगा? हि हि हि हास्य.....

पूज्यपाद गुरुदेवः हाँ बेटा !हमारा तो ऐसा ही निर्णय किया गया है।

पूज्य महानन्द जीः तो जो आप निर्णय कर दें, क्या वही सत्य हो सकता है?

पूज्यपाद गुरुदेवः अरे, इसका यह अभिप्राय तो नहीं, जो तुम उच्चारण कर रहे हो। हम जो उच्चारण में, निर्णय दे देते है वह सत्यता पर आधारित है। भाई !देखों परमात्मा को मानने से हमारी आत्मा में बल आता है। देखो, किसी बली को प्रसन्न करने से, किसी बली के गुणगान से, आ जाने से हममें बल आता है। किसी दुर्बल मनुष्य को या किसी हीन मानव को प्रसन्न करेंगे और उसके गुण अपने में धारण करोगे तो बेटा !हममें दुर्बलता आएगी और जो ज्ञानियों के ज्ञानी को, उसके ज्ञान को अपने में धारण करोगे, तो हममें ज्ञान आता चला जाएगा। हम महान से महान बन सकते है। यह तो तुम मानते हो, कि जो जिसके निकट आ जाता है,

उसके परमाणु उसमें आ जाते है। उसके जितने परमाणु आते जाएंगे, उनकी उन जैसी और उतनी प्रकृति भी बनती चली जाएगी।

बेटा !देखो, इसलिए जब यह आत्मा परमात्मा के निकट जाने वाला बन जाता है, जितने निकट जाता रहता है, उतना परमात्मा की परिधि में घूम घूम करके कार्य करने लगता है, जितना उसके निकट जाता है, उतना ही प्रभु से हर प्रकार से ज्ञानी बन जाता है। यह तो तुम मानते हो। बेटा !ओर यदि इसको भी नहीं मानते, तो तुम्हें यह तो मानना पड़ेगा, कि परमात्मा ऐसा महान है, ऐसा देवों का देव है, जो प्रभु हमें सभी कुछ पदार्थ देकर के हमारे जीवन को चला रहा है। यदि हम उनको न मानें तो बेटा !हमारी हानि ही हानि है। हि हि हि हास्य.....

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !आपकी तो वही बात है कि जो हम कहते है, वही सत्य है।

पूज्यपाद गुरुदेवः अरे, फिर वही बात। अरे, यह तो हम नहीं कह रहे भाई !हमने तो जो पाया, आचार्यों से जो सुना और जो वेदों में खोज कर पाया, वह तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर रहे हैं, और जो कुछ अनुभव भी किया है

पूज्य महानन्द जीः तो गुरु जी !किसी का अनुभव आपसे उच्च भी तो हो सकता है?

पूज्यपाद गुरुदेवः हाँ, हाँ, अवश्य हो सकता है। हमसे तो बेटा !तुम्हारा अनुभव भी ऊँचा है। इसमें क्या संकोच की बात है। हमारे से तो सभी का अनुभव उच्च है। हमने तो जो खोजा है, वह तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर दिया। अब यह तुम्हारी महत्ता है, यह तुम्हारा विचार, इसे मानो या न मानो। यह तो तुम्हारी बुद्धि की अनुकूलता है, जो तुम्हारी बुद्धि स्वीकार करले तो मान लो, इसमें किसी की कोई हानि नहीं है। सत्य के उच्चारण करे में और सत्य को मानने में किसी को कोई हानि होती ही नहीं।

पूज्य महानन्द जीः चलो, भगवन् !।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अभी अभी हम महानन्द जी के बहुत से प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। अभी अभी हमारा व्याख्यान चल रहा था, कि परमात्मा को न मानने से हमारी हानि ही हानि है और परमात्मा को मानने से हम में बल आता है, विद्या आती है, हम श्रद्धालु बन जाते है। हम उस परमात्मा की गोद में चले जाते है जो परमात्मा हमारा हर प्रकार से लालन पालन कर रहा है।

तो मुनिवरों !परमात्मा ने इस संसार को हमारे लिए ही बनाया है। हम इस में अपना कर्म करने के लिए उदित हुए है।

सृष्टि के आरम्भ होने से पूर्व यह आत्मा परमात्मा से कहता है कि हे परमात्मन !हमारे लिए सृष्टि का आरम्भ करो, हम इस संसार में आना चाहते है, हमें पूर्व की भांति, उत्पन्न करो। हमारे जो शेष कर्म हैं हम उनको किसी न किसी प्रकार पूर्ण करें।

तो मुनिवरों !उस समय परमात्मा हमारे लिए सृष्टि का प्रारम्भ कर देता है।

सृष्टि तथा जीव के जीवन की निश्चित अवधि

अहा !मुनिवरों !देखो, परमात्मा ने अवधि बनाई है, कि इतने समय तक रात्रि रहेगी और इतने समय तक दिवस रहेगा। मुनिवरों !जिस समय संसार को उत्पन्न करते हैं, दिवस आ जाता है। परमात्मा के बनाए हुए संसार में नित्य परिवर्तन आता रहता है। जो सूर्य का प्रकाश करोड़ों वर्ष पूर्व था, वह अब नहीं और जो अब है, वह करोड़ों वर्ष पश्चात् नहीं रहेगा। बेटा !एक समय वह आएगा कि चन्द्रमा में ज्योति नहीं रहेगी। एक समय वह आएगा, कि वायु में प्राण सत्ता और पृथ्वी में गन्ध नहीं रहेगी। परन्तु जिस समय ऐसी स्थिति आ जाएगी, उस समय प्रलय काल बन जाएगा। इसी प्रकार से यह अवधि परमात्मा ने नियुक्त की है इसी प्रकार से हमारे शरीर की भी एक अवधि निश्चित की है।

अतः आज हमें मान लेना चाहिए, कि परमात्मा ने इस संसार क्षेत्र में कर्म करने के लिए हमें भेजा है। मुनिवरों !आज का हमारा यह आदेश है।
अच्छा, महानन्द जी अभी अभी प्रश्न करेंगे, कि परमात्मा ने जो इस संसार को इस प्रकार की चेतनता दी है, तो परमात्मा की चेतनता परमात्मा क्यों ले लेते है?
चलो, इसका आप ही उत्तर दिए देते है। परमात्मा ने एक समय जब अव्यक्त प्रकृति को महतत्व दिया, प्राण दिए, क्रिया दी, तन्मात्राएं दी, मानो यह सब पञ्च भूत बने, हमारा शरीर बना। परमात्मा ने इस प्रकार यह क्यों किया? ऐसा रचकर फिर इसको प्रलय कर देता है। नित्य प्रति परमात्मा ऐसा क्यों करता है?
महानन्द जी !देखो, यह प्रश्न विचारणीय है। इस दार्शनिक प्रश्न का उत्तर यह है कि परमात्मा ने सबकी अवधि बनाई है। उसी के अनुसार हमें सौ वर्ष की अवस्था वाला जीवन दान किया है। यह जीवन श्वासों पर बनाया गया है। योगाभ्यास से चार सौ वर्ष या इससे भी अधिक आयु हो सकती है। मुनिवरों !योगाभ्यास के द्वारा अपने सूक्ष्म, कारण और स्थूल सब शरीरों को जाने वाले बने जाएंगे, तब भी हमारे शरीर की अवधि है। ऐसे ही परमात्मा ने सूर्य को सविता सत्ता, चन्द्रमा को कान्ति, वायु को प्राण रूपी सत्ता, अग्नि को अवधारणा, वैश्वानरत्व, वरुण को सत्ता, प्राण सत्ता निश्चित अवधि के लिए दी हैं। समय व्यतीत होने पर यह सब चर अचर जगत परमात्मा के गर्भ में चला जाएगा, उस समय यह जड़ प्रकृति अव्यक्त रूप होकर अन्तरिक्ष में रमण कर जाएगी। ये प्राण, परमात्मा के गर्भ में चले जाएंगे।
पर अब यह विचार आता है, कि जिसके गर्भ अन्तरिक्ष में अव्यक्त रूप होकर प्रकृति एवं प्राण समा जाते है वह परमात्मा कहाँ बैठा हुआ है? आज समय नहीं है। इस प्रश्न का उत्तर हम कल देंगे।
पूज्य महानन्द जीः हाँ भगवन !जब गूढ़ विषय का समय आता है, तब आप ऐसा ही कह देते है, समय कल के लिए नियुक्त कर दिया जाता है हास्य .....
महानन्द जी तुम तो किसी काल में बहुत ही उत्तम वार्ता उच्चारण कर देते हो हास्य .....जो हमे भी मनमंता हास्य....आ जाती है .हास्य .....अच्छा कृपा कीजिए।
पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !महानन्द जी के नवीन विचारणीय विषय पर कल महान दार्शनिक विचार तुम्हारे समक्ष नियुक्त करेंगे। अच्छा मुनिवरों !प्रलय में यह आत्मा कहाँ चला जाता है? इस विषय को भी कल ही कहेंगे।
सृष्टि की अवधि आज तो हमारा प्रसंग चल रहा था, कि क्या परमात्मा ने अवधि बनाई है? अपनी अवधि पर ही क्या यह संसार समाप्त हो जाता है? क्या अपनी अवधि पर यह संसार उत्पन्न हो जाता है? इसमें क्रिया आ जाती है। आत्मा अपने समय पर कर्मों के अनुकूल कर्म करने के लिए नियुक्त हो जाता है। मुनिवरों !देखो, यह बहुत गूढ़ विषय हैं। कल का हमारा व्याख्यान इससे भी गूढ़ हो जाएगा।
अहा !अभी अभी हमारा क्या व्याख्यान चल रहा था? विषय था, कि परमात्मा ने इस संसार को क्यों बनाया? किस लिए बनाया? किसके लिए बनाया?
मुनिवरों !यह संसार हम आत्माओं के लिए बनाया है, आत्मा को कर्म करने के लिए बनाया है।
यदि हम संसार क्षेत्र में आ करके, परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि में आ करके, अच्छे कर्म नहीं करेंगे तो हमसा धूर्त कोई न होगा। इमसे बड़ा मूर्ख, हमसे बड़ा अज्ञानी कोई न होगा। इसलिए बेटा !हमारे व्याख्यानों का अभिप्राय यह है कि मानव को इस संसार क्षेत्र में आकर अच्छा कर्म करना चाहिए।
हमारे समक्ष दो प्रकार के कर्म हैं। एक आध्यात्मिक, दूसरा भौतिक, इन दोनों प्रकार के कर्मों को करना चाहिए। पर आज का मानव तो गृहस्थ के महत्त्व को मानकर केवल भौतिक कर्मों में ही लीन हो रहा है। आध्यात्मिक

कर्मों को त्यागता जा रहा है। पर हमारे कहने का यह अर्थ भी नहीं कि भौतिक उन्नति न की जाए, या उदर पूर्ति न की जाए।

आत्मा का भोजन

हम तो कहते है, कि जब आज का मानव प्रातः समय से सायं समय तक उदर पूर्ति का प्रयत्न करता है तो जो आत्मा तुम्हारे शरीर में विराजमान है उसके भोजन का भी प्रबन्ध करो। उसका भोजन सत्संग करना है, उसका भोजन वेद के वाक्यों को पाना है, उसका भोजन उस परमात्मा का विचार करना है। यही परमात्मा को भी भोजन देना है।

मुनिवरों !जैसे आज का मानव अपने उदर की पूर्ति करने का प्रयत्न करता है, वैसे ही आत्मा को भोजन देने का प्रयत्न करें।

आत्मा का भोजन ज्ञान है। हमारा यह आज का आदेश है।

हमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का कर्म करना चाहिए, तभी हमारे जीवन का विकास बहुत सूक्ष्म समय में हो पाएगा।

प्रश्न होता है, कि यह सम्भव कैसे है, कि उदर पूर्ति भी कर लेवें और आध्यात्मिक विज्ञान को भी पा लें? यह दो प्रकार की स्थिति हम कैसे पा लें?

मुनिवरों !इस जीवन के भाग बना करके, संसार में चलो। देखो, एक अलंकार हमारे कंठ आ गया।

मुनिवरों !एक वैश्य कृषक था। वैश्य कृषि किया करते थे। बसन्त ऋतु में उस कृषक की कृषि लहलहा उठी। उस कृषक के क्षेत्र की ओर एक क्षत्रिय, एक ब्राह्मण और एक दरिद्र तीनों आ निकले। उन्होंने परिपक्व कृषि को देखकर उसी में से तीनों ने खाना आरम्भ कर दिया। उसी समय कृषक भी पहुंचा। उसने तीन व्यक्तियों को देखकर सोचा, कि अब क्या करना चाहिए? क्योंकि ये तो तीन हैं और मैं अकेला हूँ। अब बुद्धि से विचार कर कार्य करना चाहिए। उसने उस समय ब्राह्मण के चरणों को स्पर्श किया, और कहा कि महाराज !आप तो हमारे हर प्रकार से पूज्य है, आप तो देवता है। आप तो ब्रह्म को जानने वाले हैं। ऐसी प्रशंसा करके क्षत्रिय से कहा महाराज !आप तो हमारी रक्षा करने वाले हैं, हर प्रकार रक्षा करते हैं, आप तो हमारे राजाधिराज हैं। उसकी प्रशंसा करके कहा कि महाराज !यह आपके साथ शूद्र कौन है?

उस समय ब्राह्मण ने कहा भाई !हमने तो इससे कहा था कि तू हमारे संग ने चल। तब उन दोनों ने उसको त्याग दिया। तब उस कृषक ने उस पर आक्रमण करके उसको भगा दिया। फिर वह ब्राह्मण के समक्ष पहुंचा। ब्राह्मण से कहा कि आप तो हमारे देवता है पर देखिए तो यह क्षत्रिय हमें बड़े बड़े कष्ट देता है। यह आपके समक्ष क्यों आ गया? अब ब्राह्मण ने सोचा कि भाई! तुम्हें तो यह दक्षिणा भी देगा, तो अब क्या करना चाहिए। ब्राह्मण ने कहा भाई !मैंने तो मना किया था, तुम हमारे संग न चलो इत्यादि। तब उस कृषक ने क्षत्रिय पर भी आक्रमण कर दिया। आक्रमण के कारण क्षत्रिय भी वहाँ से चला गया।

अब केवल ब्राह्मण जी रह गए। उनको भी कृषक ने कहा कि जब आप द्वार पर आते हैं, न जाने क्या क्या पाप, भय दिखाकर अपना भाग आवश्यकता से भी अधिक अनुचित्त रूप से लेकर ही पिंड छोड़ते हो । इसलिए हम तो आप पर भी आक्रमण करेंगे। यह कह कर ब्राह्मण पर भी आक्रमण कर दिया। वहाँ से ब्राह्मण भी भाग गया।

मुनिवरों !इन वाक्यों का क्या अभिप्राय है? मानव को अपने जीवन के भाग बना देने चाहिए। हमारे जीवन के तीन भाग है बुद्धि से कार्य करो। यदि वैश्य बुद्धि से कार्य न करता, तो वे तीन ही उसको समाप्त कर देते। यदि अपने जीवन को सुखी बनाना है, तो अपने जीवन के विभाग कर देने चाहिएं। कैसे विभाग?

मुनिवरों !एक महान् राजा मंत्रियों सहित भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने वन से समिधाएं लाकर गृहस्थियों के गृहों पर पहुंचाने वाले एक दरिद्र व्यक्ति को देखा, जो कि मार्ग में मग्न भाव से उच्च स्वरों से साथ गान गा रहा था। वह ऐसा गान गा रहा था, कि जैसे ऋषिजन वेदों का घन पाठ में गायन करते हों। उसके गायन पर तो पक्षीगण भी मुग्ध हो रहे थे।

उस समय राजा ने मन्त्रियों से कहा, अरे, भाई !यह क्या है? यह कैसा मुग्ध हुआ गान गा रहा है? यह कितना सुखी होगा? जैसा कि हमने कल उच्चारण किया था, कि ऐसा गान तो पवित्र मन वाला व्यक्ति ही गाता है, और वही गा सकता है कि जो सुखी होता है। जो सुखी नहीं, जो कलह में मग्न हो वह ऐसा गान कदापि नहीं गा सकता।

तो मुनिवरों !राजा ने उससे कहा, कि अरे, भाई !तुम तो बड़ा सुन्दर गान गा रहे हो? उसने उत्तर दिया कि गान गाना मेरा कर्तव्य है, इसलिए मैं गा रहा हूँ।

अरे, तुझे ऐसी क्या मस्ती है? उसने कहा कि मुझे इतनी मस्ती है, कि इतनी मस्ती तो राजा को भी कदापि नहीं हो सकती।

राजा ने पूछा, भाई !यह क्या बात है? उस समय गायक ने कहा कि महाराज !देखो, मैं द्रव्य कमाता हूँ। जो द्रव्य मैं प्रातःकाल से सायंकाल तक कमाता हूँ, उसके चार भाग बना देता हूँ। उसमें से एक भाग तो उनको देता हूँ, जिनसे मैने लिया हुआ है। दूसरा भाग उनको देता हूँ, जिनसे आगे चल कर, मेरे कार्य में सहायता मिलेगी या जो इस लोक और परलोक दोनों में मिलेगा। तृतीय भाग दूसरों को देता हूँ और चतुर्थ भाग अपने लिए रख लेता हूँ। अर्थात् अपने पर व्यय करता हूँ। इस चतुर्थ भाग में मैं और मेरी पत्नी आनन्द मनाते हैं।

राजा ने कहा कि भाई !यह चार भाग अपने द्रव्य के कैसे बनाते हो? वे कैसे कैसे व्यय होते है?

उस समय उसने कहा कि महाराज !मैं दिन भर में जितना भी कमाता हूँ, उसके चार भाग कर देता हूँ। एक भाग तो मैं उन्हें देता हूँ जिनसे मैने लिया है। वे कौन है? वे मेरे माता पिता हैं। जिन्होंने मेरी पालना की, मेरी माता ने मुझे गर्भस्थल में धारण किया, मुझे योग्य बनाया, मुझको पालकर उच्च बनाया। मैं उनको एक भाग देता हूँ।

दूसरा भाग वेदों के विद्वान, वेदों का प्रचार करने वाले विद्वान, सदाचारी ब्राह्मणों, अतिथियों और महान योगियों की सेवा में लगा देता हूँ और उनको दान कर देता हूँ। यह द्रव्य मुझको परलोक में प्राप्त हो जाएगा।

तीसरा भाग मैं संसार के व्यक्तियों को देता हूँ। जब मुझको अधिक द्रव्य की आवश्यकता पड़ती है तब मैं उसे ले लेता हूँ। चतुर्थ भाग में, मैं और मेरी पत्नी दोनों आनन्द से रहते है। तब मैं इतना सुखी हूँ। इसी कारण मैं इस प्रकार का गान गा रहा हूँ। यदि मैं सुखी न होता, तो आज मार्ग में ऐसा गान कदापि न गा सकता।

तो मुनिवरों !इसलिए मानव को अपने जीवन के चार भाग बना देने चाहिए। तभी हम दोनों आध्यात्मिक और भौतिक कार्य कर सकते है। देखो, आध्यात्मिक विज्ञान भी पा सकते है और भौतिक विज्ञान भी पा सकते हैं। दोनों विज्ञान पाने वाले तभी बनेंगे, जब बुद्धि से कार्य करेंगे। जब नष्ट करने वाले अनिष्ट कार्य करेंगे तो वास्तव में हमारा ही जीवन समाप्त हो जाएगा। हम इस संसार में आकर कोई भी लाभ प्राप्त न कर सकेंगे। इसलिए बेटा !यह आज का हमारा आदेश हे।

पूज्य महानन्द जीः धन्य हो भगवन् !

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !आज हमारा व्याख्यान क्या चल रहा था, कि मानव के लिए, आत्मा के लिए, ही परमात्मा ने संसार को बनाया है। यह मानव को अच्छी प्रकार से जान लेना चाहिए। इसमें आ करके दोनों प्रकार के विज्ञान को पाते चले जाएं, तभी हमारा जीवन उच्च बनेगा, अन्यथा हमारे जीवन को उच्च बनाने को

कोई साधन नहीं।

मुनिवरों !मानव का वही गान होता है, जो महाराजा कृष्ण ने महाराजा अर्जुन के समक्ष गया था। जिससे महाराजा अर्जुन का इतना बड़ा अज्ञान समाप्त हो गया था। वास्तव में मुनिवरों !गायन होना भी ऐसा ही चाहिए। कल हमने इसी विषय में उच्चारण किया था। अब हमारा आदेश समय की समाप्ति के साथ समाप्त हो रहा है।

तो मुनिवरों !कल समय मिलेगा तो शेष उक्त विषय पर प्रकाश डालेंगे। अब हमारा आदेश समाप्त हुआ कल इससे आगे उच्चारण किया जाएगा अब हमारा वेदों का गान होगा हमारा वेद पाठ होगा

आज हमारे व्याख्यान का अभिप्राय यह है, कि हमें परमात्मा को पाना है, परमात्मा को किस स्थिति में पाना है? हम परब्रह्म को पाकर ब्रह्म बन जाते हैं।

हमारे जो मनु आदि आचार्यों ने कहा है कि ब्रह्म रात्रि और ब्रह्म दिवस इतने समय का क्यों है? ब्रह्मा का एक दिवस एक कल्प का क्यों होता है? इसका भी कल संक्षेप में वर्णन करेंगे। धन्यवाद, कल हम महानन्द जी के कुछ प्रश्नों का उत्तर भी देंगे। अब व्याख्यान समाप्त हो गया है। अब वेदों का पाठ होगा और इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। वेद पाठ लोदी रोड, नई दिल्ली

02 04 1962 प्रातः प्रलयकाल में सृष्टि और परमात्मा का स्वरूप

जीते रहो, देखो, मुनिवरों !अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष उन वेद मन्त्रों का पाठ कर रहे थे, जिनका पाठ, हमारे महर्षि अंगिरा मुनि आचार्य ने सात स्वरों में किया था। हम पूर्व की भांति, वेदों का पाठ अच्छी प्रकार से नहीं कर सकते। परन्तु हमारे गुरु ब्रह्मा जी ने बहुत पूर्व काल में कहा था, वेद पाठ न करने से कुछ करना भी सुन्दर होता है। इसलिए आज उसी आज्ञा के आधार पर वेदों का गान गा रहे थे। महान प्रभु हमारी वाणियों की भी वाणी है। हमारी वाणी में माधुर्य उसी का दिया हुआ है। वह महान प्रभु इस संसार को चला रहा है। हमारे जीवन की नाना योजनाएं बना रहा है। आज के मन्त्रों में उस प्रभु की महत्ता का वर्णन किया गया है। आज के वेद मन्त्रों में जो प्रभु का गुणगान किया गया है, हम तो उसका भी पूर्ण रूप से व्याख्यान करने में असमर्थ हैं, हम जो कुछ व्याख्यान करते हैं, उसकी रूपरेखा परमात्मा के दिए उपदेश, वेद मन्त्रों, से ही लेकर कुछ व्याख्यान कर पाते हैं।

क्या प्रभु से जीव की याचना करना उचित है

महानन्द जी के संकेतों पर आज हम पूर्व मंन्त्रों में उस विधाता से, जिसने इस संसार को हमारे लिए उत्पन्न किया है, और इन सबको चला रहा है, अपने गायन में याचना कर रहे थे, इच्छा कर रहे थे।

ऐसा कहा जाता है कि मांगना तो कायरों का कार्य है, परन्तु जिस विधाता ने इस संसार को हम सबके लिए उत्पन्न किया है, आज हमें उससे मांगने में, किसी की अभिलाषा करने में या इच्छा करने में हमारी कोई किसी प्रकार की हानि नहीं होगी।

याचना करने से हानि किस काल में होती है? हानि उस काल में होती है, जब मानव अपने को भुलाकर अपनेपन को नष्ट कर देता है। अर्थात् भोग विलास में मग्न होकर अर्थात् भोग विलास की सामग्री की ही, भोग विलास के लिए याचना करता है। तब याचना में हानि ही हानि उठानी पड़ती है। और जब मानव मानव के रक्त् का अभिलाषी होकर, परमात्मा से याचना करता है, तब उसकी हानि ही हानि होती है। परन्तु जो विधाता हमें सब प्रकार का महत्व देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, जो वाणियों का भी वाणी बना बैठा है, जो हमारी आत्मा के समक्ष बैठा है, आज हम उस प्रभु से माँगे तो उसमें हमारा कोई दोष नहीं, क्योंकि वह

विधाता तो इतना बड़ा दानी है, यदि हम न भी मांगेंगे तब भी वह विधाता हमारे कल्याण के लिए सभी पदार्थ प्रदान कर रहा है।
वह विधाता कितना बड़ा दानी है? उसी विधाता के महत्व प्रदान करने से ही, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या संसार क्षेत्र में आकर अपना अपना कार्य किया करते है। प्रत्येक जीव उसी के आश्रय में अपना जीवन चला रहा है।

प्रलयकाल में प्रभु

महानन्द जी का कल का एक प्रश्न हमारे समक्ष है। अर्थात् जब प्रलयकाल आ जाता है तब संसार में समस्त पदार्थ परमाणु रूप में बदल कर परमाणु अन्तरिक्ष में रमण करते हैं? आरम्भ सृष्टि में अव्यक्त प्रकृति को दिया हुआ महत्तत्व परमात्मा में रमण कर जाता हैं, यह महान व सामान्य प्राण परमात्मा में रमण कर जाते है, तब वह विधाता किस स्थान में रहता है?और कहाँ रहता है और प्रभु की उस काल में क्या गति हो जाती है?
अब तो यह मान बैठे है कि परमात्मा लोक लोकान्तरों को चला रहा है, वह सर्व व्यापक है, हमारे में भी रमण कर रहा है, वह सर्व संसार को चला रहा है। पर जब प्रलयकाल आता है तब परमात्मा स्वयं कहाँ और किस स्थिति में होते है? अब हमारे समक्ष यह दार्शनिक विषय आ जाता है।
अहा !आदि दार्शनिकों ने तो इसके सम्बन्ध में बहुत ही कुछ कहा है। आज उन दार्शनिकों का विचार तुम्हारे समक्ष नियुक्त करेंगे जैसा कि हमने पाया है और जैसा दार्शनिकों ने निर्णय दिया है।
त्रेताकाल में एक समय हमारे आदि दार्शनिक वशिष्ठ मुनि महाराज, महाराज विश्वामित्र, आचार्य धुन्ध महर्षि कपिल मुनि महाराजा, कुण्डल ऋषि महाराज, महर्षि गौतम, समीक मुनि महाराज, विभाण्डक मुनि महाराज, लोमश मुनि महाराज, अत्रि मुनि महाराज और अत्रि मुनि महाराज की धर्मपत्नी अनुग्रहा आदि महर्षियों का समाज एक स्थान पर नियुक्त हो गया।
बेटा !उस दार्शनिक समाज की स्थिति का वर्णन करते हुए हमारी वाणी थकित हो रही है। उस दार्शनिक समाज में अत्रि मुनि ने महाराज आदि ऋषियों के समक्ष प्रश्न किया गया, कि भाई !प्रलयकाल में परमात्मा की क्या गति होती है? क्या दशा होती थी? जब प्रकृति सूक्ष्म होकर परमात्मा में रमण कर जाती है तब परमात्मा की क्या स्थिति होती है?

प्रलयकाल में परमात्मा की गति

उस समय अत्रि मुनि महाराज, विभाण्डक मुनि, आचार्य लोमश मुनि महाराज, शमीक मुनि महाराज आदि महर्षियों ने कहा कि जब यह महान प्रकृति शून्य रूप होकर, अव्यक्त रूप होकर, माता और पिता रूप परमात्मा के गर्भ में रमण कर जाती है। तब व्यापक परमात्मा उसको गर्भ मे धारण करके वह पूर्ववत ही रमण करता रहता है।
मुनिवरों !जैसे माता अपने गर्भस्थल में पुत्र को धारण करती है, वैसे ही वह माताओं की माता दुर्गा सारी प्रकृति और सारे जीवों को अपनि गर्भ में धारण करके, प्रकृति को आश्रय दे करके, विश्राम दे करके फिर से उसकी शिथिलता का, उसकी निर्बलता का हरण करके, उसमें कार्य करने की शक्ति को स्थापित कर देती है ।
मुनिवरों !देखो, प्रश्न होता है, कि जब यह महान एवं विशाल प्रकृति परमात्मा के गर्भ से चली जाती है, तब वह परमात्मा इस संसार को कैसे प्रकृति से बनाता है?
मुनिवरों !जैसे मानव जीवन की अवधि है, ऐसे ही परमात्मा के बनाए ब्रहमाण्ड की अवधि है। जैसे माता के गर्भस्थल की अवधि है, वैसे ही माता दुर्गा, वह परमात्मा दुर्गा के गर्भ की अवधि है। परमात्मा के नियमों के

अनुसार यह संसार बनता है। उसी के नियमों के अनुसार यह महान प्रकृति और ये सारे जीव उस माता दुर्गा के विशाल गर्भ में समा जाते है।

अहा मुनिवरों !हमारे दार्शनिक इसी निश्चय पर पहुंचे है। यही उनका वाक्य है। मानव को इसको मानना अनिवार्य है, आवश्यक है।

मुनिवरों !परमात्मा के नियम के आधार पर यह संसार बनता है, अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति होती है और माता दुर्गा के नियमों के अनुसार यह आत्मा जैसे जैसे कर्म कर्म करता है, जैसी जैसी इच्छा करता है, वैसे वैसे ही जन्म लेता रहता है, अपने शुभ और अशुभ कर्मों का फल भोगता रहता है।

जीव द्‌वारा परमात्मा की उपासना क्यों ?

मुनिवरों !प्रश्न होता है, कि जब संसार परमात्मा के नियमों के अनुसार बनता बिगड़ता रहता ही है और जीव अपने कर्मानुसार फल पाता ही रहता है, तो यह आत्मा परमात्मा के अनुरोध अर्थात् उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करे या न करे? करे तो क्यों करे?

माता के गर्भ में जीव की स्थिति

मुनिवरों !जब माता के गर्भ में यह जीवात्मा मन के साथ निवास करता है, जैसा कि हम पूर्व भी कह चुके है, उस समय यह आत्मा न तो व्याकुल होता है। बेटा !और न श्वास लेता है, न यह अपने मुखारविन्द से परमपिता परमात्मा की स्तुति आदि का उच्चारण कर पाता है। न कुछ कार्य ही कर पाता है परन्तु तब भी यह आत्मा मन सहित परमात्मा से सम्बन्ध करता है। परमात्मा से प्रार्थना में कहता है किहे प्रभु !मैं इस अन्धकार से पृथक् होना चाहता हूँ, मुझको इस अन्धकार से पृथक करो।

मुनिवरों !उस समय यह आत्मा अन्धकार में रहता है। उस समय जीव को कर्म करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है, कर्म करने की सुविधाएं नहीं मिलती, उस समय शून्य प्रकृति में रहता है। उस समय मुनिवरों !यह आत्मा प्रभु से याचना करता है।

हे विधाता !इस अन्धकार में मुझको कर्म करने का अवसर नहीं मिल रहा है। मुझे उस तेज को दो, प्रकाश को दो जिससे संसार क्षेत्र में आ करके, मैं कर्म करने के लिए उद्‌यत हो जाऊं। हे विधाता !मेरे लिए उस महानता को उत्पन्न करो, जिससे मैं संसार क्षेत्र में आकर, उसे करने के लिए नियुक्त हो जाऊं।

तो मुनिवरों !माता के गर्भ में रहती हुई आत्मा जैसे अन्धकार से पृथक् करने के लिए परमपिता से प्रार्थना करती है, वैसे ही प्रलयकाल के अन्धकार में मग्न आत्माएं, परमपिता परमात्मा से पुनः पुनः याचना करती हैं। उस समय परमात्मा नियम के अनुसार ही संसार को उत्पन्न कर देते हैं।

मुनिवरों !यह तो अनिवार्य है कि आत्मा को परमात्मा से अनुरोध अवश्य ही करना पड़ता है। परन्तु करता क्यों है? इसका संसार में आकर क्या कार्य है?

संसार में आत्मा के आने का उद्‌देश्य

मुनिवरों !गर्भस्थ जीव परमात्मा से अपने अनुरोध में कहता है कि प्रभु !मेरे जो कर्म शेष रह गए हैं उन शिष्ट कर्मों के द्‌वारा अपनी आत्मा को महान बनाने का यत्न करूंगा और आपके आँगन में रमण करने के लिए आऊंगा अर्थात् मुक्ति लाभ करके आपके परमानन्द का लाभ कर सकूंगा। हे मुनिवरों !इस संसार में आत्मा के आने का यही एकमात्र उद्‌देश्य है। इसीलिए परमपिता परमात्मा जीव को संसार में उत्पन्न करते हैं।

मुनिवरों !परन्तु यह आत्मा संसार में जन्म लेकर कामनाओं में, वासनाओं में और विषयों में ऐसा फंस जाता है, कि यह प्रकृति का दास बन जाता है। प्रकृति इसको आदेश देती है। यह प्रकृति की ओर झुक जाता है। देखो, प्रकृति में रमण करके ऐसा भटक जाता है, कि अपने वचनों को भुला बैठता है। अपने महत्व को भुला

बैठता है। अर्थात् सब कुछ नष्ट कर देता है।
मुनिवरों !हमारे महान दार्शनिकों ने कहा है कि माता गर्भस्थल में जैसे बालक को धारण करती है वैसे ही परमात्मा प्रलयकाल में इन असंख्य जीवों को और सारी प्रकृति को, अर्थात् इन दोनों को अपने गर्भ में स्थापित करता है।

सृष्टि का उद्देश्य

मुनिवरों !देखो, वह प्रभु इस संसार का आधार है। इस प्रकृति और आत्मा का आधार है। आज हमें यह पक्का निश्चय कर लेना चाहिए कि यह जो संसार बनाया है, यह जो संसार बना है, परमात्मा ने इसको बनाया है और क्यों बनाया है? कर्म करने के लिए बनाया है। आज हमें इसमें कर्म करना चाहिए। अपने जीवन को व्यर्थ नहीं खो देना चाहिए।
मुनिवरों !हमारे मनु आदि आचार्यों ने, ब्रह्मा आदि ऋषियों ने और हमारे गुरु ब्रह्मा ने भी ऐसा ही कहा है कि महान संसार की रचना गणित विद्या के समान नियमानुसार है, विलक्षण है।

आत्मा के ब्रह्म बनने की अवधि

मुनिवरों !एक समय महर्षि नारद मुनि ने कपिल मुनि महाराज से प्रश्न किया था कि महाराज !हम यह जानना चाहते है कि ब्रह्मा की यह सृष्टि की अवधि क्या है? ब्रह्मा की जो अहोरात्रि है, यह क्या पदार्थ है? यह अहोरात्र और और कल्प ऐसे क्यों है? इनका यह रूप क्यों निर्धारित किया गया है? उस सभा में महर्षि प्राधी मुनि महाराज, मार्कण्डेय महाराज, महर्षि भृगु मुनि महाराज आदि ऋषिगण विराजमान थे। उस समय कपिल मुनि आदि आचार्यों ने यह निर्णय किया था कि इस ब्रह्म अवधि के द्वारा आत्मा पर ब्रह्म को प लेता है यह आत्मा ब्रह्म बन जाता है । तात्पर्य यह है की इस अवधि में आत्मा ब्रह्म बन सकता है। आत्मा के ब्रह्म बनने की अवधि है। इसलिए इस सृष्टिकाल की अवधि का नाम ब्रह्म दिन हुआ। प्रश्न होता है, कि यह ब्रह्म अवधि कितने वर्षों की होती है?

ब्रह्म की शतायु की अवधि

मुनिवरों !यह तो तुमने जान ही लिया होगा कि एक चतुर्युगी में तैतालिस लाख बीस सहस्त्र)4320000वर्ष (वर्ष होते हैं। इक्हत्तर)71) चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है। ऐसे चौदह)14) मन्वन्तरों का सृष्टिकाल या ब्रह्म दिन होता है। तो चौदह मन्वन्तरों के पश्चात् एक प्रलयकाल हो जाता है। इस प्रलयकाल को ब्रह्म की रत्रि कहते है। एक सृष्टिकाल और एक प्रलयकाल को मिलाकर ब्रह्म का अहोरात्र कहलाता है। अर्थात् दो सहस्त्र चतुर्युगियों का ब्रह्मा का अहोरात्र बनता है। मुनिवरों ! !देखो, ऐसे ऐसे 360अहोरात्र का, ब्रह्म का एक वर्ष हो जाता है। ऐसे ऐसे ब्रह्मा के सौ वर्ष व्यतीत होते है, तो ब्रह्म की शतायु हो जाती है।
मुनिवरों !देखो, आदि ऋषियों ने और दार्शनिकों ने निर्णय किया है। इस पर दार्शनिकों ने कहा कि यह क्या है? ऐसा क्यों माना है? ऐसा कौन सा ब्रह्मा है? ऐसा इसका कौन सा शरीर है? जो ऐसा माना गया है।
मुनिवरों !जैसे परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि का नियम है, माता के गर्भस्थल में जीव के आने का नियम है, चन्द्रमा की कान्ति का नियम है, ऐसे ही ब्रह्मा की आयु का भी समय नियुक्त किया गया है।

मुक्ति से लौटने का काल

मुनिवरों !यह कैसे कहा है? जब इतना समय व्यतीत हो जाता है, जब यह जीव ब्रह्म बन करके परब्रह्म में रमण करता है, उस परमानन्द में आनन्द करता रहता है और उसकी पूर्ण आयु व्यतीत हो जाती है, तब बेटा ! वह मुक्त आत्मा ब्रह्म पद से नीचे इस संसार में द्वितीय बार आ जाती हैं।
अब यह प्रश्न उठता है कि जब यह आत्मा अपने को जानकर, परमात्मा को जानकर, उसकी गोद में पहुंचकर,

परब्रह्म को पा करके ब्रह्म बन जाता है तब उस ब्रह्म को इस संसार क्षेत्र में आने की क्या आवश्यकता है? यह क्यों आता है? इससे तो महानन्द जी का वाक्य ही सत्य हो जाएगा। महानन्द जी ने एक समय कहा था कि जब जीव को मुक्ति से लौटना पड़ता है, तो हमें यह प्रयत्न कदापि न करना चाहिए।

मोक्ष का महत्व

हमने आदि दार्शनिकों के आधार पर एक समय यह उत्तर दिया था कि एक तो इस संसार का सुख क्षण भंगुर है। इसके समक्ष मुक्ति का सुख कितन महान, कितना विशाल और कितना विस्तृत है। उस परमानन्द के सामने यह सांसारिक सुख कदापि महत्व नहीं पा सकता है। मानव के जीवन का उद्देश्य तो एक मात्र यही है कि वह परमानन्द को पाता रहे। परमानन्द को पाकर, उसी में ब्रह्म की पूर्णायु रमण करता रहे। इस महान दुःखों के सागर रूपी संसार के दुःखों में न पड़े।

परमात्मा के विशेष गुण

मुनिवरों !आदि आचार्यों ऋषियों ने इसमें एक विशेषता बताई है । परमात्मा में अनंत गुणों में से चार गुण विशेष रूप से हैं

1, सृष्टि को उत्पन्न करता है। 2, सृष्टि की प्रलय करता है। 3, हमारे पाप पुण्यों के कर्मों का फल देता है। 4, संसार का पालन करता है।

ऊपर कहे गुणों वाला परमात्मा होता है। उसी को परमात्मा कहते हैं।

जीव के मुख्य गुण

इसके समक्ष आत्मा में दो ही गुण मुख्य रूप से ऋषियों ने माने है। क्योंकि ये दो गुण ही रह जाते हैं। अर्थात जीवात्मा में ज्ञान और प्रयत्न।

क्योंकि ये दोनों गुण जीवात्मा में नित्य रहते है। ये किसी भी काल समाप्त नहीं होते। यह जीव ज्ञान के द्वारा तो प्रभु को जान लेता है, प्रयत्न के द्वारा उसमें रमण करता रहता है, आनन्द ही आनन्द भोगता रहता है। परन्तु प्रयत्न से आनन्द भोगा जाता है। जीव में ये दोनों गुण कभी समाप्त नहीं होते, चाहे जीव परमात्मा को पा करके ब्रह्म बन जाए। ये दो गुण तो आत्मा के स्वाभाविक हैं। ये गुण कदापि भी नहीं जाते।

मुनिवरों !देखो, अनेक मानवों को मिष्ठान्न प्रिय है। यदि किसी मिष्ठान्न प्रिय मानव के लिए बहुत अधिक मिष्ठान्न का आयोजन कर दिया जाए, तो वह लम्बे समय तक मिष्ठान्न खाते खाते उकता जाता है। उससे उसका हृदय घृणा करने लग जाता है। इसी प्रकार जब आत्मा परमात्मा में अत्यधिक लम्बे समय तक रमण करता करता ऊब जाता है तब संसार में आने की, पुनः जन्म धारण करने की इच्छा प्रबल हो जाती है। तब यह परमात्मा की कृपा से संसार में पुनः जन्म धारण करता है। इस विषय में हमारा ही नहीं, अपितु महर्षि अत्रि मुनि महाराज, महर्षि कोपात्री जी, महर्षि कपिल मुनि महाराज, महर्षि नारद मुनि महाराज, वशिष्ठ मुनि मुनि महाराज, महर्षि विश्वामित्र महाराज, आदि दार्शनिक सभी आचार्यों का यही मन्तव्य है।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !हमें तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे आप ही ऐसा मान रहे हों।

पूज्यपाद गुरुदेवः हाँ बेटा !तुम्हें तो ऐसा ही प्रतीत होगा। अरे, भाई !हम तो तुम्हें सभी प्रमाण दे रहे हैं। इसमें तो किसी अन्य युक्ति या तर्क की आवश्यकता ही नहीं। यह तो केवल तर्क का विषय नहीं है, यह तो विश्वास, युक्तियों और प्रमाण का विषय है, यह तो वेद का विषय है। वेद का स्वाध्याय करोगे, तो तुम्हें स्वतः ही ज्ञान हो जाएगा।

यदि महानन्द जी !तुम यह कहो, कि आधुनिक काल में तो आत्मा परमात्मा को एक मानते हैं। मुक्ति से लौटना नहीं मानते, तो बेटा !हम इसमें क्या कर सकते हैं, बेटा !हमारे आदि आचार्यों ने जैसा माना है, जो

माना है, हम तो उसी के आधार पर उच्चारण कर रहे हैं। हम तो उससे पृथक् कदापि उच्चारण नहीं करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !आप तो अन्य आचार्यों की कही कही वार्त्ताओं का उच्चारण कर रहे हैं। आपने भी कुछ पाया है, या नही संसार में। या सुनी हुई वार्त्ताओं का उच्चारण कर रहे हो? हास्य....

पूज्यपाद गुरुदेवः 'महानन्द जी !हम कैसे उच्चारण करें, कि बेटा !हमने पाया, यह तो एक मधुर वाक्य हो जाता है। इसमें तो कुछ संकोच होता ही है।

पूज्य महानन्द जीः इसमें संकोच की क्या बात है गुरु जी, जिस वस्तु के विषय में, जो कुछ भी प्रत्यक्ष करके जाना या पाया, उसके निर्णय करने में आपकी क्या हानि?

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !इसमें कोई हानि नहीं। चलो, इसका भी निर्णय किए देते हैं।

मुनिवरों !गहरी दृष्टि से, उच्च विचार करने से और परम्परा के अनुसार ऐसा प्रश्न होता है, कि परमात्मा ने इस अदभुत संसार को कैसे बनाया? मुनिवरों !इस विषय में हमारा निर्णय यही है, कि वह अद्भुत संसार परमात्मा का खेल सिद्ध नहीं होता। परमात्मा खेल क्यों रचाए? परमात्मा तो पूर्ण है, परमात्मा को खेल रचाने की क्या आवश्यकता? खेल कौन रचाता हैं, जिस मानव का मन चंचल होता है खेल वह रचाया करता है। पर परमात्मा तो पूर्ण है, सर्वज्ञ है, पूर्ण काम है, निर्द्वन्द है। वह इतना अपार है, कि उसका तो पार ही पाना सर्वथा असम्भव है। उसकी अपारता का वर्णन ही नहीं किया जा सकता है, ऐसा हमारा ही निश्चय नहीं है। यह तो आदि आचार्यों ने गहरी दृष्टि से निर्णय किया है।

बेटा !परमात्मा विशेष नियम के अनुसार जीवों के कल्याण के लिए संसार को बनाता है। संसार की रचना पर और उसके नियमों पर विचार करने से यह सिद्ध हो जाता है।

मुनिवरों !हम व्याख्यान देते देते ब्रह्मा आदि शब्दों पर जा पहुंचे। अर्थात् इसको ब्रह्मा क्यों कहते है? ब्रह्मा की अवधि इस प्रकार क्यों मानी गई है? यह अहोरात्र इस प्रकार क्यों माना गया है? ये ऐसे क्यों माने गए हैं? यह सृष्टि उस ब्रह्म पद प्राप्त जीव के कारण ब्रह्म का दिवस कहलाती है। इसी प्रकार प्रलय काल ब्रह्म रात्रि कहलाती है। जैसे मानव की शत वर्ष की आयु होती है वैसे ही इन ब्रह्म दिवस और ब्रह्म रात्रि की गणना करके एक महाकल्प ब्रह्म की शत वर्ष की आयु निर्धारित की गई है।

मुनिवरों !यह सब जीवात्मा के जीवन के आधार पर ही निश्चित किया गया है। आचार्यों ने यह निर्णय दिया है। हमें किस सत्ता के आधार पर रहना चाहिए? देखो, हमें उस परमात्मा को सत्ता का आधार मानकर चलना चाहिए, जिससे समाज में अज्ञान न फैले, जीवन की ऊँची योजन बनाने की आवश्यकता है।

माता कैसी हो

मुनिवरों !आज के वेद पाठ में माताओं के विषय में बड़ा सुन्दर वर्णन आ रहा था यह एक मधु एवं सूक्ष्म उपदेश है। देखो, !माता प्रकृति को कहते हैं। यह सारी प्रकृति और जीव उस माता दुर्गा अर्थात प्रभु के गर्भ स्थल में रहते है जैसे माताओं की माता दुर्गा हमारे जीवन को उच्च बनाती है, वैसे ही हमारी जननी माता भी हमारे जीवन को उच्च बनाने वाली है। वास्तव में जननी माता वह ही हो सकती है, जो परमात्मा के समान अपने पुत्रों का कल्याण करके उच्च पद पर पहुंचाने वाली हो, जो संसार सागर में ऊँची प्रेरणा देने वाली हो वह माता कैसी हो?जो गर्भ स्थल मे ही वर्तमान आत्मा को ऊँची शिक्षा प्रदान करने वाली हो। ऐसा हमने द्वापर युग में पाया था, प्रत्यक्ष किया था।

मुनिवरों !इस विषय में महानन्द जी ने नाना प्रश्न किए, इनके समाधान में हमारी द्वापर की एक देखी हुई घटना है।

माता गंगोत्री का जीवन

द्वापर में महाराजा गंगेतु राजा की गंगोत्री नामक सुन्दरी कन्या थी। उसका विवाह संस्कार राजा शान्तनु के साथ हुआ था। वे आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। राजा शान्तनु के गंगोत्री से सातपुत्र उत्पन्न होकर सबके सब समाप्त होते गए । महाराजा शान्तनु को बड़ी चिंता हुई क्योंकि उनके राष्ट्र को संभालने वाला कोई न रहा कुछ कालके पश्चात बड़ा सुन्दर आठवां बालक उत्पन्न हुआ। मुनिवरों !बाल्यावस्था में ब्राह्मणों ने उसका नाम गंगशील नियुक्त किया। गंगशील बाल्यावस्था से ही बड़ा चतुर, बड़ा तेजस्वी था।

राजा शान्तनु के कुल पुरोहित एवं राष्ट्र पुरोहित महर्षि पारामुनि के गृह पर बालक मुनि से शिक्षा पाने लगा। बालक की तीव्र बुद्धि और उसके शील से पारामुनि बहुत प्रसन्न थे। पारा मुनि गंगशील को कौडली ब्रह्मचारी कहने लगें, यह नाम उन्होंने इसलिए रखा था, कि वे आत्मा के विषय में अत्यधिक परिश्रम किया करते थे। ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करते थे।

ब्रह्मचर्य का महत्व

कुछ समय पश्चात् माता गंगोत्री का स्वर्गवास होने लगा। मृत्यु के समय राजा शान्तनु और कौडली ब्रह्मचारी उपस्थित थे। माता ने पुत्र से कहा कि इस समय मेरे अन्तिम सांस चल रहे है। मेरा जीवन समाप्त होने वाला है। परलोक को जाने वाली हूँ, मेरा आदेश है कि जब तक तू जीवित रहे, तू अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना, जिससे कि तुझे मृत्यु छू भी न सके। अपनी इच्छानुसार शरीर को त्यागने वाला बनना। तूने मेरे गर्भ से जन्म धारण किया है। मेरा गर्भाशय तभी उज्ज्वल होगा, जब तू महान ब्रह्मचारी बन करके, अपने जीवन को हर प्रकार से उच्च बनाएंगा।

आज देखो, यदि हम अपने जीवन को, अपने समाज को, अपने राष्ट्र को उच्च बनाना चाहते है, तो हमारी माताओं को भी गंगोत्री माता के समान बनना होगा। आज की माताओं को भी गंगोत्री के समान गर्भ से ही अपने पुत्रों एवं पुत्रियों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा देने वाली होनी चाहिए।

अहा !ब्रह्मचर्य वह पदार्थ है, जिसको पा करके, जिसका पालन करके जीव ब्रह्म बन जाता है। इसी से परब्रह्म को पा लेता है। मुनिवरों !उस महाकल्प पर्यन्त मुक्तावस्था में उस परमपिता की गोद में पहुंचकर परमानन्द का लाभ करता है।

जो लोग ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते, उनकी दशा तो ऐसी होती है कि जैसी एक बार महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने महाराजा राम से एक कीड़े को दिखाते हुए कहा था, कि जो ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते वे इस प्रकार कीड़े की योनि में जन्म लेते है। यह तीन जन्मों से कीड़ा बनता आ रहा है, इत्यादि आज भी जो ब्रह्मचर्य से हीन मानव है, वे भी इसी प्रकार कीड़े की योनि में चक्कर काटते है, और चक्कर काटेंगे।

तो मुनिवरों !माता गंगोत्री ने अपने एकमात्र पुत्र भीष्म से कहा कि तू ब्रह्मचर्य से हीन होकर, संसार का कीड़ा न बनना। तू राष्ट्र का सूर्य के समान महा तेजस्वी मानव बन, जैसे सूर्य प्रातः काल उदय होकर तीन लोक में अपने प्रकाश से छा जाता है, तीनों लोकों को तपायमान करता है, महान रात्रि को अन्धकार को समाप्त करके अपने दिव्य प्रकाश से मानव के जीवन को उच्च बना देता है। इसी प्रकार पुत्र !तू भी महान् तेजस्वी बन।

यदि तूने मेरे गर्भ से जन्म धारण किया है, तो तू भी ऐसा महान बन, कि जिससे यह अपना सारा राष्ट्र उच्च बने, महान् बने। राष्ट्र तेरा नहीं है, यह परमात्मा का दिया हुआ है। हे पुत्र !यदि तूने इस शरीर को और इस राष्ट्र को दूषित कर दिया, तो तेरा जीवन न होने के तुल्य है। मुनिवरों !परमात्मा ने जो यह शरीर दिया है, यह ऐसा रोगी या दोषी बनाने के लिए नहीं दिया है। परमात्मा ने जैसा यह स्वच्छ शरीर दिया है, वैसा ही स्वच्छ और स्वस्थ परमात्मा को प्रदान कर दो, नहीं, तो मानव जीवन का कोई महत्व नहीं है इस संसार में।

आज हमको माता गंगोत्री के ये वाक्य कण्ठ आ गए, जिसको हमने उच्चारण कर दिया। आज का हमारा यह

मुख्य आदेश है। यदि हमको अपने जीवन को उच्च बनाना है, तो ब्रह्मचर्य की पूर्ण रक्षा करनी चाहिए। परमात्मा ने ब्रह्मचर्य के रूपी में ऐसा महान पदार्थ दिया है, कि इसको पा करके मानव सब कुछ पा लेता है। मुनिवरों !देखो, ब्रह्मचर्य को पा करके सारे विज्ञान को पा लेता है, प्रभु को पा लेता है। प्रकृति के कण कण को जानने वाला, यह जीव बन जाता है। मुनिवरों !देखो, जब तक हम इस महान ब्रह्मचर्य को नही जानेंगे, तब तक इस महान प्रभु को, आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों को ही न जान सकेंगे। दोनों में किसी भी प्रकार से गति नही कर सकेंगे।

मुनिवरों !आज का हमारा यह आदेश है, अर्थात् माता गंगोत्री ने मृत्युकाल में ऐसा कहा है कि हे पुत्र !तू हर प्रकार से ब्रह्मचारी बन। अपने जीवन को सूर्य के तेज के तुल्य बना।

मुनिवरों !उसने अपने पतिदेव से कहा कि हे पतिदेव !मेरा मृत्युकाल आ रहा, मेरे कुछ ही सांस रह रहे हैं मै इस समय परलोक में जा रही हूँ, हे भगवन !आप मेरे स्वामी है। यह मेरा एक बालक है। परमात्मा की दया से न जाने कहाँ, कहाँ से और कैसे हम तीनों का सम्बन्ध बन गया है, और यह मिलाप हो गया है। आप राजा बन गए, मैं आपकी धर्मदेवी बन गई। हम तीनों के मेल का, सम्बन्ध होने का इतना ही काल परमात्मा ने दिया था। अब मुझे आज्ञा दीजिए मैं परलोक को जा रही हूँ।

राजा और राज्य के लिए ब्रह्मचर्य का महत्व

अच्छा भगवन् !मेरा एक आदेश है। वास्तव में तो पत्नी अपने पति को क्या आदेश दे, पर शुभ आदेश देने में कोई किसी प्रकार की हानि नहीं है। उस समय मुनिवरों !देखो, उसने मृत्यु काल में यह कहा था कि हे पतिदेव !यदि आपको संसार की इच्छा जागृत हो जाएं, तो आप द्वितीय संस्कार करा लेना। परन्तु यदि आपने संस्कार न कराया और कुविचार आपके बन गए और आपने राष्ट्र के किसी व्यक्ति को, किसी भी देव कन्या को, किसी भी मधुमती को, किसी भी प्रकार से भ्रष्ट कर दिया, तो भगवन् !यह राज आज नहीं, तो कल अवश्य नष्ट हो जाएगा।

पूर्व संस्कारों के कारण राजा पद

तो मुनिवरों !उस महान माता गंगोत्री ने अपने पतिदेव से कहा कि आप भ्रष्ट न हो जाना। भगवन !यदि आप अपने मार्ग से भ्रष्ट हुए, तो इस राष्ट की मृत्यु हो जाएगी, राष्ट्र समाप्त हो जाएगा। हे विधाता !आपको परमात्मा ने पूर्व जन्म के उच्च कर्मों के आधार पर इतने बड़े समाज का, आज राजा बनाया हुआ है। प्रजा ने। आपको राजा के पद पर चुना है, तो आप भी प्रजा को भ्रष्ट न करना। भगवन् !यदि आपके भ्रष्टाचार के कारण प्रजा में भ्रष्टाचार फैल गया, तो आपका यह राज पद नहीं रहेगा, आपका राज पद दूषित हो जाएगा।

भगवन् !मृत्यु समय मेरा केवल यही आदेश है। आपके समक्ष यही अनुरोध है। आप मेरे इस अनुरोध को अवश्य स्वीकार करें।

भगवन् !परमात्मा की कृपा से जनता ने आपके चरित्र को स्वच्छ निर्मल समझकर, आपको राजा के पद के लिए चुना है, आपको राजाधिराज बनाया है। यदि आप अन्तिम काल में राज्य को त्यागना चाहें, तो जैसा परमात्मा ने स्वच्छ और निर्मल राज्य दिया है, वैसा ही परमात्मा के समक्ष अर्पण कर देना है।

हे भगवन् !यदि आपने अपने रहते रहते अपने राष्ट्र को अपनी चरित्र दोष से दूषित कर दिया, परमात्मा को दूषित राज्य अर्पण किया, स्वयं चरित्र से दूषित हो गए, तो आप राजा नहीं रहेंगे, आप कीड़े के तुल्य बन जाएंगे।

तो मुनिवरों !देखो, यह उन महान् देवियों का आदेश है। पर आज उन माताओं को कहाँ से लाएं? इस काल में उन्हें कहाँ से खोजें जो अपने पतियों को इतना सुन्दर आदेश देने वाली हों।

मुनिवरों !आज हमारा यह आदेश चल रहा है कि मानव को परमात्मा ने जो स्वच्छ पदार्थ, कर्म करने के लिए दिए हैं, परमात्मा ने जैसा स्वच्छ, निर्मल जीवन दिया है, हमारा परम धर्म है कि परमात्मा को वैसा ही स्वच्छ एव निर्मल जीवन और पदार्थ अर्पण कर दें। तभी हमारी मानवता है, मानवता की सफलता है। अन्यथा इस मानवता की कोई विशेषता नहीं है, कोई महत्व नहीं है।

मुनिवरों !माता गंगोत्री ने ऐसा आदेश देकर, नमस्कार करके अपने प्राणों को त्याग दिया। मुनिवरों !राजा शान्तनु ने बड़े आनन्द पूर्वक नाना उत्तम सामग्री संचित्त करके, नाना ब्राह्मणों के द्वारा विधिपूर्वक यज्ञ कुण्ड में अपनी धर्म पत्नी का अन्त्येष्टि संस्कार, वेद मन्त्रों के पाठ करके किया। उस विद्वान ब्रह्मचारी ने भी अपनी माता के अन्त्येष्टि संस्कार में वेद मन्त्रों का पाठ किया।

राजा शान्तनु

राजा शान्तनु बड़े आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे। राजा शान्तनु के जीवन की शेष विशेषताएं कल उच्चारण करेंगे। कल महानन्द जी के शेष प्रश्नों का समाधान भी करेंगे। क्योंकि आज समय नहीं रहा है।

मुनिवरों !हम अपने व्याख्यान में द्वापर युग का प्रमाण देकर आदेश दे रहे थे। परमात्मा की कृपा से उन महान ब्रह्मचारियों ने, उन महान आचार्यों ने और उन महान देवियों ने ऐसी उच्च शिक्षा देकर राज्य को उच्च बनाया था।

मुनिवरों !यदि राज्य को उच्च बनाना है, और संसार को उच्च बनाना है, संस्कृति का प्रचार करना है, तो शिष्टाचार को उच्च बनाना होगा। विद्या का प्रचार और प्रसार करना है तो शिष्टाचार को उच्च बनाना होगा। जिस काल में ब्रह्मचारी होते है, वही काल सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

अखंड ब्रह्मचर्य का शरीर पर अलौकिक प्रभाव

देखो, उस महान ब्रह्मचारी ने कैसा सुन्दर आदेश माता से पाया। बेटा !वही कौडली ब्रह्मचारी आगे चलकर के भीष्म नाम से पुकारे गए, आगे वे ही पितामह भीष्म बन गए। बेटा !कैसा सुन्दर यह ब्रह्मचारी था। अरे, जिस समय महाभारत संग्राम में अर्जुन शस्त्रों का प्रहार उनके शरीर पर करते थे तो बेटा !भीष्म के शरीर से शस्त्र उछल जाते थे, शस्त्र भी दूर भागते थे, उनकी त्वचा में प्रवेश नहीं कर पाते थे। कैसा था वह ब्रह्मचारी?

मुनिवरों !देखो, उस समय अर्जुन ने एक वाक्य कहा भी कि हे भगवन् !हे पितामह !आपने कौन सा पदार्थ पाया, कि जिससे मेरे अस्त्र शस्त्र भी आप पर आघात क्यों नही कर पाते?

ब्रह्मचर्य से मृत्युञ्जय बनना

उस समय भीष्म पितामह ने कहा था कि हे पुत्र !हे बालक !मैंने माता के आदेश द्वारा उस अवस्था को पाया है, जिससे मैं मृत्यु विजयी बन गया हूँ। मैं चाहूँगा तो मेरी मृत्यु होगी, अन्यथा मेरी मृत्यु कदापि नहीं होगी।

तो मुनिवरों !ब्रह्मचर्य को पाने में इतना महत्व हैं, जो ब्रह्मचर्य को पाता है, वह परमात्मा को पा लेता है और परमात्मा को पा करके बेटा !सृष्टि के कण कण को जानने वाला मानव बन जाता है। वह मानव भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों को पाने वाला बन जाता है।

यह है आज का हमारा आदेश। बेटा !अब हमारा व्याख्यान समाप्त हो गया। कल समय मिलेगा तो और व्याख्यान देंगे। अब हमारा वेदों का पाठ होगा। इसके पश्चात् वार्ता समाप्त हो जाएगी।

पूज्य महानन्द जीः धन्यवाद भगवन् !गुरु जी !आपने हमारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया।

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा !कल दे देंगे।

पूज्य महानन्द जीः हाँ वह कल तो आपका आता ही रहता है, और आता रहेगा। क्योंकि आपने एक काल में ऐसा कहा था कि रावण जब मृत्यु शैय्या पर आ गया भगवन् !तो तब राम ने उससे राजनीतिक वार्त्ताओं को

पाया था।

रावण ने राम से कहा कि भाई !मैंने कल ही कल में कुछ कार्य करने थे, वे कल ही में समाप्त हो गए। ऐसा ही हमें प्रतीत होता है, भगवन् !आप भी कल ही कल में समाप्त हो जाएंगे। हास्य.....

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा, हास्य.....। अच्छा महानन्द जी !धन्यवाद। कोई बात नहीं हैं, अच्छा बेटा !चलो, कल हो जाएगा।

पूज्य महानन्द जीः हाँ, कोई बात नहीं भगवन् !

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों !अभी अभी महानन्द जी कैसा सुन्दर आदेश वर्णन कर रहे थे, कि जिसमें कितनी मनमन्ता आ रही थी। हृदय भी मनमन्ता मना रहा था। महानन्द जी के कैसे सुंदर आदेश हैं, चलो, कल महानन्द जी के प्रश्नों का विधिपूर्वक उत्तर दिया जाएगा। अब हमारा आदेश समाप्त हो गया कल हमारा आदेश वर्णन किया जाएगा ।

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी !कल हमारी एक इच्छा ओर है, कि कल आप मधु शान्ति पाठ करें।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा बेटा !तो कल का कल देखा जाएगा। तो भाई !कल आएगा, तो उच्चारण कर देना । अच्छा देखा जाएगा

तो मुनिवरों !महानन्द जी अब उच्चारण कर रहे हैं, कि मधु शान्तिपाठ कल होना चाहिए। परन्तु यदि समय मिला तो मधु शान्ति पाठ करेंगे और नहीं मिला, तो नहीं करेंगे। अच्छा !अब वेदों का पाठ होगा, इसके पश्चात् हमारा व्यख्यान समाप्त हो जाएगा। वेद पाठ लोदी कालोनी, नई दिल्ली

02 04 1962 ब्राह्मण कौन है यह प्रवचन 04 04 1962 के नाम से भी है।

जीते रहो, देखो मुनिवरोअभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ है। हम तुम्हारे समक्ष वेदों का मनोहर पाठ ! कर रहे थे। आज के वेद पाठ में कई प्रकार का विवरण आया। आज हम पूर्व मन्त्रों में उस विधाता का गान गा रहे थे जिस विधाता ने हमारे जीवन के लिए, हमें ऊँचे कर्म करने के लिये इस संसार रूपी क्षेत्र को उत्पन्न किया। आज हम उस विधाता के गुणगान कहाँ तक गाएँ। वह विधाता मनोहर और अलौकिक है। बड़े बड़े महान् आचार्य योगीजन उस विधाता के गुणगान करते करते समाप्त हो गये। कैसा अद्भुत संसार है यह, किसने रचा है इसको, किसने उस विधाता से याचना की कि आप इस संसार को उत्पन्न करो?

आज हमें वेद मन्त्रों से प्रतीत होता है कि यह आत्मा ही उस प्रभु से याचना करने गया था। उस प्रभु ने अपने बालक की याचना को पाकर इस संसार रूपी क्षेत्र को उत्पन्न किया। फिर उसने एक एक तत्त्व में ऐसे ऐसे गुण उत्पन्न किये कि जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। बेटापृथ्वी को ही देखो इसमें नाना गुण हैं। इसमें नित्य ! प्रति कहाँ से इतने तत्त्व आ पहुँचे

अपने अपने गण इस पथ्वी से ही ले रहा है। यह कैसा अलौकिक तत्त्व है? इस पथ्वी में ऐसे गुण कहाँ से आ गए हैं जिन गुणों की मानव को आवश्यकता है, उन गुणों को प्रेरित करने की शक्ति तथा सत्ता किसने प्रदान की है? बेटाइससे बड़ा आश्चर्य होता है कि उस विधाता ने अपनी रचना से इस महान् प्रकृति को प्राण रूपी सत्ता दी। ! इसी को सामान्य प्राण कहते हैं। मानव के कल्याणार्थ शून्य प्रकृति को प्राण सत्‌ता देकर, इसको गतिशील बना कर आत्मा को कर्म करने का अवसर दिया। बेटायहाँ महर्षि !हमने उस काल को देखा है जिस काल में मुनिवरो ! पापड़ी मुनि महाराज, अंगिरा मुनि, महर्षि करुण मुनि, कपिल मुनि आचार्य और वशिष्ठ मुनि जैसे आचार्य थे। जिस काल में सब माताएँ तथा देवकन्याएँ अपने एकान्त स्थलों में विराजमान होकर यही सोचा करती थीं कि यह संसार क्षेत्र क्या है? किसने हमें इतना उच्च कर्म करने का अवसर प्रदान किया?

आज हमें भी तो यही विचारना है कि हम ज्ञानी विज्ञानी कैसे बने? परमात्मा के ज्ञान विज्ञान को कैसे जानें? बेटा ! हमारे आदि आचार्यों ने तथा अन्य माता अरुणा जैसी धर्म लक्ष्मियों ने इस संसार के तत्त्वों को, परमात्मा के महत्त्वों को प्रकृति के तत्त्वों एवम् गुणों के द्वारा जाना। बेटाहमें प्रतीत होता है कि आज इस सृष्टि में उस ! परमात्मा की ज्योति ही व्यापक है, उसी की ज्योति से यह संसार प्रकाशित हो रहा है। वेद ज्ञान और उसका महत्त्व अहाकैसा महान् संसार है !? कैसा आश्चर्यजनक है? बेटाउस परमात्मा की विद्या को पाकर हम सुशील ! बन जाते हैं। वह विद्या कहाँ से आई? किसने वह विद्या प्रदान की? जिससे मानव का उत्थान हो जाता है। यदि आज हम यह मान लें कि यह विद्या प्रकृति से आई, तो बेटाप्रकृति तो जड़ है !, ज्ञान शून्य है। यह तो मानव को शून्यता तक पहुँचाने वाली है। तो विद्या कहाँ से आई जो मानव का विकास कर देती है। प्रलय काल में यह विद्या किस स्थान पर थी? जिस काल में यह संसार समाप्त हुआ उस समय यह वेद विद्या कहाँ थी? आज मानव इसके विश्लेषण पर विचार लगाता है और कई प्रकार से सोचता है। वेदानुयायी महान् आचार्यों की सम्मति पर दृष्टि डालते हैं तो प्रतीत होता है कि परमात्मा इतना पूर्ण ज्ञानी है कि वही जीवात्मा को ज्ञान प्रेरित कर देता है। जीवात्मा उस प्रभु के ज्ञान को पाकर, उसकी वेद वाणी को पाकर अनेक प्रकार से ज्ञानी और विज्ञानी बन जाता है। उस ज्ञान विज्ञान की सहायता से ही आज भी हम अपने जीवन को बहुत उच्च और सफल बनाया करते हैं। प्रश्न होता है कि यह अद्भुत ज्ञान प्रलय काल में कहाँ रहता है? प्रलय काल में यह आत्मा परमात्मा के गर्भ में रहता है। यह वेदज्ञान परमात्मा के स्थानों में रहता हैबालक का स्थूल शरीर माता के गर्भ में रहते हुए मानव को दृष्टिगोचर !जैसे बेटा ! नहीं होता। परन्तु जब गर्भ से पृथक हो जाता है तब उसके चक्षु भी हैं, भुजाएँ भी हैं, पद भी हैं, त्वचा भी है, सब इन्द्रियाँ भी हैं। ये सब उत्पन्न होने पर प्रत्यक्ष होते हैं। इसी प्रकार बेटाये सब विद्याएँ प्रलय काल में परमात्मा के ! गर्भ में चली जाती हैं। परमात्मा के पूर्व नियम के अनुकूल परमात्मा में ही निवास करती हैं। एक समय हमारे आदि आचार्यों ने दार्शनिक समाज में कहा था कि आत्मा का ज्ञान तो प्रा तिक है। आत्मा का ज्ञान तो स्वाभाविक है। मुनिवरोयह वाक्य यथार्थ है। आत्मा की दो महान् सत्ताएँ स्वाभाविक हैं। वे हैं एक ज्ञान और दूसरा प्रयत्न । ! आज हम आत्मा की सत्ता को इस प्रकार मान लें कि वह कहीं से आती है तो बे !मुनिवरोटाहमें उस सत्ता के ! जगाने के लिए इस महान् स्थूल प्रकृति में आ करके किसी से वह ज्ञान लेना पड़ता है। किसी से उसके लिए प्रार्थना करनी पड़ती है। जिससे इस आत्मा को ज्ञान होता है, वह अज्ञानान्धकार से पृथक होता है। मुनिवरोदेखो ! जैसे भौतिक विज्ञान के खोजने के लिए हमें प्रकृति के नाना तत्त्वों की आवश्यकता पड़ती है। तब हम उस ज्ञान विज्ञान को खोज पाते हैं। इसी प्रकार आत्मा का जो ज्ञान स्वाभाविक है उसको जगाने के लिए वेद विद्या का प्रसार करना, वेद विद्या को ग्रहण करना पड़ेगा। जब वेद विद्या की सन्धि आत्मा में पहुँच जाती है, उस समय उस परमात्मा के दिये हुए वैदिक ज्ञान से एक एक सम्बन्ध हो जाने पर मानव जीवन पूर्ण विकास को प्राप्त हो जाता है। मुनिवरोपरमात्मा ने हमें वह ज्ञान दिया !आज के हमारे वेद पाठ में परमात्मा के दिए इसी उपदेश का वर्णन था ! है जिसे पाकर हम उसके उपासक बन ज ाते हैं, पवित्र बन जाते हैं। उस अमृत को पाकर हम भी वास्तव में अमृत ही बन जाते हैं। तब वहाँ अमृत आत्मा आनन्द ही आनन्द भोगता रहता है। बेटावेद की विद्या पाकर हम ! सुशील बन जाते हैं। सुशील बन कर ही हम दार्शनिक समाजों में जाकर वहाँ नाना प्रकार के प्रश्न कर सकते हैं और हम उन प्रश्नों के उत्तर भी उन ऋषियों और दार्शनिकों से पाने वाले बन जाते हैं। संसार कर्म क्षेत्र है मुनिवरो ! हमारे कर्म करने के लिए संसार रूपी क्षेत्र को उत्पन्न करने वाले विधाता से याचना करते हुए हम कर्म करने के लिए उद्यत हो रहे हैं। हमारे आदि आचार्‌्यों ने मानव जीवन की विकासशीलता का अनेक स्थानों पर वर्णन किया। इसी को हम अपने व्याख्यान में कह चुके हैं। महामुनि नारद ने अपने जीवन का पूर्ण विकास किया था।

नारद मुनि की विशेषता थी कि वह अपनी तपस्या एवम् पुरुषार्थ के बल से सूर्य मण्डल में पहुँचे तथा वहाँ के राजा विष्णु को इस पृथ्वी पर खींच लिया। नारद मुनि ने अपनी तपस्या एवम् पुरुषार्थ के प्रभाव से महाराजा विष्णु का अभिमान नष्ट कर दिया। बेटाजो भी मानव अभिमान से कार्य करता है !, उसका एक न एक दिन पतन अवश्य होता है। वह पार्थिव रूप जड़ता को प्राप्त हो जाता है। आज हमें इसका ध्यान रखना चाहिये। हमें अपनी तपस्या और पुरुषार्थ के द्वारा सफलता मिलने पर भी थोड़ा सा भी अभिमान नहीं करना चाहिये । हमारे वेद मन्त्रों में अनेक स्थानों पर वर्णन आ रहा है कि यह महान् संसार उस परमात्मा को पाने के लिये बनाया है। इसलिये हमको बहुत अधिक महत्ता की आवश्यकता है। ब्राह्मण किसे कहते हैं?

मुनिवरोदेखो !, "ब्राह्मण वर्चति' इत्यादि आज के वेद पाठ में नाना प्रकार से ब्राह्मणों का वर्णन आ रहा था। ब्राह्मण किसको कहते हैं? संसार में ब्राह्मण की क्या विशेषता है? बेटाब्राह्मण कहते हैं ज्ञानी को। प्रत !्येक जीवन यात्री को, प्रत्येक देवकन्या को ज्ञान देकर अमृत तुल्य बना देने में सहायता करने वाले को ब्राह्मण कहते हैं। उसी को ब्राह्मण उपाधि दी जाती है। बेटा देखोब्राह्मण तो सूर्य को भी कहते हैं। ब्राह्मण नाम परमात्मा का भी है। सूर्य को ! ब्राह्मण क्यों कहतेहैं? सूर्य प्रातःकाल आते हैं, तीनों लोकों को तपायमान कर देते हैं। ये तीनों लोक उसके महान् प्रताप से, तेज से प्रकाशमान हो उठते हैं। इसी प्रकार ब्राह्मण उसी को कहते हैं जो प्रकाश देने वाला हो। प्रकाश भी कई प्रकार के होते हैं। एक अनुमन्तृ' प्रकाश होता है। जो परमात्मा की महामाया से पृथक होता है। प्रा तिक ज्ञान मधुमान होता है, बेटायह ज्ञान वेदों के व्याख्यानों से प्राप्त होता है। आत्मा का प्रकाश भी परमात्मा का दिया ! ब्राह्मणों का ब्राह् !हुआ है। परमात्मा हमारी आत्मा में बैठा हमें प्रकाशित कर रहा है। उसी को बेटामण कहा जाता है। ब्राह्मण उसी को कहते हैं जो प्रकाशमान होता है।

बेटाजैसे हमारे शरीरों में मल !, विक्षेप तथा आवरण हैं। इन तीनों को अपनी विद्या से समाप्त करने वाले को ही हमारे आचार्यों ने ब्राह्मण माना है। जो राष्ट्र को ऊँचा बनाने वाला हो, एक साधारण व्यक्ति का भी उत्थान करने वाला हो और जो वेदों के ज्ञान का भण्डार हो, उसी को ब्राह्मण रूप से पुकारा जाता है। मुनिवरोइसका वर्णन ! अभी अभी हम उच्चारण कर रहे थे कि !तो हम अपने पूर्व के व्याख्यानों में कर चुके हैं। बेटा "ब्राह्मण वर्चति' इत्यादि। देखो, जो ब्राह्मण सब गुणों वाला बन जाता है उसी को तेजस्वी ब्राह्मण कहा जाता है।

एक समय नारद मुनि ने दार्शनिक समाज में कहा था कि यदि ब्राह्मण को 'परायश' मान लिया जाये तो क्या हानि है। तब आदि ऋषियों में से अंगिरा ऋषि ने कहा था कि अरेदेवऋषि नारद हम यह नहीं मान सकते। यदि हम ! ब्राह्मण को 'परायश' मान लेवें तो उसमें नाना प्रकार की हानि हो जायेगी। राष्ट्र अन्धकार में चला जायेगा। ऐसा मानने से हम परमात्मा के बनाये हुए नियमों को व्यर्थ करने का दुस्साहस और पाप करेंगे, समाज तुच्छ बन जायेगा। राष्ट्र की समस्त प्रजा और यह संसार तुच्छता को प्राप्त कर अधोगति को पहुँच जायेगा। हे नारदहमें तो ! उस व्यवस्था को पाना है कि जिससे हम हर प्रकार से योगी बन कर, महान् बन कर अपने ब्राह्मणों को महान् ज्ञान देते चलें जिससे तुच्छता का प्रसार न हो सके। तुच्छता के प्रसार से तो यह संसार अधोगति को प्राप्त हो जायेगा। पूज्य महानन्द जीः गुरुजीआज आपका कुछ ! "विश्वाय परमन्तु रूपायनम् अस्तु' हास्यहो जाता !। बेटा... है, कोई ऐसी बात नहीं। क्योंकि "नित्य भूमि अमृति विषयम्।" और आपत्ति काल में शब्द विभु बन जाता है। पूज्य महानन्द जीः गुरुजीआप ऐसा न कीजिये !, इससे महत्त्व समाप्त हो जायेगा। चलो बेटाकोई बात नहीं। पूज्य ! अभी अभी महानन्द जी अपने प्रश्न के !पा कीजिये। व्याख्यान में पुनरुक्ति का कारण मुनिवरो !अच्छा :महानन्द जी समय में कह रहे थे कि हम किसी किसी वार्ता को द्वितीय बार उच्चारण कर देते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हम आपत्ति काल में हैं। इसलिये बिना इच्छा के भी यह हो ही जाता है। आपत्ति काल वश इस पर नियन्त्रण

नहीं हो पाता अन्यथा हमारे द्वारा किसी वार्ता के बार बार प्रकाश होने का कोई कारण नहीं। देखो हमने पूर्व काल में बहुत सी निधियों को पाया। वे आज सूक्ष्म होती जा रही हैं। उन निधियों से अब हमारा कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो पा रहा है। अब तो केवल वह महान् शब्द रूप में अन्तरिक्ष में विराजमान है। अन्तरिक्ष को वह शब्द शुद्ध बना रहा है। देखोआज हमारे वेदपाठ में कई स्थानों पर तेजस्वी ब्राह्मण का वर्णन आ रहा था। वह तेजस्वी ब्राह् !मण सबका कल्याण करने वाला होता है। प्रजा को उच्च बनाने वाला होता है। प्रजा में किसी प्रकार के अज्ञान को छाने नहीं देता। जिस काल में ऐसे ब्राह्मणों की संख्या अधिक होती है, उस काल में अज्ञान आता ही नहीं है।

मुनिवरो देखोऐसे महान् ब्राह्मण राजाओं को समय पर च !ेतावनी देने वाले हों। अजय मेघ यज्ञ को कराने वाले हों।

'अजय मेघ यज्ञ' अथवा 'अजा मेघ यज्ञ'

बेटा !'अजय मेघ यज्ञ' किसको कहते हैं? अजय शब्द के माता, पृथ्वी, यज्ञ, राष्ट्र और प्रजा अर्थ होते हैं। 'मेघ' शब्द के यज्ञ और राजा अर्थ होते हैं। 'अजा' शब्द के बकरी तथा वेदी अर्थ होते हैं। ब्राह्मणजन वेदी को सजाया करते हैं। यज्ञ को पूर्ण समारोह के साथ करते हैं। राजा अपनी धर्मपत्नी के साथ राष्ट्र के उत्थान करने में सदा लगा रहे । राष्ट्र के उत्थान के लिए राजा अपनी धर्म पत्नी के साथ 'अजय मेघ' करता रहे। यह उसका परम कर्त्तव्य है। अजा नाम पृथ्वी का है। जिस काल में वैज्ञानिकजन एकान्त स्थान में विराजमान होकर पृथ्वी के तत्त्वों को विचारते हैं, नाना प्रकार के अनुसन्धान करके उस भौतिक विज्ञान को पाते हैं तब उसको 'अजा मेघ यज्ञ' कहते हैं। मुनिवरो! 'गो मेघ यज्ञ' भी होता है। 'गो' नाम से पृथ्वी और इन्द्रियाँ दोनों को लिया जाता है। इन्द्रियों के द्वारा विषयों का तथा पदार्थों के गुणों का ज्ञान होता है। पृथ्वी का मुख्य गुण गन्ध हैं। आज गन्ध को जानना है। गन्ध कहाँ से आती है? किस स्थान से प्रकट होती है? कौन कौन से तत्त्वों से मिलकर बनती है? इसका जानना ही 'गो मेघ यज्ञ' कहलाता है। आज हमारे वेदपाठ में 'अजय मेघ यज्ञ' का वर्णन आ रहा था। आज हमें अजय मेघ यज्ञ करने का संकेत मिला। 'अजय' के नाना अर्थ हैं। इसलिये आज हमें विचार कर निश्चय करना चाहिए कि प्रसंग के अनुसार जिस शब्द के जिस अर्थ की आवश्यकता हो, उसी का ग्रहण आवश्यक है। उसी का प्रयोग अनिवार्य है? अन्य अर्थ का नहीं। उसी से मानव का विकास होगा, उसी से मानव का आत्मा उच्च बनेगा। अन्यथा नहीं। बेटा ! अभी अभी प्रसंग चल रहा था कि राजाओं का क्या उद्देश्य है? राजाओं को कैसा यज्ञ करना चाहिए? अर्थात उनको 'अजय मेघ यज्ञ' अथवा 'अजा मेघ यज्ञ' करना चाहिए। देखो, बेटाअजा नाम प्रजा का है। मेघ नाम राजा का है। ! दोनों का सम्बन्ध करके यज्ञ किया जाय, उसी यज्ञ को यहाँ 'अजय मेघ यज्ञ' कहा जाता है। बेटाजैसे महाराजा ! राम ने त्रेता काल में किया था। राजा रावण ने उस यज्ञ का ब्रह्मा बन करके य बेटामेघ नाम आत्मा का भी है। ! अजा नाम इसकी प्रजा का है। आत्मा का सम्बन्धी आत्मा का परिवार है। अन्तःकरण चित्त, बुद्धि और अहंकार यह सब आत्मा का परिवार है। ये ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ भी आत्मा के ही परिवार हैं। इस महान् परिवार को कौन चलाने वाला है? जब हम आत्मा को और उसके परिवार को भली प्रकार से जान जाते हैं तब हम स्वतः ही उस महान राजा को जान लेते हैं, उस मेघ को जान लेते हैं। तब हम आत्म तत्त्व के जानकार बन जाते हैं। इसी प्रकार जो राजा अजय मेघ यज्ञ करने वाले होते हैं ये प्रजा के भावों को जान लेते हैं। साथ में राष्ट्र के ब्राह्मणों की परीक्षा हो जाती है कि मेरे राष्ट्र में कैसे कैसे बुद्धिमान ब्राह्मण हैं? मुनिवरोइस समय सतयुग के काल की एक वार्ता ! आ गई है। हम उसका उच्चारण करेंगे। उसके पश्चात् हमारी वार्ता समाप्त हो जायेगी। (स्मरण) हमारे कण्ठमुनिवरो ! सतयुग में अटुल मुनि महाराज महीयस राजा के पुरोहित थे। एक समय राजा अपने राज स्थान में विराजमान थे, न्यायालय में प्रजा का न्याय कर रहे थे। उस समय उनके हृदय में विचार आया कि हमें "अजय मेघ यज्ञ" करना

चाहिये। अजय मेघ यज्ञ किसके लिए करना चाहिए? प्रजा के लिए करना चाहिए जिससे
हमारी प्रजा महान् बने। जिससे हमारी प्रजा में सदाचार हो। प्रजा के ज्ञान विज्ञान की वृद्धि हो, हमारे राष्ट्र में वेदों का प्रसार हो। प्रत्येक गृह में यज्ञ हों, यजन से हमारे राष्ट्र का वातावरण सुगन्धिदायक हो, यजन से राष्ट्र सुगन्धिदायक बनेगा। बेटाराजा के मन में इस विचार के आने के पश्चात राजा ने अपने मन में संकल्प विकल्पों ! द्वारा बड़ा अनुसन्धान किया। इस विचार को लेकर राजा अपने गुरु पुरोहित के समक्ष आ पहुँचे। अटुल मुनि महाराज ने राजा का बड़ा स्वागत करके कहा "प्रियआनन्द में हो !? राजा ने उत्तर में कहा "विशेष आनन्द है।" अच्छा, धन्यवाद । कैसे आगमन हुआ? उन्होंने कहा भगवन्हम इसलिए आए हैं कि इस काल में हमारी एक ! 'अजय मेघ यज्ञ करने की इच्छा है। जिससे हमारी प्रजा श्रेष्ठ बने, हमारी प्रजा में महत्ता आये। 'अजय मेघ यज्ञ' का अधिकारी मुनिवरो राजा की !इन वार्ताओं को सुनकर अटुल मुनि महाराज ने बहुत प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारी इस वार्ता को सुनकर तथा निष्ठा एवम् योग्यता को देख कर हमें निश्चय हो गया कि तुम 'अजा मेघ यज्ञ' करने में अवश्य सफल हो जाओगे। परन्तु वेद विद्या कहती है और परम्परा भी यही बतलाती है कि अजय मेघ यज्ञ करने का उसी राजा को अधिकार है कि जिसकी प्रजा में एक दूसरे का कोई भी ऋणी न हो। हमको पता नहीं है कि तुम्हारी प्रजा में क्या सभी ऋण मुक्त हैं? पहले आप इसका अनुसन्धान कीजिये। राजा ने गुरुदेव की आज्ञा पा करके कहा कि मैं राज्य में भ्रमण करके देलूँगा कि मेरी प्रजा में कोई एक दूसरे का ऋणी तो नहीं है। बेटाराजा वहाँ से चलकर विचार करते अपने राष्ट्र में पहुँचे। प्रजा में भ्रमण करके देखा कि प्रत्येक गृह में नित्य ! प्रातःकाल यज्ञ हो रहे हैं। राष्ट्र में एक दूसरे का कोई ऋणी नहीं था। प्रजा सब प्रकार कुशल से ह ै। प्रजा में बड़ा आनन्द छा रहा है। पिता की सेवा करने वाले पुत्र हैं। उनको योग्य बनाने के लिए माता पिता भी कुशल हैं। राजा ने देखा कि उसके द्वारा बनाए गये नियम राष्ट्र में बड़े आनन्द से चल रहे हैं। क्षत्रिय राष्ट्र की रक्षा कर रहे हैं। राजा अपने राष्ट्र की ऐसी स्थिति और कुशलता को देख कर बड़ी प्रसन्नता के साथ चलकर राजपुरोहित गुरु के समक्ष जा पहुँचे। गुरु से कहा कि भगवन्मेरे राज्य में तो बहुत कुशल है। मेरे राष्ट्र में कोई किसी का ऋणी नहीं है। ! मेरा राष्ट्र सब प्रकार से महान् है। उस समय राजा की इन वार्ताओं को प ाकर ऋषिवर बड़े प्रसन्न होकर बोले कि भाईअजय मेघ यज्ञ करो। परन्तु यज्ञ करने से पूर्व तुम अपनी धर्मपत्नी से अनुमति ! लेकर आओ। वह तुम्हें अनुमति दे तो अवश्य यज्ञ करो अन्यथा तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। उस समय बेटाराजा वहाँ से चलकर ! राजगृह में जा पहुँचे। राजाके पहुँचते ही पत्नी ने चरणों को स्पर्श किया। नमस्कार करके राजा का बड़ा स्वागत किया। आसन पर विराजमान होकर धर्मपत्नी ने कहा कहिये भगवन्आपका मन कैसे भ्रमित हो रहा है !, इसका क्या कारण है? आज हमको प्रतीत हो रहा है कि आपको किसी प्रकार का शोक है या किसी प्रकार की विशेष अशान्ति है। उस समय राजा ने कहा कि हे धर्मपत्नीमेरे मन में कोई शोक नहीं है। मेरा मन इसलिए भ्रमित ! है कि मैं अजय मेघ यज्ञ करने जा रहा है। राजगर परोहित ने कहा है कि तम अपनी धर्मपत्नी की अनुमति लेकर यज्ञ करो, तो तम्हारी क्या इच्छा है? उस समय धर्मपत्नी बड़ी मग्न हो गई। उसके हृदय के कपाट खुल गए, हृदय ज्योति जागने लगी। धर्मपत्नी ने कहा कि भगवन्मेरे अहो भाग्य आप यजमान बनकर अजय मेघ यज्ञ रचावें !, देवताओं को हम कुछ देवें, जिससे हमारे राष्ट्र का उत्थान होवे। यह तो भगवन् !बहुत सुन्दर विचार है। मुनिवरो ! देखो, धर्मपत्नी से अनुमति लेकर राजा ने वहाँ से चलकर, ऋषिवर के समक्ष जाकर कहा कि भगवन्मेरी धर्मपत्नी ! बड़ी ही प्रसन्न है। उसका वाक्य है कि हमारे ऐसे सौभाग्य कहाँ? उसका हृदय मुग्ध होने लगा। ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसके हृदय में धर्म की अग्नि प्रज्वलित हो रही हो। यज्ञशाला क्यों रचाई जाती है? बेटाउस समय ! ऋषिवर ने इन वाक्यों को पाकर के नाना ब्राह्मणों को निमन्त्रण देकर वहाँ एक विशाल यज्ञ रचाया, वहाँ बड़ी सुन्दर

यज्ञशाला रचाई गई। यज्ञशाला के रचने से वहाँ अक्षय आनन्द छा गया। नाना प्रकार की चित्रकारियों से वह यज्ञशाला रचाई गई। सब देवताओं के स्थान बनाए गए। वेदी वही होती है जिसे बेटाब्राह्मण बुद्धिमत्ता के साथ ! यह यज्ञशाला क्यों रचाई जाती !वेद के अनुकूल रचाता है। उस समय महर्षि जी से राजा ने प्रश्न किया कि भगवन् है? इसका क्या कारण है कि इतनी चित्रकारी की जाती है? बेटा तब !ऋषि ने उत्तर दिया कि देखो, जैसे परमात्मा ने इस संसार रूपी यज्ञ को उत्पन्न किया है, उसको इतनी चित्रकारियों से सजाया है ऐसे ही हम छोटे से वैज्ञानिक हैंपरमात्मा के बालक हैं। परमात्मा जैसे यज्ञ तो नहीं रचा सकते पर उसके उनका सूक्ष्म सा रूप ले रहे हैं कि . जो चित्रकारियों से इस यज्ञशाला को रचाया है। मुनिवरोदेखो !, ऋषिवर ने जब यह उत्तर दिया तो राजा बड़े मग्न हो गए। मग्न होकर कहा धन्यवाद । उसके बाद वहाँ नाना प्रकार की सामग्री एकत्रित हो गई। सब साकल्य एकत्रित हो गया। प्रजा को निमंत्रण दिया गया। यजमान, यजमान की धर्म पत्नी यज्ञशाला में विराजमान हो गए। वहाँ शुनि मुनि महाराज, पापड़ी मुनि महाराज, दोनों उस यज्ञ के उद्गाता बने। अटुल मुनि महाराज, उस यज्ञ के अध्वर्यु बने। तत्त्व मुनि महाराज उस यज्ञ के ब्रह्मा बने। इसके अनन्तर यज्ञ आरम्भ हो गया। बेटाब्रह्मा के ऊपर ! यज्ञ का भार होता है। ब्रह्मा ने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण करा कर समुद्र की क्रिया आरम्भ की। जब वहाँ समुद्र की क्रिया हो रही थी उस समय समय पापड़ी ऋषि महाराज आ पहुँचे। दार्शनिक समाज बेटाउस काल में वहाँ ! शोलक ऋषि आदि ऋषियों का एक दार्शनिक समाज विराजमान था। दार्शनिक समाज में पापड़ी ऋषि को नियुक्त किया गया कि जाओ परीक्षा करो कि वे कैसे बुद्धिमान हैं? राजा अजय मेघ यज्ञ के अधिकारी हैं या नहीं? यदि नहीं हैं तो यज्ञ में कहना चाहिए कि तुम अजय मेघ यज्ञ के अधिकारी नहीं हो। तो उस समय महर्षि पापड़ी मुनि जी उस दार्शनिक समाज से यहाँ जा पहुँचे। यज्ञ में जल सिंचन क्यों? जिस समय तत्त्व मुनि जी उस यज्ञ के ब्रह्मा जल सिंचन करा रहे थे कि उस समय पापड़ी ऋषि ने प्रश्न किया कि महाराजयह जल सिंचन क्यों हो रहा है !? यह क्या क्रिया है? और क्या पदार्थ है? उस समय ऋषिवर ने उत्तर देते हुए कहा कि यह महान् समुद्र है जैसे परमात्मा ने इस महान् संसार को उत्पन्न किया। उसके मध्य में पृथ्वी बनी हुई है। ऐसे ही यह वेदी नाम की पृथ्वी है। इसके आस पास ही यह समुद्र बना हुआ है। उस परमात्मा द्वारा उत्पन्न आकर्षण शक्ति, उसकी महान् विद्युत के आधार पर यह पृथ्वी स्थित है।

आज हम यजमान देवताओं का शाकल्य बनाने के लिए उन समद्रों के विश्लेषणात्मक दृष्टि से उनके स्वरूप को समझ कर, उसके गणों से लाभ उठाते हुए वेद के अनुकूल इस वेदी का कर्मकाण्ड कर रहे हैं। मुनिवरोतब ऋषि ! जी बड़े आनन्द के साथ विराजमान हो गए। यज्ञ आरम्भ होने लगा।महर्षि पापड़ी ने सोचा कि ब्रह्मा तो वास्तव में योग्य है । तब उन्होंने ब्रह्मा से प्रश्न किया कि भगवन्यज्ञ क्यों रचाया गया है !? आपका क्या कर्त्तव्य है? यज्ञ में ब्रह्मा का कर्तव्य उस समय ब्रह्मा ने कहा कि मेरा कर्त्तव्य है कि मैं यह देखू कि यज्ञ का कोई उद्गाता वेदमन्त्र तो अशुद्ध उच्चारण नहीं कर रहा। यदि यज्ञशाला में वेद मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण हो गया तो बड़ा पाप होगा। वह पाप क्या हो जाएगा? क्योंकि जिस वेद वाणी के द्वारा हम जिन देवताओं का आह्वान करके उनका स्वागत कर रहे हैं, यदि वही वेदवाणी अशुद्ध होगी तो देवता हमारे समक्ष क्यों आयेंगे? जैसे लोक में जब बुद्धिमान व्यक्ति हमारे समक्ष आते हैं और हम बुद्धिपूर्वक उनका स्वागत नहीं करते हैं, हम मूढ़ बुद्धि से स्वागत करते हैं तो वे बुद्धिमान हमारे समक्ष आना त्याग देते हैं। ऐसे ही वेद मन्त्रों के यज्ञवेदी पर अशुद्ध उच्चारण से देवता हमारी उपेक्षा कर देंगे। तब यह सब कर्मकाण्ड निष्फल हो जाएगा। इसी प्रकार मुनिवरो वेद मन्त्रों के यज्ञ में यज्ञ वेदी !पर शुद्ध उच्चारण का अभिप्राय है। जिन देवताओं को साकल्य देना है हम उन्हीं देवताओं का शुद्ध मन्त्रपाठ के द्वारा आह्वान कर रहे हैं, उन्हीं से याचना कर रहे हैं। यदि मन्त्रोच्चारण अशुद्ध हुआ तो देवता हव्य पदार्थों को कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे।

परिणाम यह होगा कि वे हमारे संसार का कदापि कल्याण नहीं करेंगे। मुनिवरोमहर्षि पापड़ी जी इन वार्ताओं को ! पाकर बड़े मग्न हो गए। उन्होंने आनन्द में मग्न होकर कहा कि अहोभाग्य है कि जहाँ ऐसे ब्रह्मा हों तथा जहाँ इतनी विद्वता के साथ वेदों के मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध होता है। उद्‌गाताओं का कर्तव्य मुनिवरोइसके पश्चात् पापड़ी ऋषि ! तुम जो वेदों का पाठ कर रहे हो इसका क्या अभिप्राय है !उद्गाताओं के समीप पहुँच कर बोले हे उद्गाताओं? यह क्यों कर रहे उद्गाताओं ने उत्तर दिया कि भगवन्यह हमारा कर्त्तव्य है कि वेदों के मन्त्रों का शुद्ध उच !्चारण पूर्वक पाठ करके वेदों की विद्याओं का प्रसार करें। हमारी आत्मा का उत्थान हो और हम देवताओं में रमण करें। वेद मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण के साथ यजन करते हुए साकल्य तथा हव्य पदार्थों को देवताओं के समक्ष प्रस्तुत करके देवताओं से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे देवताओंआइये !, हमारे साकल्यों को, इन हव्य पदार्थों को ग्रहण करो। भगवन्देखो !हमारे लिये प्रत्येक प्रकार से कल्याणकारी बनो। मुनिवरो !, तब ऋषिवर ने सोचा कि भाईयह ! महर) उद्गाता भी बड़े बुद्धिमान हैं। अध्वर्यु का कर्तव्य इसके पश्चात् पापड़ी ऋषि महाराज अध्वर्यु्षि अटुल मुनि महाराजआप नाना प्रकार की सामग्री एकत्रित करके यजन करते हुए !के समक्ष पहुँचकर बोले कि हे भगवन् (देवताओं को साकल्य दे रहे हैं, वह क्यों दे रहे हैं? इसका क्या अभिप्राय है? उन्होंने उत्तर दिया कि यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं शुद्ध रूप से देवताओं को शुद्ध सामग्री दूँ। जिससे कि देवताओं का आहार शुद्ध हो। यदि देवताओं का आहार शुद्ध होगा तो हमें देवताओं से श्रेष्ठ प्राण सत्ता मिलेगी। __ आज हमें वह महत्ता प्राप्त करनी चाहिए कि जिससे हमारा जीवन, राष्ट्र का जीवन, संसार के मानव का जीवन उच्च बने और विद्या का प्रसार हो। वेदों के अनुकूल बनी सामग्री की आहुतियाँ देने से देवता उसको स्वीकार करते हैं। यजमान की आहुतियों का महत्त्व तथा भावनाओं का स्वरूप मुनिवरोइन वार्ताओं को पाकर ऋषिवर यजमान के समक्ष जा पहुँचे और बोले कि हे ! तुम जो ये आहुतियाँ दे रहे हो इनका क !यजमान्या अभिप्राय है? राजा ने कहा हे ऋषिवरहम आहुति देने के ! आपने हमारे राष्ट्र को तथा इस सारे संसार को उत्पन्न किया है। हे !साथ साथ प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु हमारे राष्ट्र में शुद्ध ज्ञान प्रकाश हो !हे देवताओं !विधाता, सद्भावनाओं वाले व्यक्ति हों, जिससे हमारे राष्ट्र में घृत दाता पशुओं की हानि न हो। हे भगवन्यदि हमारे राष्ट्र में गौओं की हानि हो जाएगी तो मेरा राष्ट्र आज नहीं तो ! मैं यह सद्भावना पूर्वक आहुति दे रहा हूँ कि हमारे राष्ट्र में !हे देवताओ !कल नष्ट हो जाएगा। हे विधाता पशुओं की वृद्धि हो तथा मेरा राष्ट्र प्रत्येक प्रकार से विशाल हो। यजमान की धर्मपत्नी की भावनायें मुनिवरोयजमान से ! तुम्हारी आहुति !इस प्रकार वार्ता सुनकर ऋषिवर ने यजमान की धर्मपत्नी के समक्ष पहुँचकर कहा कि हे धर्म देवी देने का क्या मन्तव्य है? उस समय धर्म देवी ने कहा कि ऋषिवरआप त !ो बड़े बुद्धिमान हैं, आप ऐसे वाक्य क्यों उच्चारण कर रहे हैं जो कि आपके योग्य नहीं हैं। तब ऋषिवर ने कहा कि आप भी अपना कुछ विचार तो उच्चारण कीजिये। उस समय धर्म देवी ने कहा कि हे विधातामैं मन के इस संकल्प के साथ आहुति देती हुई याचना कर ! हे !रही हूँ कि हे देव परमात्मन्हम शुभ कार्य करते रहें। मेरे स्वामी के राष्ट्र में शुभ कार्य होते रहें !, अशुभ कार्य न हों। मेरे स्वामी के राष्ट्र में कोई भी मानव, कोई भी देव कन्या दुराचारी न हो। हे भगवन्जिस राष्ट्र में !हे ऋषिवर ! देव कन्याएँ व पुरुष दुराचारी हो जाते हैं उस राजा का राज्य आज नहीं तो कल अवश्य समाप्त हो जायेगा। हे भगवन्मेरी यह प्रार्थना है कि प्रत्येक देव कन्या !, प्रत्येक मानव उच्च विचार वाला महान् सदाचारी हो जिससे मेरे स्वामी का राष्ट्र एक विशाल राष्ट्र बने और ऐसे धर्म के कार्य प्रत्येक स्थानों में होते रहें जिससे राष्ट्र में बुद्धिमानों का प्रसार हो। बिना वेद के प्रचार के राष्ट्र के मानवों में कभी सात्विक बुद्धि नहीं आती है। मुनिवरोजब ऋषिवर ने ! यह तो वास्तव में !इन वाक्यों को पाया तो ऋषि चकित हो गए। ऋषि जी ने कहा कि भगवन् 'अजय मेघ यज्ञ' करने के अधिकारी हैं। यज्ञ में ऋत्विजों का कर्तव्य इसके पश्चात् ऋषि आहुतियाँ देते हुए ऋत्विजों के समक्ष पहुँचे।

ऋषि ने ऋत्विजों से प्रार्थना की कि भगवन्आप लोग जो ये आहुतियाँ दे रहे हैं !, इसका क्या अभिप्राय है? उस समय ऋषिवर के वाक्यों को पा करके ऋत्विजों ने कहा कि भगवन्हम याचन !ा कर रहे हैं कि हे विधाता ! हमारे में जो दुर्गुण एवम् दुर्गन्धियाँ हैं उनको समाप्त करके हमारे में सुगन्धि प्रविष्ट करें। जब हमारा जीवन सुगन्धिदायक बनेगा, तब हमारा जीवन महान् बनेगा। हम राष्ट्र के तथा संसार के हितैषी बनेंगे। हे विधाताहम हर ! प्रकार से हितैषीबनकर, संसार को सुख पहुँचा कर देवताओं के समक्ष पहुँचे। मुनिवरोऋषिवर इन वाक्यों को ! यह तो यथार्थ में यज्ञ का वर्णन था। आगे आलंकारिक वर्णन आता है। समिधाओं !पाकर शान्त हो गए। मुनिवरो ऋषि जी महती समिधाओं के समक्ष !एवम् सामग्री का अलंकारिक रूप में वर्णन मुनिवरो पहुँचे और समिधाओं से कहा कि हे समिधाओंयह क्या हो रहा है !? तुम अग्नि में प्रविष्ट हो रही हो और अग्नि तुम्हें नष्ट कर रही है। तुम अग्नि का आहार बन रही हो इससे तुम्हारा क्या मन्तव्य है?

बेटादेखो !, उस समय समिधाओं ने कहा कि हे विधातासंसार में वही मानव सुख ! पाता है जो किसी का बन जाता है। देखो, ऋषि जब ही बनता है जब गुरु की शरण में चला जाता है। गुरु उसके दुर्गुणों को नष्ट कर देते हैं, अग्नि विद्या को धारण करा देते हैं तभी वह ऋषि बनता है। इसी प्रकार विधाताहम अग्नि रूप गुरु के समक्ष ! जाकर अपने पार्थिव परमाणुओंको समाप्त करके अपने सूक्ष्म रूप को धारण करके सूर्य मण्डल तक पहुँच कर देवताओं की शरण में चली जाती हैं। महान् आदित्य हमको धारण करके, आहार करके, धीमी धीमी किरणों के द्वारा समुद्रों में पहुँचा देते हैं। समुद्रों से मेघ के रूप को धारण करके वृष्टि द्वारा पृथ्वी पर आ जाती हैं। पृथ्वी पर स्थावर सृष्टि के रूप में उत्पन्न होकर हम संसार का कल्याण करती हैं। मुनिवरोऋषि जी उनके युक्ति युक्त उत्तर ! से सन्तुष्ट होकर सामग्री के समक्ष पहुँचे। उन्होंने सामग्री से प्रश्न किया कि तुम यह क्या कर रही हो? तुम अग्नि के समक्ष जाकर उसमें क्यों भस्म हो रही हो? इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है, तुम्हें इसमें क्या लाभ प्रतीत होता है? उस समय उस महती सामग्री ने कहा था कि हे विधातानाना प्रकार की वस्तुओं को एकत्रित करके हमको बनाया ! गया है। इसके अनन्तर हमको अग्नि के अर्पण कर दिया जाता है।अग्नि हमको भस्म कर देती है। हमारा सूक्ष्म रूप बनकर अन्तरिक्ष में, आदित्य में पहुँच जाता है। जब हम आदित्य में रमण करती हैं, तब आदित्य हमें बल देता है। उस बल से किरणें उत्पन्न होती हैं जो समुद्रों में जाती हैं। समुद्रों से जल का उत्थान होता है, जल से मेघ बन जाते हैं। मेघों से वृष्टि होती है। वृष्टि से पृथ्वी पर नाना प्रकार की समिधाएँ तथा नाना प्रकार की सामग्रियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। ज्ञानाग्नि में स्नान ही जीवन की सफलता है संसार में उसी का जीवन उच्च है कि जो किसी का हो जाता है। जो किसी का नहीं होता वह संसार में अधूरा बना बैठा रहता है। देखो, जब तक ज्ञान रूपी अग्नि में आत्मा ने स्नान नहीं किया, अपने दोषों को भस्म नहीं किया, तब तक आत्मा परमात्मा से विमुख ही रहता है। भगवन्इसी प्रकार जब तक हम अपने रूप को अग्नि में भस्म न कर देंगे !, तब तक हमारा यथार्थ रूप देवताओं के समक्ष नहीं आयेगा तथा तब तक हम संसार का कोई उपकार न कर सकेंगे। यदि हम उपकार न कर सकें तो हमारा जीवन निष्फल है। मुनिवरो यह है हमारा आज का आदेश जो हो रहा था। यह कैसा सुन्दर वाक्य आज हमारे वेदपाठ में आया। इस पर सतयुग की कैसी सुन्दर वार्ता हमारे कण्ठ में आ गई। आज के हमारे आदेशों का अभिप्राय क्या है अच्छे, ब्राह्मण कैसे हों? यथार्थ विद्या के खोजी हों, सबकी परीक्षा करने वाले हों। राजाओं को उपयुक्त प्रकार की कल्याणमयी शिक्षा देने वाले हों। बेटायह है आज का हमारा आदेश। अब हमारा आदेश समाप्त ! हो गया। पूज्य महानन्द जीगुरुजी आपने जैसा रूप ब्राह्मणों का वर्णन किया :, वैसा आधुनिक समय में नहीं रहा है। जब हम अपने सूक्ष्म शरीर के द्वारा लाक्षागृह पर विचरण कर रहे थे तब हमने सुना कि आधुनिक समय में तो ब्राह्मण जातिवाद बन गया है। गुण, कर्मों के अनुकूल ब्राह्मणादि नहीं रहा है। बेटासमय मिलेगा तो कल तुम्हें !

उच्चारण कर देंगे। वास्तव में तो इस विषय का व्याख्यान तो हमने पूर्व समय में उच्चारण कर दिया था। पूज्य जो आपने इसे पूर्व उच्चारण कर दिया तो क्या द्वितीय बार उच्चारण नहीं कर सकते :महानन्द जी? “नहीं बेटा ! इसमें हमारी कुछ हानि नहीं है।' पूज्य महानन्द जी: “तो पा कीजिए।" “अच्छा बेटाकल देखा जाएगा। !" पूज्य महानन्द जी: “कल तो भगवन्क्योंकि कल जो आपने अपने आपत्ति काल को कहा था !आपका होता ही नहीं ! वह भी नहीं हुआ। जैसे रावण कल ही कल में मृत्यु को प्राप्त हो गया वैसे ही हमें प्रतीत होता है कि कल ही कल में आप भी मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे। हास्य...“अच्छा महानन्द जीयह तो तुम आनन्द की वार्ता उच्चारण कर ! रहे हो।' पूज्य महानन्द जीः हास्य...“गुरुजीप्रतीत ही ऐसा हो रहा है क्योंकि रावण भी कल ही कल में समाप्त हो ! जैसा क !तो बेटा...गया था। हास्यल समय आएगा, वैसा उच्चारण करेंगे। तुम तो आनन्द की वार्ता उच्चारण कर रहे हो। पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्तो कल आएगा तो आप उच्चारण कर ही देंगे। क्योंकि कल की वार्ता तो ! कल आएगा तभी तो। पूज्य महा !अरे तो भाई...आपने पूर्ण कर ही दी। आज की कल और कर देंगे। हास्यनन्द जीअभी अभी महानन्द जी कुछ आनन्दित वार्ता उच्चारण कर रहे थे। किसी किसी स्थान !मुनिवरो !अच्छा भगवन् : कल तुम्हें वर्ण व्यवस्था पर उच्चारण कर देंगे। पूज्य !में हम उनकी वार्ताओं से बड़े प्रसन्न हो जाते हैं। अच्छा बेटा महानन्द जीः यह तो भगवन् आप की इच्छा है। हाँ बेटाकल समय मिलेगा तो अवश्य उच्चारण कर देंगे। पूज्य ! अवश्य निर्णय करेंगे कल। !इसमें हमारा कोई विरोध नहीं है। अच्छा तो बेटा !अच्छा भगवन :महानन्द जी .

पूज्य महानन्द जीक्योंकि हम आधुनिक काल में भी पाते रहते हैं कि वर्ण व्यवस्था जातिवाद से मान !भगवन् :ी गई है। आपका जो वह पूर्व काल था, उसमें कैसी वर्ण व्यवस्था थी? आधुनिक काल की वार्ता तो हमने उच्चारण कर दी कि अब कैसे ब्राह्मण माने गए हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव अच्छा, कल का कल देखा जाएगा, कल ही उच्चारण कर देंगे। अब तो समय समाप्त हो गया है। तो मुनिवरोकल महान !न्द जी के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न करेंगे। अब हमारा वेद पाठ होगा, इसके पश्चात् हमारी वार्ता समाप्त होगी। वेद पाठ। ...., धन्यवाद!, दिनाँक 2 अप्रैल, 1962, स्थान लाजपत नगर, नई दिल्ली।